मुर्ग़ाबी

मुर्ग़ाबी

नार्वेजियाई नाटक

लेखक
इबसन

अनुवादक
यशपाल

साहित्य अकादेमी

Murghabi : Hindi translation by **Yashpal** of Norwegian dramatist Henrik Ibsen's play *The Wild Duck*. **Sahitya Akademi**, New Delhi, Second Printing (1983)
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15·00

प्रथम संस्करण : १९७०
द्वितीय आवृत्ति : १९८३

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय :

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली ११०००१

क्षेत्रीय कार्यालय :

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता ७०००२९

२९, एलडाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास ६०००१८

१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०००१४

मूल्य :
SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15·00

मुद्रक :
भारती प्रिण्टर्स
दिल्ली ११००३२

पात्र-परिचय

वर्ले	:	एक व्यापारी उद्योगपति
ग्रेगर्स	:	व्यापारी का पुत्र
एकदाल	:	एक वृद्ध
हृजलमार	:	एकदाल का पुत्र फोटोग्राफ़र
गीना	:	हृजलमार की पत्नी
हेदविग	:	गीना की १४ वर्षीया पुत्री
श्रीमती सूरबी बाई	:	वर्ले की नौकरानी
रैंलिंग	:	एक डॉक्टर
मौलविक	:	एक पादरी
ग्राबर्ग	:	वर्ले का मुनीम
पैटर्सन	:	वर्ले का नौकर
जैन्सन	:	किराये पर रखा हुआ वेटर

एक स्थूल-काय अतिथि, एक खल्वाट अतिथि, एक कमज़ोर नज़र वाला अतिथि और वर्ले के यहाँ भोज में आमन्त्रित ६ अन्य व्यक्ति; कुछ किराये पर लगाए गए वेटर।

पहला अंक वर्ले का घर; शेष अंक हृजलमार के घर

प्रथम अंक

[दृश्य : मिस्टर वर्ल के मकान में अध्ययन-कक्ष। अध्ययन-कक्ष (स्टडी) की सजावट सुरुचि और सुविधापूर्ण है, पुस्तकों की सुन्दर अलमारियाँ हैं, मढ़ी हुई सुन्दर कुर्सियाँ और सोफ़ा है। कमरे के बीचों-बीच मेज है। मेज पर कागज और दस्तावेज फैले हुए हैं। रोशन लैम्पों पर हरे रंग के शेड हैं। कमरे में सुहावना मद्धिम प्रकाश फैला हुआ है। कुर्सी के पीछे दीवार में कब्जेदार किवाड़ हैं। किवाड़ खुले हुए हैं और दरवाजे के पर्दे हटे हुए हैं। दरवाजे के भीतर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाई दे रहा है। कमरे में तेज प्रकाश है, कई लैम्प और दीवारों पर कई-कई बत्तियों के शमादान दिखाई दे रहे हैं। अध्ययन-कक्ष के दाहिनी ओर की दीवार में भी एक छोटा दरवाजा है। यह दरवाजा दफ़्तर का है। बाईं ओर की दीवार में बनी अँगीठी में सुहावनी आग खिली हुई है। अँगीठी की बगल में भी कब्जेदार किवाड़ों का दरवाजा है। इस दरवाजे के भीतर भोजनालय है।

मि० वर्ल का नौकर पैटर्सन वर्दी पहने हुए है। होटल से बुलाया हुआ वेटर जैन्सन काला सूट पहने है। दोनों अध्ययन-कक्ष की वस्तुओं को करीने से लगा रहे हैं। बड़े कमरे के दरवाजे से भी होटल के दो-तीन वेटर इधर-उधर चलते-फिरते, कमरे को सजाने में और मोमबत्तियाँ जलाने में व्यस्त दिखाई देते हैं। भोजनालय से आमन्त्रितों की बातचीत और हास-परिहास की गूंज सुनाई दे रही है। काँच के गिलास पर चम्मच की टंकार सुनाई देती है। इस संकेत से स्तब्धता छा जाती है। जान पड़ा, शुभकामना में जाम (रोस्ट) का प्रस्ताव किया गया है। समर्थन का उल्लास सुनाई पड़ा और फिर बातचीत और हँसी की गूंज सुनाई देने लगी।]

पैटर्सन : (अँगीठी की कानिस पर रखे हुए लैम्प में रोशनी देकर, उस पर शेड रखते हुए) सुनते हो जैन्सन, बुढ़ऊ बोल रहे हैं, सूरबी बाई की सेहत के लिए जाम है। कैसा लैक्चर झाड़ रहे हैं।

जैन्सन : (एक कुर्सी आगे बढ़ाते हुए) क्या खयाल है भैया, इन लोगों के बारे में कैसी खबरें उड़ रही हैं; ठीक ही लगती हैं। दोनों में जरूर कुछ मामला होगा ?

पैटर्सन : भगवान् जाने।

जैन्सन : बुढ़ऊ अपनी जवानी में बड़े तेज रहे हैं, है न ?

पैटर्सन : होगा भैया !

जैन्सन : सुना है इनका लड़का आया है, उसी के आने की दावत है।

पैटर्सन : हाँ, कल आया है।

जैन्सन : हमने तो नहीं सुना था कि इनके कोई लड़का है।

पैटर्सन : वाह ! पूरा जवान लड़का है। लड़का वहाँ 'होयदाल' में, कारखाने में ही रहता है। मुझे यहाँ इतने बरस हो गए, यहाँ इसे कभी नहीं देखा।

दूसरा वेटर : (दूसरे कमरे के दरवाजे से झाँकते हुए) पैटर्सन, यहाँ एक बूढ़ा खड़ा है। कहता है—

पैटर्सन : (चिढ़कर मुनमुनाते हुए) भाड़ में जाय बूढ़ा, अब इस वक्त आने का क्या मतलब ?

[बूढ़ा 'एकदाल' भीतर के दरवाजे से अध्ययन-कक्ष में आ जाता है। उसका ओवरकोट बहुत पुराना है। कोट का कालर उठा हुआ है। बूढ़ा एक हाथ में छड़ी और रोयेंदार टोपी लिये है और बगल में कागज में लिपटा बण्डल दवाए है। उसका सिर पुराने मैले-से लाल 'विग' से ढका हुआ है। छोटी-छोटी सफेद मूँछें हैं।]

पैटर्सन : (एकदाल की ओर बढ़कर) हे भगवान् ! तुम, यहाँ कहाँ घुस आए ? क्या चाहिए ?

एकदाल : (दरवाजे में ठिठककर) भैया पैटर्सन, मुझे जरा उधर दफ़्तर में जाना है, जरूरी काम है—

पैटर्सन : दफ़्तर तो घण्टे-भर पहले बन्द हो चुका और…

एकदाल : हाँ, यह तो चौकीदार ने भी कहा, परन्तु ग्राबर्ग अभी दफ़्तर में है। तुम्हारा भला हो भैया पैटर्सन ! मैं इधर से चला जाऊँगा। (दफ़्तर के दरवाजे की ओर संकेत करता है।) मुझे दरवाजा मालूम है, पहले भी गया हूँ।

पैटर्सन : अच्छा भैया, चले जाओ ! (दरवाजा खोल देता है।) तुम्हें जो भी काम हो, ठीक रास्ते से ही बाहर निकलना ! घर में मेहमान आए हुए हैं।

एकदाल : हाँ, हाँ, सब मालूम है। भला हो तुम्हारा पैटर्सन भैया, तुम बहुत भले आदमी हो। (मुँह मोड़कर धीमे से) जलील कहीं का।

[एकदाल दफ़्तर में चला जाता है और पैटर्सन

किवाड़ बन्द कर लेता है।]

जैन्सन : बूढ़ा यहाँ मुन्शी है ?

पैटर्सन : नहीं, यहाँ नौकर नहीं है, ज्यादा काम हो जाय तो कागज अपने घर ले जाकर नकलें बना लाता है। अपने वक्त में यह भी बड़े रँगीले रहे हैं।

जैन्सन : हाँ, लगता तो है, अच्छे खाते-पीते घर का लगता है।

पैटर्सन : खाते-पीते घर का ? अरे क्या कहते हो—फौज में लफ़्टैन था।

जैन्सन : बाप रे, लफ़्टैन था ?

पैटर्सन : हाँ, मेरी कसम—पर बेचारा व्यापार में बिगड़ गया। यही चौब-औब के काम में। सुनते हैं वर्ल साहब को इसने बहुत चकमा दे दिया था। एक जमाने में होयदाल में दोनों साझीदार थे। इन बुढ़ऊ को हम कब से जानते हैं, अरे खूब जानते हैं। बुढ़िया एरिक्सन के यहाँ एक साथ बैठकर पिया करते थे।

जैन्सन : अच्छा, इतना दम था इनका ?

पैटर्सन : भगवान् भला करे जैन्सन भैया, हम ही पिलाते थे इन्हें। कहते हैं, भले आदमी के दिन फिर जायँ तो उससे आँखें फेर लेनी चाहिएँ।

जैन्सन : तो क्या इनका दिवाला निकल गया था ?

पैटर्सन : अरे नहीं, दिवाला क्या; जेल पहुँच गये थे !

जैन्सन : जेल ?

पैटर्सन : अरे जेल नहीं तो, हवालात तो पहुँचे ही…। (ध्यान से सुन कर) ओह, साहब लोग उठ रहे हैं।

[दो वेटर भोजनालय का दरवाजा खोल देते हैं। सूरबी बाई दो अतिथियों के साथ बात करती हुई आती हैं। उनके पीछे दूसरे लोगों के साथ मि० वर्ल आते हैं, अन्त में 'हजलमार एकदाल' और 'ग्रेगर्स वर्ल' साथ-साथ आते हैं।]

सूरबी बाई : (नौकर की ओर देखकर)—पैटर्सन, कॉफी वैठक में ले आओ ? वहाँ गाना होगा, वहीं कॉफी पी जाएगी।

पैटर्सन : जो हुकुम हुजूर।

[सूरबी बाई दो अतिथियों के साथ भीतर के बड़े कमरे में दाहिनी ओर चली जाती है। पैटर्सन और

जैन्सन उसके पीछे-पीछे जाते हैं।]

स्थूलकाल अतिथि : (खल्वाट अतिथि को संबोधित करके) ओफ़, क्या दावत है ! कोई कितना खाए ?

खल्वाट अतिथि : वाह, नीयत नेक हो, और आदमी हिम्मत करे तो तीन घण्टे में बहुत कुछ निबटाया जा सकता है।

स्थूलकाय अतिथि : (बोलता है) हाँ, भाई जान ! निबटा तो ले, पर बाद में…?

तीसरा अतिथि : मेरा अनुमान है, कॉफ़ी और शराब गाने के समय बैठक में ही आयगी।

स्थूलकाय अतिथि : बहुत खूब ! तो आज सूरबी बाई कोई बढ़िया चीज सुनाएगी।

खल्वाट अतिथि : (स्वर दबाकर) सुनाएगी तो, पर कोई ऐसी गत न बजा दे कि मुसीबत पड़ जाए।

स्थूल अतिथि : अमाँ, क्या कह रहे हो, सूरबी ऐसी नहीं है। अपने पुराने लोगों को परेशान नहीं करेगी। (तीनों हँसते हुए बड़े कमरे में चले जाते हैं।)

मि० वर्ले : (चिंता से दबे हुए स्वर में) ग्रेगर्स, किसी ने कुछ कहा तो नहीं।

ग्रेगर्स : (पिता की ओर देखकर)…क्यों, क्या हुआ ?

मि० वर्ले : क्या तुमने भी नहीं देखा ?

ग्रेगर्स : ऐसी क्या बात हुई ?

मि० वर्ले : किसी ने कुछ भी नहीं कहा ? मेज पर तेरह आदमी थे।

ग्रेगर्स : क्या सचमुच, तेरह थे ?

मि० वर्ले : (हजलमार एकदाल की ओर देखकर) हम तो सदा बारह को ही बुलाते थे, बारह ही आदमी होते थे। (दूसरे अतिथियों की ओर देखकर) आइए ! आइए ! आप लोग इधर आइए। (वर्ले साहब मार्ग दिखाते हुए भीतर के कमरे में चले जाते हैं। अतिथि उनके साथ चले जाते हैं। हजलमार और ग्रेगर्स रह जाते हैं।)

हजलमार : (उसने पिता-पुत्र की बात सुन ली थी) मुझे बुलाने की क्या जरूरत थी, ग्रेगर्स तुमने मुझे यों ही बुला लिया।

ग्रेगर्स : क्या कहते हो ? यह भोज मेरे कारण दिया गया है। मैं अपने एक-मात्र मित्र को ही न बुलाता ?

हजलमार : मेरा खयाल है, तुम्हारे पिताजी को मेरा आना अच्छा नहीं

लगा। पहले तो मैं यहाँ कभी नहीं आया।

ग्रेगर्स : होगा, परन्तु मैं तुमसे मिलना चाहता था, कुछ बात करना चाहता हूँ, मुझे तुरन्त ही लौट भी तो जाना है। खैर, हम पुराने सहपाठी कितनी दूर-दूर जा पड़े हैं, है न? सोलह-सत्रह साल बीत गए, कभी मुलाकात भी नहीं हुई।

हजलमार : हैं, इतने वर्ष बीत गए?

ग्रेगर्स : और नहीं तो क्या! अच्छा बताओ, क्या कर रहे हो, कैसी कट रही है? मजे में हो न? तुम तो मोटा गए हो।

हजलमार : हाँ, मोटा तो क्या, जरा शरीर भर गया है, तब लड़के थे।

ग्रेगर्स : हाँ, हाँ, क्यों नहीं, पर शरीर ही तो भर गया है न!

हजलमार : (उदासी से) शरीर ही भर गया है सच मानो ग्रेगर्स, मन की बात क्या कहूँ। मन की बात दूसरी है। सच मानो, तुम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। तुमसे तो मुलाकात नहीं हुई, तुम जानते हो, मुझ पर—हमारे परिवार पर कैसा संकट आ पड़ा था, बरबाद हो गए।

ग्रेगर्स : (स्वर दबाकर) तुम्हारे पिताजी का क्या हाल है?

हजलमार : मित्र, उन बातों को रहने ही दो। क्या हाल होगा! मेरे ही साथ रहते हैं। मेरे सिवा दुनिया में उनका कौन है? उन्हें और किसका सहारा है? उन बातों को रहने ही दो। याद आते ही मन डूबने लगता है। तुम अपना हाल-चाल बताओ। कारखाने में मन खूब लग रहा है?

ग्रेगर्स : हाँ, बहुत शानदार एकान्त है। सोचने-विचारने के लिए खूब समय मिला है और मैंने बहुत सोचा है, बहुत सोचा है, सब तरह की बातों को। आओ, यहाँ आराम से बैठो। (अँगीठी के सामने एक कुर्सी पर बैठकर हजलमार को साथ की कुर्सी पर खींच लेता है।)

हजलमार : (भावुकता से) खैर, ग्रेगर्स तुम्हारे प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। तुमने मुझे अपने यहाँ बुला लिया, इससे मुझे विश्वास हो गया कि तुम्हें मुझसे कोई नाराजगी नहीं है।

ग्रेगर्स : (विस्मय से) क्या कह रहे हो, मुझे तुमसे क्या नाराजगी हो सकती है?

हजलमार : आरम्भ में तो नाराजगी थी ही।

ग्रेगर्स : कब?

हजलमार : उस अभागी घटना के बाद तुम्हारा नाराज होना स्वाभा-

विक ही था। यदि तुम्हारे पिता भी उस मामले में फँस जाते। बाल-बाल बच गए। ओफ कैसा संकट था!

ग्रेगर्स : परन्तु तुमसे नाराजगी का क्या कारण हो सकता था? तुम्हें यह खयाल ही कैसे आया?

हजलमार : नहीं ग्रेगर्स, तब तुम जरूर नाराज थे। तुम्हारे पिता जी ने ही कहा था।

ग्रेगर्स : (चौंककर) पिताजी ने? उन्होंने कहा, सचमुच ओह!··· इसीलिए तुमने कभी मुझे पत्र भी नहीं लिखा, कभी एक शब्द भी नहीं।

हजलमार : हाँ, हाँ!

ग्रेगर्स : जब फोटोग्राफी का काम शुरू किया था तब तो खबर देते। तुमने वह समाचार भी नहीं दिया।

हजलमार : तुम्हारे पिताजी ने ही मना कर दिया था—बोले, कुछ लिखने की जरूरत है।

ग्रेगर्स : (सामने टकटकी बाँधे) हो सकता है, उनका विचार ठीक हो! खैर, तुम इस समय की बात कहो हजलमार! अब तो सब ठीक-ठाक है, अपनी स्थिति से सन्तुष्ट हो?

हजलमार : (जरा गहरी साँस लेकर) हाँ, हाँ ठीक है, सब ठीक है, सन्तुष्ट ही हूँ। आरम्भ में जरूर अटपटा लगा था। तुम स्वयं सोच सकते हो, जीवन का ढंग बिलकुल ही बदल गया था। परन्तु जीवन का पुराना ढंग तो चल नहीं सकता था। पिताजी का सब-कुछ स्वाहा हो गया था। कलंक और लज्जा के कारण मुँह दिखाने लायक नहीं रहे थे।

ग्रेगर्स : (भावुकता से) हाँ—वह तो था, ठीक कह रहे हो।

हजलमार : पढ़ाई जारी रखना मेरे लिए संभव ही नहीं था। कौड़ी-कौड़ी को मोहताज हो गए थे। तिस पर कर्जों का बोझ! सबसे बड़ा कर्ज तो तुम्हारे पिता जी का था, है न?

ग्रेगर्स : हुँ।

हजलमार : मेरे लिए एक ही रास्ता था—जीवन के पुराने ढंग को, पुराने संबंधों को बिलकुल और सदा के लिए भुला दूँ। तुम्हारे पिताजी ने भी यही सलाह दी थी। मैंने वही किया। उस समय मुझ पर दया करके उन्होंने मेरी सहायता की···

ग्रेगर्स : पिता जी ने?

हजलमार : हाँ-हाँ, बिलकुल। तुम जानते ही हो ! फोटोग्राफी सीखने का खर्च कैसे पूरा होता ? स्टूडियो कैसे बनता ? सोचो तो, बिना रुपए के तो कुछ नहीं होता ! तुम भी जानते हो।

ग्रेगर्स : यह सब खर्चा पिताजी ने दिया ?

हजलमार : हाँ भैया, तुम्हें नहीं मालूम था ? मेरा तो खयाल था कि उन्होंने तुम्हें सब-कुछ बता दिया होगा।

ग्रेगर्स : उन्होंने तो कभी नहीं लिखा कि वे तुम्हारे लिए कुछ कर रहे थे। उन्हें याद न रहा होगा। हम लोग पत्र संक्षिप्त ही लिखते हैं, केवल कारोबार की बातें। तो सचमुच पिताजी ने ही तुम्हें सहायता दी ?

हजलमार : हाँ, हाँ, कह तो रहा हूँ। उन्होंने यह कभी किसी को नहीं बताया, परन्तु सब-कुछ उन्हीं की सहायता से हुआ। उन्हीं की ही मेहरबानी से मेरा घर भी बच गया। तुम तो सुनकर हैरान होगे कि मैं बीवी-बच्चे वाला हूँ।

ग्रेगर्स : हैं, यह मुझे कैसे मालूम होता ? (हजलमार को बाँह से थाम लेता है) भाई हजलमार, सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई——और कुछ विचित्र भी लगा। पिता जी के बारे में मेरी तो कुछ और ही धारणा थी। परन्तु मानना पड़ेगा, उनमें दया और सहृदयता है। उन्हें नैतिकता का भी विचार है।

हजलमार : नैतिकता का विचार ?

ग्रेगर्स : हुँ, तुम उसे कुछ भी कह लो। तुम्हें बता नहीं सकता, पिता जी के बारे में यह सब सुनकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई है। हाँ, तो भैया हजलमार, तुम तो घर-बार वाले हो गए। मैं तो उस बारे में अभी कुछ सोच भी नहीं सकता। हाँ, तो यह बताओ, विवाह से संतुष्ट हो ?

हजलमार : बहुत, बहुत संतुष्ट हूँ। पत्नी देखने-सुनने में बुरी नहीं है, पढ़ी-लिखी और चतुर है।

ग्रेगर्स : (विस्मय से) पढ़ी-लिखी है ?

हजलमार : हाँ क्यों नहीं, तुम समझो सबसे बड़ी शिक्षा तो जीवन के अनुभव होते हैं। मेरे काम-काज में भी हाथ बँटाती है। हमारा धंधा ऐसा है कि पढ़े-लिखे लोगों से ही काम पड़ता है। सच मानो, देखोगे तो हैरान रह जाओगे, 'गीना' बहुत बदल गई है !

ग्रेगर्स : गीना ?

हजलमार : हाँ, हाँ, तुम्हें याद नहीं, यही तो उसका नाम था।

ग्रेगर्स : कौन गीना ? मुझे तो याद नहीं।

हजलमार : क्या भूल गए ? वह पहले इसी घर में तो काम करती थी।

ग्रेगर्स : (ध्यान से देखकर) क्या गीना हैन्सन ?

हजलमार : हाँ-हाँ, गीना हैन्सन ही।

ग्रेगर्स : कही न, जो यहाँ माता जी की बीमारी के समय काम करती थी ?

हजलमार : ठीक-ठीक, वही ! परन्तु मेरा अनुमान था कि मेरे विवाह की बाबत पिता जी ने तुम्हें जरूर लिखा होगा।

ग्रेगर्स : (कुर्सी से उठते हुए) हाँ याद आया कुछ लिखा तो था परन्तु यह तो नहीं—(चिन्ता में चहलकदमी करने लगता है) हाँ, सुनो ! मैं बताऊँ। हाँ, मुझे याद आता है, लिखा तो था। पिता जी पत्र सदा बहुत ही संक्षिप्त लिखते हैं। (हजलमार की कुर्सी की बाँह पर बैठते हुए) हजलमार, एक बात बताओ—यह नहीं समझ में आया—गीना से तुम्हारा परिचय कैसे हुआ ?

हजलमार : वह कौन बड़ी बात थी। गीना ने यहाँ का काम छोड़ दिया था। तुम्हारी माता जी की बीमारी के समय यहाँ बहुत गड़बड़ और अव्यवस्था हो गई थी। गीना से काम सँभालते नहीं बनता था, इसलिए यहाँ से नौकरी छोड़कर चली गई थी। तुम्हारी माता जी का स्वर्गवास हुए शायद एक वर्ष बीता होगा ! नहीं, ठीक उसी वर्ष की बात है।

ग्रेगर्स : हाँ, उसी वर्ष की बात है। मैं कारखाने में ही था। उस के बाद फिर क्या हुआ ?

हजलमार : हाँ, तो गीना अपनी माँ के यहाँ लौट गई थी। उसकी माँ बहुत परिश्रमी और समझदार थी। उसका अपना छोटा-सा होटल था। एक कमरा भी था, जिसे किराये पर दे देती थी। कमरा खूब सुथरा और आरामदेह था...

ग्रेगर्स : और कमरा सौभाग्य से तुम्हें मिल गया होगा ?

हजलमार : हाँ, ठीक है। वास्तव में तो तुम्हारे पिता जी ने ही सुझाया था। समझ गए, इस तरह गीना से परिचय हुआ।

ग्रेगर्स : परिचय से प्रणय हो गया ?

हजलमार : हाँ, सभी जानते हैं; जवानी में प्रणय हो जाते कितनी देर लगती है।

ग्रेगर्स : (कुर्सी की बाँह से उठकर फिर घूमने लगता है) अच्छा, एक बात बताओ। गीना से तुम्हारा विवाह या सगाई हो जाने के बाद तुम्हें पिता जी ने फोटोग्राफ़र—मेरा मतलब है, तुमने फोटोग्राफ़र बनने का विचार किया ?

हजलमार : हाँ-हाँ, ठीक कह रहे हो। मैं निर्वाह के लिए कोई धंधा जमा सकने की चिन्ता में था। तुम्हारे पिता जी ने और मैंने भी यही सोचा कि फोटोग्राफ़ी का धंधा सबसे अच्छा रहेगा। गीना की भी यही राय थी। एक कारण और भी था। बात यह है कि सौभाग्य से गीना एक फोटोग्राफ़र की दूकान पर काम कर चुकी थी, उसे ब्रुश के काम का कुछ अनुभव था।

ग्रेगर्स : यह तो सभी ओर से सौभाग्यों का बहुत बड़ा संयोग बन गया।

हजलमार : (कुर्सी से उठते हुए प्रसन्नता से) हाँ, निश्चय ही मेरे लिए तो सौभाग्य का बहुत बड़ा संयोग था।

ग्रेगर्स : ठीक है, मानता हूँ। जान पड़ता है, पिता जी तुम्हारे भाग्य-विधाता बन गए थे।

हजलमार : (उत्साह से) उन्होंने अपने पुराने मित्र के बेटे को उसके संकट में भुला नहीं दिया। सच कहता हूँ मैं—उनका दिल बहुत बड़ा है !

सूरबी बाई : (मि० वर्ल की बाँह पर हाथ रखे हुए आती है) वर्ल साहब, यह आप क्या कर रहे हैं ? देखते नहीं, यहाँ कितनी तेज रोशनी है। अपनी आँखों का खयाल कीजिये !

मि० वर्ल : (सूरबी बाई से बाँह छुड़ाकर हाथ आँखों पर रखते हुए) हाँ, यह रोशनी तो मेरी आँखों को बहुत तकलीफ़ दे रही है।

सूरबी बाई : (दूसरे कमरे में अतिथियों को सम्बोधित करते हुए) कोई साहब 'पंच' (शक्कर-नींबू मिली शराब) का शौक करना चाहें तो यहाँ तशरीफ़ ले आयें, हाजिर है !

स्थूलकाय अतिथि : (सूरबी बाई की ओर आते हुए) क्या सचमुच फैसला कर लिया गया है कि हम लोगों से सिगरेट पी सकने का मानवीय अधिकार छीन लिया जायगा ?

सूरबी बाई : जी हाँ, वर्ल साहब के 'दरबार' में सिगरेट का पीना निषिद्ध है।

खल्वाट अतिथि : सूरबी बाई, तम्बाकू-निषेध का निर्दय, दमनकारी कानून कब से बन गया है ?

सूरबी बाई : पिछली दावत के बाद से। उस दावत में अतिथि इतने लापरवाह हो गए थे कि उन्होंने कोई सीमा ही नहीं मानी।

खल्वाट अतिथि : यदि आपत्ति न हो तो हम भी इस नियम की सीमा की ओर से जरा आँख बन्द कर लें, बस जरा-सी।

सूरबी बाई : नहीं बाल साहब, हर्गिज नहीं, किसी भी सीमा का अतिक्रमण उचित नहीं। (अन्य अतिथि भी उसी कमरे में आ जाते हैं और नौकर अतिथियों के सामने पंच प्रस्तुत करते हैं।)

मि० वर्ल : (मेज़ से जरा हटकर खड़े हजलमार को सम्बोधित करके) कहो एकदाल, वहाँ क्या देख रहे हो ?

हजलमार : वर्ल साहब, मैं जरा इस अलबम को देख रहा था।

खल्वाट अतिथि : (कमरे में चहलकदमी करते हुए) इसमें फोटो हैं न ? उसमें तो तुम्हें निश्चय ही रुचि होगी।

स्थूलकाय अतिथि : (एक कुर्सी पर पसरकर) अपनी बनाई हुई कुछ तस्वीरें नहीं लाये ?

हजलमार : जी नहीं।

स्थूलकाय अतिथि : ले आते तो अच्छा रहता। खाने के बाद तस्वीरें देखने से हाजमे को फ़ायदा होता है।

खल्वाट अतिथि : क्यों नहीं, उससे पार्टी के दिल-बहलाव में सहयोग मिलता है, ठीक है न !

कमजोर नजर वाला अतिथि : और यहाँ सभी तरह का सहयोग सधन्यवाद स्वीकार किया जाना चाहिए।

सूरबी बाई : मि० एकदाल, इन लोगों का विचार है कि दावत में सम्मिलित होने वाले अतिथियों को दावत का आनन्द बढ़ाने में कुछ सहयोग देकर निमंत्रण पाने का हक़ अदा करना चाहिए।

स्थूलकाय अतिथि : भई ऐसी शानदार दावतें मिलें तो ऐसा हक़ सौ बार सहर्ष अदा किया जा सकता है।

खल्वाट अतिथि : तब तो भोजों के निमन्त्रण पाने के लिए, ऐसा सहयोग देने में, जीवन-मरण का संघर्ष आरम्भ हो जायगा।

सूरबी बाई : वाह-वाह, ठीक कहा आपने, खूब कहा आपने ! (अतिथियों में हँसी और बातचीत चलती रहती है)।

ग्रेगर्स : (धीमे स्वर में हजलमार से) हजलमार, तुम भी त ी बातचीत में रस लो।

हजलमार : (कनखी से देखकर) मैं क्या बातचीत करूँ?

स्थूलकाय अतिथि : वर्ले साहब, आपकी क्या राय है? मैं तो कहता हूँ, 'तोके' स्वास्थ्य के लिए दूसरी शराबों से कहीं अच्छी रहती है।

मि० वर्ले : (अँगीठी की ओर पीठ करके खड़े होकर) खैर, आज जो तोके आपने पी है उसके लिए तो जरूर विश्वास दिला सकता हूँ कि यह बहुत ही बढ़िया फसल की है। बताने की क्या जरूरत, आपने स्वयं चखी है।

स्थूलकाय अतिथि : अरे साहब, क्या कहना! क्या बढ़िया महक थी।

हजलमार : (संकोच में चुप रहता है।)

स्थूलकाय अतिथि : (हँस पड़ता है) क्या बात कही, यह भी अच्छी रही।

मि० वर्ले : (मुस्कराकर) देख लिया आपने? ऐसे अनाड़ी लोगों को वढ़िया शराब पिलाना पैसा बहाना ही है।

खल्वाट अतिथि : मि० एकदाल, 'तोके' के अंगूर और फोटोग्राफ़ी दोनों धूप से बनते हैं; ठीक है न?

हजलमार : जी हाँ, इसमें क्या संदेह है। धूप और रोशनी तो बहुत जरूरी चीज़ है।

सूरबी बाई : किसी-न-किसी तरह की धूप और रोशनी तो सभी को चाहिए। आप लोग भी सरकारी कृपा की धूप और रोशनी में पनप रहे हैं।

खल्वाट अतिथि : छोड़िये-छोड़िये, क्या पुराना मज़ाक कर रही हैं।

कमजोर नजर वाला अतिथि : सूरबी बाई रंग में हैं आज।

स्थूलकाय अतिथि : हमीं लोगों को बना रही है। (तर्जनी उठाकर) क्यों सूरबी बाई?

सूरबी बाई : हाँ-हाँ, एक और बात भी है। फसल-फसल के अंगूरों और शराब में फर्क रहता है। शराब जितनी पुरानी उतनी अच्छी।

कमजोर नजर वाला अतिथि : हमें तो आप पुरानों में ही गिनती हैं न?

सूरबी बाई : हर्गिज नहीं।

खल्वाट अतिथि : (विस्मय से) अरे सुना तुमने ! लेकिन सूरबी बाई, हम तो पुरानों में हैं न ?

स्थूलकाय अतिथि : अजी, हमारी गिनती किस फसल में है ?

सूरबी बाई : अजी आप दोनों ही बहुत रसीली फसल के हैं ।

[मुस्कराकर पंच का गिलास होठों से लगा लेती है । अतिथि उससे परिहास करके हँसते रहते हैं] ।

मि० वर्ले : भई, सूरबी बाई के पास तो हर सवाल का जवाब है । हाँ आप लोग अपने गिलास क्यों रखे दे रहे हैं ? पैटर्सन, इन गिलासों में और डालो ! ग्रेगर्स, यहाँ आओ ! एक गिलास हमारे साथ पियो ! (ग्रेगर्स निश्चल रहता है) एकदाल, इधर क्यों नहीं आ जाते ? मेज पर तुम्हारे साथ नहीं पी, अब तो आओ !

[मि० वर्ले का मुनीम ग्राबर्ग दूसरे कमरे के दरवाजे से झाँकता है ।]

ग्राबर्ग : हुजूर माफ़ी चाहता हूँ, उधर से रास्ता बन्द हो गया है ।

मि० वर्ले : क्यों, तुम फिर बन्द हो गए ?

ग्राबर्ग : जी हुजूर, चपरासी उधर ताला लगाकर चाबी ले गया है ।

मि० वर्ले : कोई बात नहीं, इधर से निकल जाओ ।

ग्राबर्ग : हुजूर, मेरे साथ एक और आदमी है ।

मि० वर्ले : कोई बात नहीं, कोई परवाह नहीं, इधर से निकल जाओ; दोनों चले जाओ ।

[ग्रावर्ग और बूढ़ा एकदाल दफ्तर के दरवाजे से निकलते हैं । एकदाल को देखकर मि० वर्ले की खिन्नता छिप नहीं पाती । उनके मुँह से निकल जाता है—ऊँह ! कमरे में हास-परिहास बन्द हो जाता है, स्तब्धता छा जाती है । हजलमार अपने पिता को देखकर चौंक उठता है और अपना गिलास मेज पर रखकर मुँह अँगीठी की ओर कर लेता है ।]

बूढ़ा एकदाल : (गर्दन झुकाए, आँखें फर्श की ओर किये, घबराहट में आदर से दाएँ-बाएँ सिर झुकाता हुआ मुनमुनाता जाता है) क्षमा कीजिये, क्षमा कीजिये । गलत दरवाजे से आ गया । उधर दरवाजा बन्द है—ताला लगा है । क्षमा कीजिये ।

[बूढ़ा एकदाल और ग्राबर्ग दूसरे दरवाजे से निकल जाते हैं।]

मि० वर्ले : (दाँत पीसता हुआ) यह ग्राबर्ग बिलकुल गधा है।

ग्रेगर्स : (विस्मय से होंठ खुले और आँखें फैलाये हजलमार को सम्बोधित करता है) क्यों, वह तुम्हारे···

स्थूलकाय अतिथि : क्या बात है, कौन था वह ?

ग्रेगर्स : कुछ नहीं, मुनीम था और एक दूसरा आदमी।

खल्वाट अतिथि : (हजलमार को सम्बोधित करके) कोई तुम्हारा परिचित था ?

हजलमार : मुझे नहीं मालूम, मैंने देखा नहीं।

स्थूलकाय अतिथि : (कुर्सी से उठते हुए) क्या बदतमीजी है यह ? (स्वर दबाकर आपस में बात करते हुए अतिथियों के पास जाकर उनकी बात सुनने लगता है)।

सूरबी बाई : (धीमे स्वर में नौकर से) सुनो, बुढ़ऊ को घर ले जाने के लिए कुछ दे देना। देखो, जरा अच्छी तरह से देना !

पैटर्सन : (स्वीकृति में सिर हिलाकर) हो जायगा हुजूर। (नौकर चला जाता है।)

ग्रेगर्स : (धीमे झिझकते हुए स्वर में हजलमार से) क्यों, क्या वही थे ?

हजलमार : हाँ !

ग्रेगर्स : तुमने तो मुँह फेर लिया—इन्कार कर गए कि देखा नहीं।

हजलमार : (सुनी जा सकने योग्य फुसफुसाहट में) तो मैं क्या करता ?

ग्रेगर्स : अपने पिता को नहीं पहचानोगे ?

हजलमार : (खिन्नता से) तुम मेरी जगह होते तो—

[अन्य अतिथि वातावरण को बदलने के लिए ऊँचे स्वर में दूसरी बातें आरम्भ कर देते हैं।]

खल्वाट अतिथि : (ग्रेगर्स और हजलमार की ओर आकर आत्मीयता की मुस्कान से) क्यों भाई, कालेज के दिनों की, पुरानी मित्रता की चर्चा हो रही है ? लो मि० एकदाल, सिगरेट तो लो। माचिस चाहिए, मैं दूँ ? अरे भूल गया, यहाँ सिगरेट पीना तो मना है।

हजलमार : धन्यवाद, इस समय इच्छा नहीं है।

स्थूलकाय अतिथि : मि० एकदाल, कोई छोटा-सा लेकिन फड़कता हुआ गीत

सुनाओ। तुम तो खूब गा लेते हो।

हजलमार : क्षमा कीजिए, इस समय मुझे कुछ याद नहीं।

स्थूलकाय अतिथि : क्या, याद नहीं ? तो फिर क्या हो सकता है। भई बाल, तो फिर क्या किया जाय ?

[स्थूलकाय और खल्वाट अतिथि दूसरे कमरे में चले जाते हैं।]

हजलमार : (उदासी से) ग्रेगर्स, अब मैं चलूँगा। तुम जानते हो, मुझ पर क्या बीती है। जब किसी आदमी की किस्मत इस तरह फूट जाती है—अच्छा, तुम साहब को मेरी तरफ से नमस्ते और धन्यवाद कह देना।

ग्रेगर्स : ठीक है, ठीक है। तुम क्या सीधे घर ही जाओगे ?

हजलमार : क्यों, क्या बात है ?

ग्रेगर्स : कुछ नहीं। सोच रहा हूँ, मैं भी चलूँ, तुम्हें छोड़ आऊँ।

हजलमार : नहीं-नहीं, कोई जरूरत नहीं भैया ! मेरे यहाँ चलकर क्या करोगे ? ग्रेगर्स भैया, मेरे यहाँ तो दुःख और उदासी ही मिलेगी। इतनी अच्छी दावत के बाद अपना मन क्यों खराब करोगे। हमें मिलना होगा तो शहर में बहुत जगहें हैं, कहीं भी मिल लेंगे।

सूरबी बाई : (हजलमार और ग्रेगर्स की ओर आकर धीमे स्वर में) साहबजादे, क्या चल दिए ?

हजलमार : जी हाँ !

सूरबी बाई : गीना को मेरा प्यार कहना।

हजलमार : धन्यवाद।

सूरबी बाई : और कहना, मैं जल्दी ही किसी दिन उससे मिलने आऊँगी।

हजलमार : बहुत अच्छा, कह दूँगा; धन्यवाद। (ग्रेगर्स की ओर घूमकर) तुम ठहरो ! मैं चुपचाप निकल जाऊँगा। (दूसरे कमरे में चला जाता है)।

सूरबी बाई : (लौटते हुए नौकर को सम्बोधित करके) सुनो, बूढ़े को साथ ले जाने के लिए कुछ दे दिया था ?

पैटर्सन : जी हाँ, ब्राण्डी की एक बोतल दे दी।

सूरबी बाई : वाह, कुछ और नहीं मिला देने को ?

पैटर्सन : हुजूर, और क्या देता ? बुढ़ऊ को ब्राण्डी से ज्यादा क्या पसन्द है।

स्थूलकाय अतिथि : (हाथ में राग की स्वर-लिपि लिये हुए दरवाजे में आकर)

सूरबी बाई, साथ दो तो एक गीत हो जाय।

सूरबी बाई : जरूर।

अन्य अतिथि : वाह-वाह, वाह-वाह!

[अन्य अतिथि दूसरे कमरे में चले जाते हैं। ग्रेगर्स अँगीठी के पास खड़ा रह जाता है। मि० वर्ल मेज के पास खड़े हुए कुछ ढूँढ़ रहे हैं और ग्रेगर्स के जाने की प्रतीक्षा में हैं। ग्रेगर्स को जाते न देख मि० वर्ल दरवाजे की ओर बढ़ जाते हैं।

ग्रेगर्स : पिता जी, ठहरिये!

मि० वर्ल : (रुककर) क्यों, क्या है?

ग्रेगर्स : मैं जरा आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ।

मि० वर्ल : तो जरा ठहरकर कर लेना। अतिथियों को जा लेने दो।

ग्रेगर्स : नहीं पिता जी, अभी कहना चाहता हूँ। फिर शायद मौका नहीं मिलेगा।

मि० वर्ल : (पुत्र की ओर बढ़कर) क्यों, क्या कह रहे हो?

[इसके पश्चात् वार्तालाप के समय दूसरे कमरे से पियानो बजने की धीमी-धीमी गूँज सुनाई देती रहती है।]

ग्रेगर्स : आपको नहीं मालूम उस परिवार की स्थिति कितनी दयनीय हो गई है?

मि० वर्ल : क्या बूढ़े एकदाल की बात कह रहे हो?

ग्रेगर्स : जी हाँ, उन्हीं की बात कर रहा हूँ। लैफ़्टिनेंट एकदाल से तो आपकी बहुत गहरी मित्रता थी।

मि० वर्ल : हाँ, दुर्भाग्य से मित्रता काफी गहरी थी। उस मित्रता के अपराध का दण्ड वर्षों भोगता रहा हूँ। उसी की कृपा से मुझे भी बदनामी और कलंक का कुछ भाग मिला है।

ग्रेगर्स : (धीमे स्वर में) क्या सब अपराध वास्तव में उन्हीं का था?

मि० वर्ल : तुम क्या समझते हो, तो और किसका था?

ग्रेगर्स : चौब के उस ठेके में आप दोनों साझी थे।

मि० वर्ल : पर, तुम्हें मालूम है कि उस जंगल का नक्शा एकदाल ने ही बनाया था। उस नक्शे से ही झगड़ा हुआ। सरकारी पेड़ों को कटवाने के अपराध का उत्तरदायित्व उसी पर था। वास्तव में उस पूरे मामले का उत्तरदायित्व उसी पर था। मुझे तो मालूम नहीं था कि वह क्या कर रहा था।

ग्रेगर्स : लेकिन, ऐसा मालूम होता है कि स्वयं बुढ़ऊ को भी नहीं मालूम

था कि वे क्या कर रहे थे।

मि० वर्ल : कौन जाने ! लेकिन तथ्य यह है कि अदालत ने उसे अपराधी पाया और मुझे निर्दोष पाया।

ग्रेगर्स : जी हाँ, मैं भी जानता हूँ मामले के पूरे सबूत नहीं मिल सके थे।

मि० वर्ल : जिसे अदालत ने बरी कर दिया, वह बरी हो गया। तुम उस पुरानी गन्दगी की छानबीन में क्यों परेशान हो रहे हो ? उन्हीं परेशानियों ने तो मेरे बाल इस उम्र में सफेद कर दिए। वहाँ कारखाने में तुम बरसों यही सोचते रहे हो ? ख़ैर ग्रेगर्स, भरोसा रखो; जहाँ तक मेरे नाम का प्रश्न है, लोग उन सब बातों को भूल चुके हैं।

ग्रेगर्स : परन्तु उस दुखी परिवार का क्या होगा ?

मि० वर्ल : तुम्हीं बताओ, उनके लिए मैं क्या कर सकता था ? एकदाल जब जेल से छूटकर आया, उसकी हालत ऐसी हो चुकी थी कि सहायता देने से भी उसका कुछ नहीं बन सकता था। कुछ लोगों में दम ही नहीं होता। मामूली-सी मुसीबत से ही ढेर हो जाते हैं। फिर, अपने पैरों खड़े ही नहीं हो पाते। एक बार फिसले तो सदा के लिए गए। ग्रेगर्स, सच मानो उनके लिए जो कुछ मैंने किया है, उससे अधिक कर सकना संभव ही नहीं था। अन्यथा बात मुझ पर ही आ जाती, उँगलियाँ उठने लगतीं, लोग सन्देह करने लगते।

ग्रेगर्स : सन्देह ? ठीक है।

मि० वर्ल : एकदाल को मैंने दफ़्तर में कागजों की नकलें बनाने का काम दे दिया है। जितना बनता है, उससे कहीं अधिक दिला देता हूँ।

ग्रेगर्स : (पिता से आँखें बचाकर) जी हाँ, इसमें तो सन्देह नहीं।

मि० वर्ल : तुम हँस रहे हो ? शायद तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं होता। मैं जानता हूँ, खाते में उसका हिसाब नहीं है। इस तरह के खर्चे हिसाब में डाले भी नहीं जाते।

ग्रेगर्स : (विद्रूप की मुस्कान से) जी हाँ, जानता हूँ ऐसे खर्च बहीखातों में नहीं लिखे जाते।

मि० वर्ल : (चौंककर) क्यों, तुम्हारा मतलब क्या है ?

ग्रेगर्स : (गम्भीरता से) आपने हजलमार एकदाल को फोटोग्राफ़ी सीखने के लिए जो खर्चा दिया था वह किस खाते में डाला गया था।

मि० वर्ल : उस खर्चे को खाते में डालने का मतलब क्या था ?

ग्रेगर्स : मुझे मालूम है कि उसे खर्च आपने ही दिया था। मुझे यह भी

मालूम है कि उसे स्टूडियो बनाने के लिए भी आपने ही खर्चा दिया था।

मि० वर्ले : तुम यह सब जानते हो और फिर भी यह कहते हो कि मैंने उन लोगों के लिए कुछ नहीं किया। सच मानो, उन लोगों के लिए मुझे बहुत खर्च और परेशानी उठानी पड़ी है। कर्त्तव्य समझकर ही करता हूँ।

ग्रेगर्स : खातों में यह हिसाब कहीं दर्ज है?

मि० वर्ले : तुम यह क्यों पूछ रहे हो?

ग्रेगर्स : एक कारण है। यह बताइए अपने पुराने मित्र के पुत्र को सहायता देने की विशेष चिन्ता आपको तभी हुई थी न, जब वह अपने विवाह की तैयारी कर रहा था?

मि० वर्ले : हे भगवान् ! इतनी पुरानी बातें मुझे कैसे याद···

ग्रेगर्स : आपने मुझे उसी समय लिखा था—पत्र तो कामकाज के संबंध में ही था, परन्तु अन्त में दो-तीन शब्द इस सम्बन्ध में थे। आपने पत्र के अन्त में लिखा था, हजलमार एकदाल ने मिस हैन्सन से विवाह कर लिया है।

मि० वर्ले : हाँ, ठीक है। यही उसका नाम था।

ग्रेगर्स : परन्तु आपने यह तो नहीं लिखा था कि मिस हैन्सन हमारी पुरानी नौकरानी गीना हैन्सन ही थी।

मि० वर्ले : (विद्रूप की हँसी को रोककर) लिखा होगा। मुझे क्या मालूम था कि तुम्हें अपनी पुरानी नौकरानी के बारे में इतनी चिन्ता थी।

ग्रेगर्स : ठीक है, मुझे चिन्ता नहीं थी परन्तु (स्वर दबाकर) इसी घर में किसी दूसरे को उसकी बहुत चिन्ता थी।

मि० वर्ले : क्या मतलब है तुम्हारा? (जरा क्रोध से) तुम मेरी ओर संकेत कर रहे हो?

ग्रेगर्स : (दबे हुए परन्तु दृढ़ स्वर में) जी हाँ, आपसे ही अभिप्राय है।

मि० वर्ले : तुम्हारा इतना साहस? तुम इतने बढ़ गए? और उस कृतघ्न फोटोग्राफ़र की यह मजाल कि इस घर में आए और मुझ पर लांछन लगाये?

ग्रेगर्स : हजलमार ने तो कभी कोई ऐसी बात नहीं कही। मुझे आशा नहीं, उसे ऐसा कोई संदेह भी होगा।

मि० वर्ले : तो फिर तुम्हें कैसे खयाल आया? आखिर ऐसी बात तुम्हें कौन कह सकता है?

ग्रेगर्स : मेरी गरीब दुखिया माँ ने मुझसे कहा।

मि० वर्ले : तुम्हारी माँ ने ? हाँ मेरा भी अनुमान है, उसी ने बका होगा। तुम दोनों सदा मेरे विरुद्ध रहे। तुम सदा उसकी बातों में रहे, वह सदा तुम्हें मेरे विरुद्ध भड़काती रही।

ग्रेगर्स : नहीं, यह बात नहीं ! माँ सदा दुःख और अपमान सहती रही है। उस दुःख और अपमान ने ही उन्हें तोड़ डाला, उसी से उनका इतना दुःखपूर्ण अन्त हुआ।

मि० वर्ले : क्या बक रहे हो ? उसने क्या दुःख और अपमान सहा ? उसका जीवन वैसा ही था जैसा दूसरी स्त्रियों का होता है। सदा बीमार रहने वाले, बिगड़े दिमाग, सनकी लोगों से कोई कहाँ तक निबाह सकता है ? भुगतने वाले ही जानते हैं। तुम खामखाह इन बहमों को लेकर कुढ़ते रहते हो। अपने पिता के सम्बन्ध में झूठी, बेसिर-पैर की अफ़वाहों को लेकर ताने-बाने बुना करते हो। सुनो, ग्रेगर्स, तुम्हारी उम्र इन बातों की नहीं है। इस उम्र में तुम्हारे लिए और बहुत-कुछ करने को है।

ग्रेगर्स : जी हाँ, मैं भी यही समझता हूँ। मुझे कुछ उपयोगी काम करना चाहिए।

मि० वर्ले : बिलकुल ठीक। तुम अपना ध्यान ठीक दिशा में लगाओ तो तुम व्यर्थ के झंझटों से परेशान भी न हो और तुम्हारा मन भी शान्त रहे। तुम बरसों से वहाँ कारखाने में पड़े मामूली क्लर्कों की तरह सिर मार रहे हो। उसमें क्या फायदा है ? क्लर्क की तनखाह ले रहे हो। अपनी तनखाह भी नहीं बढ़ाने देते। यह मूर्खता नहीं तो क्या है ?

ग्रेगर्स : जी···परन्तु यह आपका विचार है। मैं तो ऐसा नहीं सोचता।

मि० वर्ले : मैं तुम्हारा मतलब समझता हूँ। तुम अपने पैरों खड़ा होना चाहते हो। तुम मुझसे कोई सहायता या आभार नहीं चाहते। खैर, जैसा तुम चाहो। तुम चाहो तो एक उपाय से पूर्णतः स्वतन्त्र और आत्मनिर्भर भी हो सकते हो।

ग्रेगर्स : सचमुच ? वह कौन-सा उपाय है।

मि० वर्ले : मैंने तुम्हें कुछ अत्यन्त आवश्यक कारणों से ही यहाँ तुरन्त आने के लिए लिखा था। तो···

ग्रेगर्स : जी हाँ, आपने मुझे किस कारण से बुलाया था ? वह कारण तो आपने अभी तक नहीं बताया। सुबह से उसी की प्रतीक्षा में हूँ।

मि० वर्ले : मैं चाहता हूँ कि अब तुम कम्पनी में साझीदार हो जाओ।

ग्रेगर्स : मैं, मैं आपकी कम्पनी में साझीदार हो जाऊँ ?

मि० वर्ले : हाँ, साझीदारी के लिए यह जरूरी नहीं है कि हम एक साथ ही रहें। तुम यहाँ शहर में रहकर दफ़्तर का काम सँभालना। मैं जाकर कारखाने की देखभाल कर लूँगा।

ग्रेगर्स : आप कारखाने में जायँगे ?

मि० वर्ले : हाँ, तुम देख ही रहे हो कि अब मेरा स्वास्थ्य पहले जैसा नहीं रहा। ग्रेगर्स, अब मुझसे उतना काम नहीं हो सकता। मैं अपनी आँखों की उपेक्षा नहीं कर सकता। मेरी नज़र खराब होती जा रही है। उस ओर ध्यान देना आवश्यक है।

ग्रेगर्स : आपकी नज़र तो पहले भी खराब थी।

मि० वर्ले : नहीं, पहले इतनी खराब नहीं थी। कुछ और भी ऐसी परिस्थितियाँ हैं कि मेरा वहीं रहना ठीक होगा। कम-से-कम मैं कुछ समय के लिए चला जाना चाहता हूँ।

ग्रेगर्स : मुझे तो ऐसा कोई खयाल नहीं था।

मि० वर्ले : ग्रेगर्स सुनो, ऐसा जान पड़ता है कि कई बातों में हमारी रुचि नहीं मिलती परन्तु हमारा पिता-पुत्र का सम्बन्ध है। मेरे विचार में यही उचित है कि जैसे भी हो, हमें परस्पर निबाहना चाहिए।

ग्रेगर्स : मेरा खयाल है, आप दुनियादारी निबाहने के लिए कह रहे हैं।

मि० वर्ले : अच्छा तुम दुनियादारी के खयाल से ही समझ लो। वही सही। ग्रेगर्स, तुम इस विषय में सोचना। क्यों, तुम्हें क्या इसमें कोई कठिनाई जान पड़ती है ? बोलो।

ग्रेगर्स : (रुखाई से) मुझे आपकी बात में कुछ रहस्य जान पड़ता है।

मि० वर्ले : क्यों, तुम्हारा क्या मतलब है ?

ग्रेगर्स : मुझे जान पड़ता है, आप मुझसे कोई काम निकालना चाहते हैं।

मि० वर्ले : सुनो, जिन दो व्यक्तियों में परस्पर गूढ़, हमारे जैसा सम्बन्ध हो, उन्हें सदा एक-दूसरे के काम आना ही चाहिए।

ग्रेगर्स : जी हाँ, हो भी सकता है।

मि० वर्ले : मैं चाहता हूँ तुम कुछ दिन यहाँ मेरे साथ घर पर रहो। मेरा और कौन है ग्रेगर्स ! मैं जन्म-भर अकेला ही बना रहा। अब अकेलापन मेरे लिए असह्य हो गया है। अब मुझे बुढ़ापा महसूस होने लगा है। मुझे साथ और सहारे की आवश्यकता अनुभव होती है।

ग्रेगर्स : सूरबी बाई हैं तो आपके साथ।

मि० वर्ले : हाँ, ठीक कहते हो। सच बात तो यह है कि उसके बिना मेरा निर्वाह नहीं। बड़ी समझदार है और दिल की साफ़ है, बनावट नहीं करती। उसकी वजह से घर बसा हुआ लगता है। वर्ना यह

घर मुझे काटने को दौड़ता।

ग्रेगर्स : आप ठीक कह रहे हैं। मेरे खयाल में जो कुछ आप चाहते हैं, आपके पास मौजूद है।

मि० वर्ले : हाँ, परन्तु क्या भरोसा, कब तक ऐसे चल सकेगा ? लोग-बाग तरह-तरह की झूठी बातें उड़ाने लगते हैं। स्त्री ऐसी स्थिति में कब तक रह सकती है ? स्त्री ही क्या, पुरुष की भी तो बदनामी होने लगती है।

ग्रेगर्स : वाह, यदि आदमी की स्थिति अच्छी हो, आपकी तरह शानदार दावतें दे सके तो उसे जनमत से डरने की जरूरत नहीं।

मि० वर्ले : हाँ, हो सकता है। ग्रेगर्स, उसका भी तो खयाल करना चाहिए। सोचो, वह इस स्थिति में कब तक रह सकेगी ? उसे भी तो बदनामी का डर है। मान लो, यदि मेरे प्रति आदर से या मेरा खयाल करके वह अफवाहों और झूठी बदनामी की परवाह न भी करे तो भी—ग्रेगर्स, तुम्हें तो न्याय-अन्याय का बहुत विचार रहता है। तुम्हीं बताओ, क्या यह उचित होगा कि मैं उसकी चिन्ता न करूँ ?

ग्रेगर्स : गोल-मोल बात छोड़िये। आप यह बताइये, आप उससे विवाह करना चाहते हैं ?

मि० वर्ले : खैर, मान लो चाहता हूँ, तो क्या ?

ग्रेगर्स : तो क्या ? ठीक है !

मि० वर्ले : तुम उस स्थिति को असह्य तो नहीं मान बैठोगे ?

ग्रेगर्स : ऐसी क्या बात है ? मुझे तो कोई ऐसा कारण नहीं जान पड़ता।

मि० वर्ले : तो ठीक है। मुझे जरा भय था। मुझे शंका थी, शायद तुम्हें यह बात अपनी माता की स्मृति के प्रति अनादर···

ग्रेगर्स : जी, मैं ऐसी भावुकता में नहीं पड़ता।

मि० वर्ले : ठीक है। तुम भावुक हो या न हो, जो भी हो तुमने मेरे मन से चिन्ता का बोझ दूर कर दिया है। मुझे इस बात का बहुत सन्तोष है कि मैं इस सम्बन्ध के विषय में तुम्हारी सहानुभूति पर निर्भर कर सकता हूँ।

ग्रेगर्स : (पिता की ओर घूरकर) अब समझ गया, आप मुझसे यही काम निकालना चाहते थे।

मि० वर्ले : तुमसे काम निकालना चाहता हूँ ? तुम कैसी बातें करते हो ?

ग्रेगर्स : ओहो, शब्दों के सम्बन्ध में इतना तकल्लुफ़ करने की क्या जरूरत है। कोई दूसरा तो सुन नहीं रहा है ? (जरा हँस देता है) अब मैं

कारण समझ गया हूँ। मेरा शहर आना इसीलिए नितान्त आवश्यक था कि आप सूरबी बाई के सन्तोष के लिए पारिवारिक जीवन का आडंबर रच सकें। पिता-पुत्र के स्नेह और विश्वास का भावुक दृश्य उपस्थित हो सके। एक बिलकुल नया उदाहरण है !

मि० वर्ले : तुम मुझसे किस तरह बात कर रहे हो ?

ग्रेगर्स : आप ही बताइए, यहाँ पारिवारिक जीवन का वातावरण कब था ? जहाँ तक मुझे याद है, मैंने तो कभी नहीं देखा। खैर अब यदि आपको इससे सन्तोष होता है तो उसका कुछ आभास बना लिया जा सकता है। निःसन्देह यदि यह नाटक रचा जा सके कि बेटा पिता के विवाह में सम्मिलित होने के लिए पिता के प्रति श्रद्धा से घर दौड़ा चला आया है तो लोगों पर इस बात का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता। लोग मान जाएँगे कि मेरी माँ के कुढ़-कुढ़कर जीवन समाप्त कर देने की अफ़वाहें व्यर्थ की गप्पें थीं। मेरे व्यवहार से उन अफ़वाहों का निराकरण स्वयं ही हो जाएगा।

मि० वर्ले : ग्रेगर्स, मुझे तो लगता है कि तुम संसार में अपना सबसे बड़ा शत्रु मुझी को मानते हो।

ग्रेगर्स : (स्वर दबाकर) कारण यह है कि मैं आपकी वास्तविकता जानता हूँ।

मि० वर्ले : तुमने मेरे सम्बन्ध में अपनी माँ की बातों से धारणाएँ बना ली हैं (स्वर को जरा धीमा करके) परन्तु तुम्हें यह भी याद रखना चाहिए कि तुम्हारी माँ को मेरे सम्बन्ध में कभी-कभी गलतफ़हमियाँ भी हो सकती थीं।

ग्रेगर्स : (जरा सिहरकर) मैं आपका अभिप्राय समझता हूँ, परन्तु माँ के उस व्यवहार के लिए कौन उत्तरदायी था ? आप, और आपकी ...कितनी ही, और वह औरत भी । जब आप उससे ऊब गए तो आपने उसे हजलमार एकदाल के गले मढ़ दिया। छिः !

मि० वर्ले : (उद्विग्नता से कंधे झटककर) बिलकुल वही ! वही बातें, जैसी तुम्हारी माँ किया करती थी।

ग्रेगर्स : (पिता की उपस्थिति की उपेक्षा करके मुँह फेरकर) और अब चारों ओर खड़ी की हुई सम्पूर्ण प्रवंचना में कैसे भोले, सरल और तटस्थ बन गए हैं। मकान में अब भी एक रखैल बैठाये हुए हैं। यह परिवार और घर है ? यह सब धोखा और फरेब है। (पिता

की ओर एक कदम बढ़ाकर) आपके जीवन की बीती हुई घटनाओं को याद करता हूँ तो सिहर उठता हूँ। कल्पना में युद्ध का मैदान दिखाई देने लगता है, जिसमें चारों ओर बर्बाद जीवनों की लाशें पड़ी हुई हैं।

मि० वर्ले : मैं तो इस परिणाम पर पहुँच गया हूँ कि हम दोनों की समझ और दृष्टिकोण में जमीन-आसमान का अन्तर है। उनमें किसी प्रकार का समन्वय संभव नहीं।

ग्रेगर्स : (पिता के प्रति आदर दिखाने के लिए अपने क्षोभ को वश में करके, जरा सिर झुकाकर) मैं आपसे बिलकुल सहमत हूँ। इसलिए मुझे विदा दीजिए। मैं सदा के लिए जा रहा हूँ।

मि० वर्ले : जा रहे हो ? घर छोड़कर जा रहे हो ?

ग्रेगर्स : जी हाँ ! मैंने अपने जीवन के लिए दूसरा ध्येय निश्चित कर लिया है।

मि० वर्ले : वह कौन-सा ध्येय है ?

ग्रेगर्स : बता भी दूँ तो आप सुनकर हँस देंगे।

मि० वर्ले : ग्रेगर्स, मेरे जैसा दुःखी—अकेला आदमी क्या हँसेगा ? कौन है मेरा ?

ग्रेगर्स : (बड़े कमरे की ओर संकेत करके) उधर देखिये पिताजी, सूरबी बाई आपके अतिथियों के साथ आँख-मिचौनी खेल रही हैं। मुझे आज्ञा दीजिये ! अलविदा !

[ग्रेगर्स कमरे से चला जाता है। अतिथि हँसते हुए उसी कमरे में आ जाते हैं।]

मि० वर्ले : (क्षोभ से ग्रेगर्स के प्रति दाँत पीसते हुए) हा-हा-हा, अजीब लड़का है—और कहता है—मैं भावुक नहीं हूँ।

द्वितीय अंक

[हजलमार एकदाल का स्टूडियो प्रकाश की सुविधा के लिए एक अच्छे बड़े बरसातीनुमा कमरे में बनाया गया है। कमरे के दाहिने भाग की छत ढलवाँ है। छत के उस भाग में बड़ी-बड़ी काँच-मढ़ी खिड़कियाँ हैं। खिड़कियों का आधा भाग नीले परदे से ढका हुआ है। कमरे में आने का दरवाजा दाएँ हाथ के कोने में है। उसी ओर की दीवार में छोटी बैठक के लिए दरवाजा है। बाईं ओर की दीवार में दो दरवाजे हैं। दोनों दरवाजों के बीच दीवार में ऊँची अँगीठी है। पीछे की दीवार में चौड़े दरवाजे हैं। इन दरवाजों के किवाड़ दीवार में दाएँ-बाएँ ठेले जा सकते हैं। स्टूडियो की सजावट सीधी-सादी है परन्तु सुविधा की व्यवस्था है। दाहिनी ओर दोनों दरवाजों के बीच में दीवार के साथ एक सोफ़ा है। सोफे के समीप एक छोटी मेज है और कुछ कुर्सियाँ हैं। मेज पर एक लैम्प है ! लैम्प शेड से ढका हुआ है और उससे मद्धिम प्रकाश फैल रहा है। अँगीठी के पास बाँहों वाली कुर्सी रखी हुई है। कमरे में इधर-उधर कैमरा और फोटोग्राफ़ी के दूसरे उपकरण मौजूद हैं। पीछे की दीवार के साथ दरवाजे के बाईं ओर पुस्तकें रखने की अलमारी है। अलमारी में कुछ पुस्तकें हैं, कुछ डिब्बे हैं, कुछ रासायनिक पदार्थों की बोतलें हैं और कुछ औजार भी पड़े हुए हैं। मेज पर कई फोटोग्राफ, कुछ कागज, चित्रकारों के ब्रुश और फोटोग्राफी के उपयोग की दूसरी वस्तुएँ हैं। मेज के समीप कुर्सी पर बैठी हुई 'गीना एकदाल' कपड़े पर बखिया कर रही है। 'हेदविग' सोफ़े पर लेटी हुई एक पुस्तक पढ़ रही है। वह दोनों अँगूठे कानों में देकर हाथों की आड़ से आँखों को प्रकाश से बचाये हुए है।]

गीना : (हेदविग की ओर कई बार कनखियों से देखती है उसके चेहरे पर कुछ चिन्ता का भाव है। इच्छा न होने पर भी उसे बोलना पड़ता है) हेदविग !
(हेदविग सुन नहीं पाई)

गीना : (हेदविग से उत्तर न पाकर कुछ ऊँचे स्वर में) हेदविग !

हेदविग : (आँखों पर से हाथ हटाकर गीना की ओर देखती है) क्या अम्मी ?

गीना : हेदविग, बेटी कुछ खयाल करो ! बहुत पढ़ लिया, अब पुस्तक छोड़ दो !

हेदविग : अम्मी, बस थोड़ा-सा और पढ़ लेने दो, बस—जरा-सा और

पढ़ लूँ।

गीना : नहीं, बेटी नहीं ! अब पुस्तक को उधर रख दो ! तुम्हारे पापा को बुरा लगेगा। रात में वह स्वयं भी नहीं पढ़ते।

हेदविग : (पुस्तक बन्द करते हुए) हाँ, पापा तो नहीं पढ़ते। उन्हें पढ़ने का शौक ही नहीं है।

गीना : (हाथ की बखिया एक ओर रखकर छोटी-सी कापी और पेन्सिल ले लेती है) मुन्नी याद है, आज मक्खनवाले को कितने पैसे दिये थे ?

हेदविग : एक रुपया ढाई आना।

गीना : हाँ ठीक है। (कापी में लिख लेती है) हाय राम, देख तो इस महीने में हमने कितना मक्खन लिया है ! माँस और पनीर के लिए···कितना हुआ···(कापी में लिखती है) और सब्जी···(योग लगाती है) हाय राम, इस पर ही इतना···

हेदविग : और बियर के दाम !

गीना : हाँ-हाँ, और क्या ! (कापी में लिखती है) अभी से इतना हो गया, पर किया क्या जाय !

हेदविग : अम्मी, साँझ के लिए तुमने यों ही इतना बना लिया। हम दोनों ही तो हैं, क्या जरूरत थी ? पापा तो दावत में गये हैं।

गीना : चलो, बच रहेगा। आज तो ग्राहक भी सवा-पाँच रुपये दे गए हैं।

हेदविग : अम्मी, सवा-पाँच रुपये ?

गीना : हाँ मुन्नी, सवा पाँच।

[गीना फिर अपनी बखिया उठा लेती है। हेदविग कागज और पेन्सिल ले लेती है। बाएँ हाथ से आँखों पर छाँह करके चित्र बनाने लगती है।]

हेदविग : अम्मी अहा, कितना अच्छा हुआ; पापा को वर्ले साहब के यहाँ कितने बड़े भोज में निमन्त्रण मिला है।

गीना : वास्तव में पापा को वर्ले साहब ने नहीं बुलाया, उन्हें साहब के लड़के ने निमन्त्रण दिया है। (जरा झिझककर) हमें वर्ले साहब से क्या मतलब ?

हेदविग : हाय अम्मी, पापा कब तक लौटेंगे ? पापा कह गए हैं—मेरे लिए सूरबी बाई से खूब अच्छी-अच्छी चीजें लाएँगे।

गीना : हाँ, क्यों नहीं। उनके यहाँ सब-कुछ है; किस चीज़ की कमी है ?

हेदविग : (चित्र बनाने के लिए कागज पर फिर झुककर) हाय अम्मी, अब तो मुझे थोड़ी-थोड़ी भूख भी लगने लगी है।

[बुढ़ऊ एकदाल हजलमार के पिता कमरे में आते हैं। बुढ़ऊ की बगल में कागजों का बण्डल है और कोट की जेब से एक पैकेट झाँक रहा है।]

गीना : पिताजी, आज इतनी देर कहाँ हो गई !

एकदाल : मैं दफ़्तर में बैठा था तो बाहर दरवाजे पर किसी ने ताला लगा दिया। ग्राबर्स की प्रतीक्षा करनी पड़ी। फिर दूसरे दरवाजे से आना पड़ा। उन्होंने···हूँ !

हेदविग : पिताजी, दफ़्तर से लिखाई का और काम मिला ?

एकदाल : देख तो बेटी, यह सब देख; इतना ?

गीना : चलो, बहुत अच्छा हुआ।

हेदविग : पिताजी, आपकी जेब में भी एक पैकेट है !

एकदाल : कहाँ ! अरे यह कुछ नहीं, ऐसे ही है (अपनी छड़ी एक कोने में टिका देते हैं) गीना, आज मुझे बहुत काम है। बहुत देर बैठना पड़ेगा। (पीछे की दीवार में बने दरवाजे में एक किवाड़ को जरा ठेल देते हैं)। ओह ! (क्षण-भर दववाजे से झाँककर दरवाजे को सावधानी से बन्द कर देते हैं।) वाह-वाह ! सब सो गए हैं, एक ही जगह। और वह तो अपने आप ही टोकरी में चली गई है। वाह—वाह !

हेदविग : पिताजी, उसे टोकरी में ठण्ड नहीं लगेगी !

एकदाल : क्या कहती है; ठण्ड लगेगी ? देख तो उसमें कितनी घास भरी हुई है। (बुढ़ऊ बाईं ओर के दरवाजे की ओर आगे बढ़ जाते हैं।) यहाँ माचिस की डिबिया नहीं है !

गीना : वहाँ है तो, अलमारी के ऊपर।

[एकदाल अपने कमरे में चले जाते हैं।]

हेदविग : अम्मी, बड़ा अच्छा हुआ। पिताजी को आज काम मिल गया।

गीना : हाँ, अच्छा ही है। उन्हें खर्च के लिए कुछ पैसा मिल जाएगा, उनके काम आएगा।

हेदविग : हाँ अम्मी, बहुत अच्छा है। काम में लगे रहेंगे, नहीं तो दिन-भर वहाँ गन्दगी में—बुढ़िया एरिकसन की हॉली में बैठे रहते।

गीना : हाँ, तू ठीक कहती है; अच्छा ही है।

हेदविग : (कुछ सोचकर) अम्मी, क्या साहब के यहाँ भोज अभी तक समाप्त नहीं हुआ होगा ?

गीना : भगवान् जाने, कौन बड़ी बात है; अभी चल ही रहा हो।

हेदविग : सुनो अम्मी, पापा को खूब बढ़िया-बढ़िया चीजें भोज में मिली होंगी। घर लौटेंगे तो बहुत प्रसन्न होंगे, है न अम्मी ?

गीना : हाँ मुन्नी, अगर हमारा उधर का कमरा किराये पर उठ जाता तो सुनकर पापा को बहुत तसल्ली हो जाती।

हेदविग : हाँ अम्मी, कमरा तो खाली पड़ा है।

गीना : हाँ मुन्नी, पैसे-पैसे की तंगी हो रही है और कमरा यों ही पड़ा है !

हेदविग : अम्मी, पापा लौटेंगे तो उनसे आज यह बात करने की क्या ज़रूरत है ! वह आयेंगे तो खूब सन्तुष्ट और प्रसन्न होंगे। कमरे की बात तो फिर भी हो सकती है।

गीना : (बेटी की ओर ध्यान से देखकर) क्यों मुन्नी, तू चाहती है कि तेरे पापा साँझ को लौटें तो उन्हें सुनाने के लिए अच्छी-अच्छी बातें हों।

हेदविग : हाँ अम्मी, तब सबको बड़ा अच्छा-अच्छा लगता है न ? सभी खुश रहते हैं।

गीना : (कुछ सोचकर) हाँ बेटी, तू ठीक कहती है।

[बुढ़ऊ एकदाल लौट आते हैं और बाईं ओर का दरवाजा खोलते हैं।]

गीना : (बुढ़ऊ की ओर घूमकर) पिताजी, रसोई से कुछ चाहिए; मैं ला दूं ?

एकदाल : मैं ले लूँगा, तुम बैठो। (बुढ़ऊ रसोई में चले जाते हैं।)

गीना : कहीं अँगीठी की आग न खराब कर दें। (कुछ सोचकर) हेदविग, जा रसोई में देख; क्या कर रहे हैं।

[बुढ़ऊ गिलास में गरम पानी लिये लौटते हैं।]

हेदविग : पिताजी, क्या गरम पानी लिया है ?

एकदाल : हाँ बच्ची, गरम पानी है; जरा ज़रूरत थी—लिख रहा हूँ न ! स्याही सूख गई है, चिप-चिप कर रही है। दावात में कीचड़-सा हो गया है।

गीना : पहले खा लेते ! आपके लिए परस दिया है।

एकदाल : तुम्हें खाने की पड़ी है। मुझे इतना काम निपटाना है, फुरसत कहाँ है।

मेरे कमरे में किसी को आने न देना ! मुझे इस समय फुरसत नहीं है। खयाल रखता हूँ !

[बुढ़ऊ अपने कमरे में चले जाते हैं। गीना और हेदविग

की आँखें मिल जाती हैं।]

गीना : (स्वर दबाकर) मुन्नी, क्या खयाल है? इन्होंने पैसे कहाँ से लिये होंगे?

हेदविग : मैं बताऊँ, ग्राबर्ग ने दिये होंगे?

गीना : ग्राबर्ग नहीं देगा। वह तो इनकी मजदूरी मुझे भेज देता है।

हेदविग : तो कहीं से उधार में बोतल ले आए होंगे।

गीना : इन गरीब को उधार कौन देगा!

[हजलमार एकदाल कमरे में आता है। वह ओवरकोट पहने है और सिर पर सलेटी रंग की फेल्ट टोपी है।]

गीना : हाथ की बखिया एक ओर रखकर खड़ी हो जाती है—लौट भी आए; भोज हो गया?

हेदविग : (उल्लास से कूदकर) आहा-आहा! पापा आ गए।

हजलमार : (टोपी उतारते हुए) हाँ, दूसरे लोग भी लौटने लगे थे।

हेदविग : पापा, भोज इतनी जल्दी खत्म हो गया?

हजलमार : हाँ मुन्नी, वह तो डिनर-पार्टी थी न! (ओवरकोट उतारने लगता है।)

गीना : ठहरो-ठहरो, मैं उतरवा देती हूँ।

हेदविग : मैं भी मदद करूँगी। (माँ-बेटी ओवरकोट उतारने में सहायता करती हैं। गीना कोट को खूँटी से लटका देती है।) पापा, भोज में बहुत-से लोग आये थे?

हजलमार : अरे नहीं, बहुत कहाँ। हम लोग बारह आदमी थे, चौदह रहे होंगे।

गीना : खूब बातचीत हुई; सबसे बातें हुईं?

हजलमार : हाँ, हुई ही, थोड़ी बहुत परन्तु मुझे तो ग्रेगर्स घेरे रहा। वह मुझसे ही बातें करता रहा।

गीना : ग्रेगर्स कैसा लगा? चेहरा अब भी वैसा ही है?

हजलमार : हाँ, वैसा ही है। चेहरा तो उसका ऐसा-वैसा ही है। पिताजी अभी नहीं लौटे?

हेदविग : आ गए हैं, उधर बैठकर लिख रहे हैं।

हजलमार : उन्होंने कुछ कहा?

गीना : नहीं तो, क्यों क्या हुआ?

हजलमार : उन्होंने कुछ नहीं कहा? मेरा खयाल है, शायद किसी ने कहा था कि वह ग्राबर्ग के पास गये थे। मैं जरा उनसे पूछूँ तो।

गीना : नहीं-नहीं, रहने दो; क्या जरूरत है?

हजलमार : क्यों नहीं, क्या उन्होंने मुझे आने के लिए मना किया है?

गीना : उन्होंने सभी को मना कर दिया है। उन्हें न छेड़ो।

हेदविग : माँ को संकेत करने के लिए। उहूँ-उहूँ !

गीना : (हेदविग की ओर ध्यान न देकर) वह इधर आये थे गरम पानी लेकर चले गए।

हजलमार : समझ में आ गया, तब तो —

गीना : हाँ, यही बात है।

हजलमार : भगवान् ही रक्षक है—बुढ़ापे में उन्हें यह सब सहना पड़ रहा है। किसी तरह जरा दिल बहला लेने दो।

[बुढ़ऊ फिर कमरे में लौट आते हैं। उन्होंने कपड़े बदलकर सुविधा के लिए ड्रेसिंग-गाउन पहन लिया है और पाइप से कश खींच रहे हैं।]

एकदाल : अहा, तुम लौट आए ? मुझे लगा, जैसे तुम्हारी आवाज सुनाई दी हो।

हजलमार : बस, आ ही रहा हूँ।

एकदाल : तुमने मुझे नहीं देखा ?

हजलमार : नहीं, पर सुना था; आप उधर आये थे इसलिए सोचा, आपके साथ ही लौट चलूँ।

एकदाल : भला हो तुम्हारा, हुँ ! हजलमार कौन-कौन लोग थे भोज में ?

हजलमार : ओह, सभी तरह के लोग थे। फ्लोर था, बाल और कास्पर्सन, और क्या नाम—मुझे नाम याद नहीं—वही सब दरबारी लोग।

एकदाल : (गर्व से सिर हिला कर)—कुछ समझी गीना ? सब दरबारी लोग आये थे !

गीना : जी हाँ, वहाँ तो सब बड़े लोग ही आते हैं।

हेदविग : पापा, वहाँ गाना भी हुआ था ? किसी ने कविता भी सुनाई थी ?

हजलमार : नही बेटा, निरी बकवास थी। हाँ, मुझसे गाने के लिए कहा था। मुझे क्या जरूरत थी उनके लिए गाने की ?

एकदाल : वाह, तुम्हें क्या जरूरत थी !

गीना : अरे, सुना ही देते तो क्या था।

हजलमार : वाह, मैं क्या ऐरे-गैरे के इशारों पर नाचता फिरता हूँ ! (उत्तेजना में चहलकदमी करने लगता है) मुझसे यह सब नहीं हो सकता।

एकदाल : नहीं-नहीं, हजलमार ऐसा आदमी नहीं है।

हजलमार : मेरी समझ में नहीं आता, मैं अगर एक बार दावत में चला गया तो क्या दूसरों का दिल बहलाता फिरूँ ! वे लोग यह काम खुद

क्यों नहीं करते ? वे लोग तो आज यहाँ कल वहाँ, रोज ही शराब उड़ाते हैं, दावतें खाते हैं, जिन्दगी-भर यही किया करते हैं। जब वे इतनी मौज उड़ाते हैं तो ऐसी शानदार दावतों के बदले अपने साथियों का दिल भी बहलाया करें।

गीना : तुम उन लोगों के सामने तो यह सब नहीं कह आए ?

हजलमार : (मुनमुनाते हुए) हुँ-हुँ, तुम्हें क्या बताऊँ—कुछ तो उन्होंने सुना ही; उनके कान तो खुले।

एकदाल : जानते हो, वे लोग मामूली आदमी नहीं, दरबारी आदमी हैं !

हजलमार : होंगे, मेरी बला से। (लापरवाही से) जरा बात हो ही गई 'तोके' के बारे में।

एकदाल : क्या कहा; तोके ? जानते हो, तोके बहुत ही नफ़ीस शराब होती है।

हजलमार : मान लिया, तोके बहुत नफ़ीस शराब होती होगी, परन्तु आप जानते हैं कि अंगूर की फसल सदा एक-सी तो नहीं होती। मौसम अच्छा रहे, फसल को जितनी धूप मिले, उतनी ही अच्छी शराब उस फसल की होगी।

गीना : अच्छा, तुम तो बहुत जानते हो।

एकदाल : क्या बात कही ?

हजलमार : जी हाँ, वे लोग बहस करने लगे। खैर, उन्हें भी करारा जवाब मिला—फ़सल की हालत भी दरबारी लोगों की तरह होती है। दोनों के लिए ही सब दिन एक समान नहीं होते ! कान खुल गए उनके !

गीना : हे भगवान्, तुम कैसी-कैसी बातें कह डालते हो !

एकदाल : वाह-वाह ! खूब टिकाई, नौन लगाकर चाट गए होंगे !

हजलमार : मैंने खरा जवाब दे मारा।

एकदाल : सुनती हो बहू, खरा जवाब दे मारा और किन्हें ? दरबारियों को।

गीना : अब मैं क्या कहूँ, ऐसे लोगों से इस तरह बोलना चाहिए ?

हजलमार : हाँ, परन्तु तुम किसी से कह देना ! ऐसी बातें इधर-उधर थोड़े ही कही जाती हैं। यह तो आपसी मित्रता की बात थी। सभी बहुत भले, खुशमिजाज लोग थे। हम उनका दिल क्यों दुखायें। ऐसा ठीक नहीं।

एकदाल : पर जवाब तुमने खूब खरा दिया।

हेदविग : (लाड़ से) हाय, पापा जी इस सूट में कितने अच्छे लग रहे हैं;

हाय सचमुच बड़े प्यारे लग रहे हैं।

हजलमार : क्यों, क्या अच्छा लग रहा है? यह सूट मुझे बिलकुल फ़िट है, जैसे मेरे ही नाप का सिला हो—बस, जरा बगल में थोड़ा तंग है। हेदविग, जरा मदद करो! (कोट उतार देता है) अपना ही कोट पहन लूँ। गीना, मेरा कोट कहाँ है?

गीना : अभी देती हूँ। (कोट लाकर पति को पहना देती है।)

हजलमार : इस कोट में ज्यादा सुविधा मालूम होती है। देखो, याद रखना—सूट 'मोलबिक' को कल सुबह ही लौटा देना!

गीना : (कोट को तहाते हुए) हाँ-हाँ, सुबह ही लौटा दूँगी।

हजलमार : (पीठ सीधी करके) अपने कोट में ज्यादा आराम लगता है। मेरे लिए तो ऐसा ही, जरा ढीला कोट ठीक बैठता है, ठीक है न हेदविग?

हेदविग : हाँ पापा, यह ज्यादा अच्छा है।

हजलमार : मुझे नेकटाई भी ऐसी जरा ढीली-ढाली अच्छी लगती है, क्यों बेटी?

हेदविग : हाँ पापा, आपके लम्बे-घुंघराले बालों और दाढ़ी के साथ ऐसी ढीली-ढाली टाई खूब फबती है।

हजलमार : (सिर पर हाथ फेरते हुए) मेरे बाल घुँघराले तो क्या; हाँ, लहरिया जरूर कहे जा सकते हैं।

हेदविग : हाँ पापा, आपके बालों में लहरें बहुत सुन्दर लगती हैं।

हजलमार : हाँ, मेरे बाल लहरिया तो हैं।

हेदविग : (जरा झिझककर हजलमार का कोट पकड़ लेती है) पापा!

हजलमार : हाँ बेटी, क्या कहती हो?

हेदविग : हाँ; आपको पता तो है!

हजलमार : नहीं बेटी, बताओ न! सच, मुझे नहीं मालूम।

हेदविग : (रुलाई को हँसी से छिपाते हुए) पापा, क्यों तंग कर रहे हैं?

हजलमार : बेटी बताओ तो, क्या बात है?

हेदविग : (पिता को लाड़ में धकेलते हुए) हाँ, पापा बहाना कर रहे हैं। दीजिये न। आपने कहा था—मेरे लिए वहाँ से अच्छी-अच्छी चीज़ें लायँगे।

हजलमार : ओफ! क्या कहूँ, मुझे तो याद ही नहीं रहा; भूल ही गया।

हेदविग : नहीं, मैं नहीं मानती। मज़ाक कर रहे हैं। पापा, दीजिये न; कहाँ छिपा रखी है?

हजलमार : सच कहता हूँ बेटी, मेरी कसम—मुझे याद ही नहीं रहा। अच्छा

ठहरो, एक चीज़ तुम्हें दिखाऊँ।

[उठकर सूट की जेब टटोलता है।]

हेदविग : (प्रसन्नता से कूद-कूदकर ताली बजाती है) अम्मी-अम्मी देखो।

गीना : हाँ, दे तो रहे हैं। तू तो बस पीछे ही पड़ जाती है।

हजलमार : (कोट की जेब से एक कागज निकालता है) देखो मुन्नी, यह क्या है ?

हेदविग : क्या; यह तो कागज है।

हजलमार : नहीं-नहीं। यह देख, लिखा है 'मेनू'। बेटी, इसे मेनू कहते हैं ! भोज में जो चीज़ें परोसी गई थीं, उन सबके नाम हैं। यह भोज के पदार्थों की सूची है।

हेदविग : बस, यही लाये ?

हजलमार : हाँ बेटी, सच कहता हूँ—मुझे याद नहीं रहा, परन्तु 'मेनू' में जो चीजें लिखी हैं, सब बहुत ही बढ़िया थीं। तुम मेज पर बैठ जाओ, तुम्हें सब चीज़ों का स्वाद बताता जाऊँगा। शाबाश-शाबाश ! बड़ी प्यारी बेटी है।

हेदविग : (आँसू पीकर) रहने दीजिये ! (मेज के साथ बैठ जाती है, परन्तु मेनू को नहीं पढ़ती। गीना उसे समझाने के लिए संकेत करती है। हजलमार गीना का संकेत देख लेता है।)

हजलमार : (चहलकदमी करते हुए) मेरा तो दिमाग काम नहीं करता। कोई परिवार के लिए क्या-क्या करे, क्या-क्या सोचता रहे; कितना याद रखे ? कोई जरा-सी बात भूल जाय, घर-भर के मुँह लटक जाते हैं। क्या करें, सब सहना पड़ता है। आदमी का दिमाग भी पत्थर हो जाता है।
(अँगीठी की ओर जाकर पिता के समीप खड़ा हो जाता है।) पिताजी, साँझ को आपने उधर भी देखा था ?

एकदाल : हाँ, क्यों नहीं; देखा था। वह टोकरी में घुस गई है।

हजलमार : क्या टोकरी में घुस गई है ? तो समझिये, यहाँ हिल गई।

एकदाल : हाँ-हाँ, मैंने तुमसे कहा ही था; हिल जायगी पर अभी वहाँ ठीक करना है…

हजलमार : कुछ और बदलना—ठीक करना है ?

एकदाल : हाँ, परन्तु वह बहुत जरूरी है। बहुत ध्यान से करना होगा।

हजलमार : हाँ-हाँ क्यों नहीं, जैसे कहेंगे, हो जायगा। यहाँ सोफ़े पर बैठकर बताइए, क्या करना है।

एकदाल : हाँ बताता हूँ। मैं जरा पाइप साफ कर लूँ। पाइप रुक रहा है—जरा अड़ गया। हूँ ! (अपने कमरे में चला जाता है।)

गीना : (पति की ओर देखकर मुस्कराती है) पाइप साफ करने गये हैं !

हजलमार : करने दो गीना ! जो चाहते हैं, कर लेने दो ! बुढ़ापे में क्या हालत हो गई। इन्हें कुछ तो करने को चाहिए। खैर, जो कहते हैं—कल कर ही डालेंगे।

गीना : कल तुम्हें समय कहाँ मिलेगा ?

हेदविग : (माँ को टोककर) अम्मी, कल समय क्यों नहीं मिलेगा ?

गीना : भूल गए ? उन तस्वीरों पर ब्रुश लगाना है। ग्राहक दो-तीन बार आ चुका है।

हजलमार : हे मेरे भगवान्, वही तस्वीरें ? खैर, उसमें तो समय नहीं लगेगा। कोई नया आर्डर भी है ?

गीना : कहाँ; जो भाग्य में हो। बस दो ग्राहक आयँगे वही जो कल आने के लिए तुमसे समय तय कर गए हैं।

हजलमार : बस, वही दो ! हाँ, तो और क्या होगा ? कोई यत्न ही न करे तो···

गीना : तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ ? जितना बन पड़ता है पत्रों में विज्ञापन भी देती रहती हूँ।

हजलमार : हाँ, तुम तो करती हो—उसका परिणाम भी देख रही हो। मेरा खयाल है, कमरा भी नहीं उठ सका होगा। कोई किरायेदार नहीं आया न ?

गीना : अभी तक तो नहीं।

हजलमार : तो तुम क्या आशा करती हो ? यदि कोई परवाह ही न करे, कुछ यत्न ही न करे···गीना, तुम्हें हिम्मत करनी होगी।

हेदविग : (पिता की ओर बढ़कर) पापा, बँसुरी बजायँगे; ला दूँ ?

हजलमार : नहीं-नहीं, दिल बहलाव के लिए मुझे फुरसत नहीं है। (कमरे में चक्कर काटने लगता है) मेहनत मेहनत ! मेरे भाग्य में तो केवल मेहनत है—कल से देखना ! दिखा दूँगा, मेहनत कैसे की जाती है। जब तक शरीर में दम है, पीछे नहीं हटूँगा।

गीना : क्या कह रहे हो; तुमने तो मेरी बात का उलटा ही मतलब लगा लिया।

हेदविग : पापा, बियर पियेंगे; बोतल ले आऊँ ?

हजलमार : हर्गिज नहीं ! मुझे कुछ नहीं चाहिए। (सहसा कदम रुक जाते हैं) बियर ? क्या कहा तुमने ?

हेदविग : (उत्सुकता से) हाँ पापा, खूब ठण्डी बियर है।

हजलमार : अच्छा बेटी, तुम कहती हो तो ले लूंगा। एक बोतल ले आओ !

गीना : शाबाश हेदविग, जा ले आ ! फिर आराम से बैठेंगे। (हेदविग रसोई की ओर दौड़ती है। हजलमार अँगीठी के सामने हेदविग को रोक लेता है। बेटी के चेहरे को ध्यान से देखकर उसे अपनी ओर खींच लेता है।)

हजलमार : मेरी नन्हीं बिटिया !

हेदविग : (लड़की की आँखें उल्लास से भीग जाती हैं) मेरे पापा बड़े अच्छे हैं !

हजलमार : नहीं-नहीं बेटी, मैं अच्छा नहीं हूँ। मैं उस रईस की दावत में मौज उड़ाता रहा, सब-कुछ अपने पेट में ठूंसता रहा, मुझे किसी दूसरे का जरा भी खयाल नहीं आया—

गीना : (मेज के साथ कुर्सी पर बैठ जाती है)—यह क्या ऊटपटाँग कह रहे हो ?

हजलमार : मैं ठीक कह रहा हूँ। खैर, जो भी हुआ; उस बात को जाने दो। मेरे लिए तुम्हीं सब-कुछ हो !

हेदविग : (बाँहें पिता के गले में डाल देती है) हाय पापा, हम तो पापा को बहुत-बहुत प्यार करते हैं।

हजलमार : हो सकता है मुझे कभी खयाल न भी रहे, कभी कुछ ऐसी बात कह बैठूं तो भी तुम खूब जानती हो कि मेरा दिमाग कितनी चिन्ताओं से बौखलाया रहता है। ओफ-ओफ ! (आँखें पोंछ लेता है) इस समय बियर की जरूरत नहीं। अच्छा बेटी, बाँसुरी ले आ। (हेदविग पुस्तकों की अलमारी में से बाँसुरी उठाकर पिता को दे देती है) शाबाश ! बेटी, यही ठीक है। तुम दोनों और यह मेरी बाँसुरी मुझे और कुछ नहीं चाहिए ! (हेदविग माँ के समीप बैठ जाती है। हजलमार कमरे में चहल-कदमी करने लगता है और फिर अपने-आपको वश में करके बाँसुरी पर धीमे-धीमे एक देहाती नाच की धुन बजाने लगता है। बाँसुरी का स्वर बहुत धीमा रहता है और लय बहुत भावमयी। बहुत थोड़ा-सा ही बजाकर बाँसुरी मुंह से हटा लेता है और बायाँ हाथ गीना की ओर बढ़ाकर बहुत भावुकता से बोल उठता है।) कोई परवाह नहीं है। हम गरीब हैं, कठिनाई से निर्वाह करते हैं परन्तु यह हमारा अपना घर है। सौ बार कहूँगा कि दुनिया में अपने घर से बढ़कर कोई चीज़ नहीं। (हजलमार फिर बाँसुरी बजाने लगता

है। कुछ ही क्षण बाद जीने की ओर के दरवाजे पर थाप सुनाई देती है।)

गीना : (कुर्सी से उठते हुए) जरा सुनो! मेरा खयाल है, दरवाजे पर कोई आया है।

हजलमार : (बाँसुरी एक ओर रखते हुए) हाँ, कोई है तो। (गीना उठकर दरवाजा खोल देती है।)

ग्रेगर्स वर्ले : (दरवाजे के बाहर से बोलता है) क्षमा कीजिये—

गीना : (विस्मय से पीछे हटती हुई) ओह !

ग्रेगर्स : (दरवाजे के बाहर से ही) मिस्टर एकदाल फोटोग्राफ़र क्या यहीं रहते हैं ?

गीना : जी, यहीं रहते हैं।

हजलमार : (दरवाजे की ओर बढ़ जाता है) ग्रेगर्स ! अरे तुम हो? आओ, भीतर आ जाओ !

ग्रेगर्स : (कमरे में आकर) मैंने तो तुमसे कह दिया था, आऊँगा। तुमसे बात करना चाहता हूँ।

हजलमार : पर आज ही……? क्या अतिथियों को छोड़ आए ?

ग्रेगर्स : अतिथियों को छोड़ आया और घर को भी छोड़ आया। (गीना की ओर घूमकर) नमस्ते, आप श्रीमती एकदाल हैं न ? आशा तो नहीं कि आप मुझे पहचान लेंगी !

गीना : जी जरूर पहचान लिया। मि० वर्ले, आपको पहचानने में क्या कठिनाई हो सकती है ?

ग्रेगर्स : हाँ, कठिनाई तो नहीं होनी चाहिए। मेरा चेहरा माँ के चेहरे से काफी मिलता है। उन्हें तो आप खूब जानती थीं।

हजलमार : (विस्मय से) ग्रेगर्स क्या कहा; अपना घर छोड़ आए हो ?

ग्रेगर्स : हाँ, मैंने होटल में कमरा ले लिया है।

हजलमार : पर ऐसा क्यों किया ? अच्छा, आये हो तो ओवरकोट और टोपी तो उतारो और आराम से बैठो।

ग्रेगर्स : धन्यवाद।

[ग्रेगर्स ओवरकोट उतार देता है। उसने दावत के समय पहना बढ़िया सूट बदलकर सलेटी रंग का मामूली सूट पहन लिया है।]

हजलमार : यहाँ सोफ़े पर बैठो, आराम से बैठो, तकल्लुफ़ की जरूरत नहीं।

[ग्रेगर्स सोफ़े पर बैठ जाता है और हजलमार उसके समीप मेज के साथ रखी हुई कुर्सी पर।]

ग्रेगर्स : (कमरे में चारों ओर नज़र दौड़ाकर) हाँ, तो यह है तुम्हारा मकान। क्या अपना काम भी यहीं करते हो ?

हजलमार : यह तो स्टूडियो है, यह सामान देख रहे हो।

गीना : मकान में यही सबसे बड़ा कमरा है इसलिए प्रायः यहाँ ही बैठ जाते हैं।

हजलमार : पहले हमारे पास इससे बड़ा मकान था, परन्तु यहाँ सुविधा अधिक है। देखो न यहाँ कितनी जगह है।

गीना : बरोठे के उधर भी एक कमरा है। उसे उठा देते हैं।

ग्रेगर्स : (हजलमार की ओर देखकर) अहा, क्या इस समय कमरा उठा हुआ है ?

हजलमार : नहीं, अभी तो खाली है। अच्छे किरायेदार आसानी से नहीं मिलते, कुछ यत्न करना पड़ता है। (हेदविग को सम्बोधित करके) हाँ, बीयर है न ? (हेदविग हामी भरकर रसोई में चली जाती है।)

ग्रेगर्स : यह बेटी है ?

हजलमार : हाँ, इसका नाम हेदविग है।

ग्रेगर्स : एक ही बच्चा है ?

हजलमार : हाँ, बस यही है। हम लोगों के लिए यही सब-कुछ है, हमारी सब आशाएँ—(स्वर दबाकर) और इसी के लिए हमें सबसे बड़ी चिन्ता है।

ग्रेगर्स : क्यों क्या बात है ?

हजलमार : डॉक्टर कहते हैं, इसकी नज़र के लिए बहुत अंदेशा है, बच नहीं सकेगी।

ग्रेगर्स : नज़र चली जाएगी ?

हजलमार : अभी तो मामूली ही तकलीफ़ है। अभी कुछ समय तो नज़र रहेगी, परन्तु डाक्टरों ने कह दिया है कि कुछ बरस बाद बच नहीं सकेगी, कोई उपाय नहीं है।

ग्रेगर्स : ओह, यह तो विकट दुर्भाग्य होगा। आखिर कारण क्या बताते हैं ?

हजलमार : (गहरी साँस लेकर) खानदानी असर है, और क्या हो सकता है।

ग्रेगर्स : खानदानी ?

गीना : इसकी दादी की नज़र भी खराब थी।

हजलमार : हाँ, पिताजी बाताते हैं; मुझे तो माँ की कुछ याद नहीं है।

ग्रेगर्स : बहुत प्यारी बच्ची है। इस आशंका से बहुत दुखी रहती होगी बेचारी ?

हजलमार : नहीं, ऐसा तो नहीं। तुम समझ ही सकते हो, हम ऐसी बात उसे कैसे बता सकते हैं। दिल को इतना कड़ा कर लेना कठिन है। अभी उसे ऐसा कोई खयाल नहीं है। बेचारी बहुत भोली और हँसमुख है। दिन-भर चहचहाती-फुदकती रहती है और इसके भाग्य में कैसा अवसाद और अन्धकार आने को है। (आह भर-कर) ग्रेगर्स, इस आशंका से मेरा दिल टुकड़े-टुकड़े हो जाता है।

[हेदविग एक ट्रे में बियर की बोतल और गिलास लेकर आती है और उन चीज़ों को मेज पर रख देती है।]

हजलमार : (बेटी के सिर पर हाथ फेरकर) शाबाश, धन्यवाद नन्हीं! (हेदविग पिता के गले में बाँहें डालकर उसके कान में बात करती है।) नहीं-नहीं, टोस्ट मक्खन नहीं चाहिए। धन्यवाद। हाँ ग्रेगर्स, तुम टोस्ट-मक्खन लोगे? मँगाऊँ?

ग्रेगर्स : (इन्कार से सिर हिलाकर) नहीं, धन्यवाद! मुझे नहीं चाहिए।

हजलमार : (उदास स्वर से) अच्छा नन्हीं, तू कहती है तो फिर, ले ही आ। टोस्ट जरा कुरकुरा हो, मुझे कुरकुरा अच्छा लगता है। मक्खन जरा अच्छी तरह लगा देना। (हेदविग प्रसन्नता से गर्दन हिला-कर हामी भरती है और फिर रसोई में चली जाती है।)

ग्रेगर्स : (भीतर जाती हुई लड़की को ध्यान से देखकर) वैसे तो लड़की खूब अच्छी तन्दुरुस्त है।

गीना : हाँ, भगवान् की कृपा से और सब-कुछ तो ठीक ही है।

ग्रेगर्स : चेहरा-मोहरा बिलकुल आपसे मिलता है। बड़ी होकर तो बिलकुल आप-जैसी लगेगी। क्या उम्र है?

गीना : बस चौदह की है, परसों इसकी वर्षगाँठ का दिन है।

ग्रेगर्स : परन्तु कद खूब अच्छा निकला है।

गीना : हाँ, पिछले साल में काफी बढ़ गई है।

ग्रेगर्स : बच्चों को जल्दी-जल्दी बढ़ते देखकर अपनी आयु का भी खयाल आ जाता है। आप लोग का विवाह हुए कितने बरस हो गए?

गीना : विवाह हुए मैं बताऊँ—पूरे पन्द्रह बरस।

ग्रेगर्स : क्या, पन्द्रह वर्ष!

गीना : (ग्रेगर्स की ओर शंका से देखकर) हाँ, पन्द्रह तो हो गए।

हजलमार : हाँ – हाँ, पन्द्रह तो हो गए; कुछ महीने ऊपर भी। (बात बदल देता है) ग्रेगर्स, वहाँ कारखाने में तो पन्द्रह बरस तुम्हारे लिए युगों की तरह बीते होंगे!

ग्रेगर्स : हाँ, समय बीतते समय तो जरूर भारी लग रहा था परन्तु बीत

गया है तो याद करके अब जान पड़ता है जैसे कुछ था ही नहीं, कुछ पता ही न चला।

[बुढ़ऊ एकदाल स्टूडियो में आ जाते हैं। मुँह में पाइप नहीं है। सिर पर फौजी वर्दी की पुरानी टोपी है। कदम लड़-खड़ा रहे हैं।]

एकदाल : हाँ हजलमार, आओ बैठो; वह बात कर लें—हुँ !···क्या कह रहे थे ?

हजलमार : (पिता की ओर बढ़ कर) पिताजी, देखिये यह कौन आये हैं—मि० ग्रेगर्स वर्ल आये हैं। आपको याद है इनकी ?

[ग्रेगर्स बुढ़ऊ के सम्मान में खड़ा हो जाता है।]

एकदाल : (ग्रेगर्स की ओर ध्यान से देखकर) वर्ल ? तुम्हारा मतलब है, उसका लड़का ? क्यों, इसे मुझसे क्या काम है ?

हजलमार : आपसे कोई काम नहीं है। यह मुझसे मिलने आये हैं।

एकदाल : ओह ! तो फिर मुझसे क्या मतलब है ?

हजलमार : नहीं, कुछ भी नहीं।

एकदाल : (अपनी बाँहें झुलाते हुए) मुझे कोई परवाह नहीं है। तुम जानते हो, मुझे किसी का डर नहीं है लेकिन—

ग्रेगर्स : (बुढ़ऊ की ओर बढ़कर) लेफ्टिनेण्ट एकदाल साहब, मैं आपके लिए होयदाल से सलाम लाया हूँ। वहाँ बहुत दिन रहे हैं। याद होगा, आप खूब शिकार खेलते थे।

एकदाल : मैं शिकार खेलता था ?

ग्रेगर्स : जी हाँ, मैं होयदाल के कारखाने से आ रहा हूँ।

एकदाल : ओह, होयदाल से ! किसी समय वहाँ मेरी बहुत जान-पहचान थी।

ग्रेगर्स : जी हाँ, उन दिनों आपके शिकार की वहाँ बहुत धूम थी।

एकदाल : हाँ, ठीक है तब मेरे शिकार की काफी चर्चा होती थी। तुम मेरी टोपी को देख रहे हो ? मैं अपने घर में हूँ। यहाँ अपनी टोपी पहनने से मुझे कौन रोक सकता है ! टोपी पहनकर मैं सड़क-बाजार में तो जाता नहीं। (हेदविग तश्तरी में टोस्ट-मक्खन लाकर मेज पर रख देती है।)

हजलमार : पिता जी बैठ जाइए। बियर लेंगे ? ग्रेगर्स, तुम लो न !

[बुढ़ऊ मुँह-ही-मुँह में मुनमुनाते हुए और लड़खड़ाते हुए सोफ़े की ओर आ जाते हैं। ग्रेगर्स हजलमार के समीप कुर्सी पर बैठ जाता है। गीना मेज से कुछ परे हटकर बैठ जाती है।

और बखिया करने लगती है। हेदविग पिता के पास खड़ी रहती है।]

ग्रेगर्स : आपको याद है, हजलमार और मैं कभी गर्मी की छुट्टियों में और कभी क्रिसमस की छुट्टी में होयदाल में आपके यहाँ आया करते थे।

एकदाम : तुम आया करते थे? नहीं-नहीं, मुझे तो कुछ याद नहीं। परन्तु उन दिनों मैं शिकार खूब खेलता था। भालू का शिकार भी करता था। नौ भालू मार चुका हूँ।

ग्रेगर्स : (सहानुभूति से बुढ़ऊ की ओर देखते हुए) आजकल तो आप शिकार का अवसर नहीं पाते होंगे।

एकदाल : ओह ! तुम्हें क्या बतायें; शिकार तो अब भी कभी-कभी खेलते ही हैं। हाँ, वैसा शिकार तो नहीं हो सकता; इसमें क्या शक। जंगलों में, जानते ही हो—जंगलों में, जंगलों में—(बीयर की एक घूँट भर लेता है।) जंगलों में तो आजकल खूब रौनक होगी ?

ग्रेगर्स : आजकल वैसी रौनक तो नहीं जैसी आपके समय थी। जंगल बहुत कट गए हैं।

एकदाल : (स्वर दबाकर, मानो आशंका अनुभव कर रहे हों) ऐसा करना गलती है। उसमें खतरा है। उसका परिणाम बुरा होगा। जंगल बदला चुकाये बिना नहीं रहते।

हजलमार : (पिता का गिलास फिर भर देता है) लीजिये पिता जी, थोड़ी और लीजिये।

ग्रेगर्स : आपको तो सदा खुली हवा में रहने का अभ्यास रहा है। चाहरदीवारी से घिरे इन सन्दूकों-जैसे शहरी मकानों में बन्द रहना आपको कैसे सहन हो सकता है ?

एकदाल : (पुत्र की ओर देख, मुस्कराकर) ओह, यह जगह तो ऐसी बुरी नहीं है, क्या बुरी है ?

ग्रेगर्स : परन्तु आपको याद होगा, आपको तो दूसरी तरह के वातावरण, शीतल, ताजी वायु और जंगलों, मैदानों के बीच स्वतन्त्र पशु-पक्षियों के साथ रहने का अभ्यास रहा है।

एकदाल : (मुस्काकर) हजलमार, इसे दिखा दे ?

हजलमार : (कुछ उतावली और परेशानी से) नहीं, नहीं पिताजी, फिर कभी सही।

ग्रेगर्स : क्या दिखाना चाहते हैं मुझे ?

हजलमार : अरे भाई, कुछ नहीं है बस यों ही—फिर कभी देख लेना।

ग्रेगर्स : (बुढ़ऊ को सम्बोधित करके) लेफ्टिनेंट साहब, मैं जल्दी ही

कारखाने में लौट जाऊँगा। यदि आप भी मेरे साथ वहाँ चल सकते तो बहुत अच्छा होता दस्तावेजों की नकल का काम तो आपको वहाँ भी काफ़ी और सुविधा से मिल जायगा। यहाँ आपके लिए दिल-वहलावे और शौक का क्या अवसर है।

एकदाल : (विस्मय से घूरकर) दिल-बहलावे और शौक का क्या अवसर है?

ग्रेगर्स : हाँ, यह ठीक है कि आपकी बेटी है, बाल-बच्चे हैं परन्तु इन लोगों के अपने धन्धे हैं। आप-जैसे आदमी के लिए, जिसे सदा स्वतन्त्र उन्मुक्त जीवन अधिक पसन्द रहा है, वातावरण का प्रबल आकर्षण रहा है।

एकदाल : (मेज पर हाथ मारकर) हृजलमार, दिखा दो इसे!

हृजलमार : हाँ पिताजी, परन्तु इस समय। क्या देख सकेंगे? अँधेरा हो चुका है न।

एकदाल : पागल हो, चाँदनी रात है। (उठकर खड़ा हो जाता है।) मैं कहता हूँ, दिखा दो इसे। हृजलमार, मैं चलता हूँ तुम भी आकर मदद करो।

हेदविग : हाँ पापा, जाइए न!

हृजलमार : (खड़ा हो जाता है) बहुत अच्छा।

ग्रेगर्स : (गीना को सम्बोधित करके) मुझे क्या दिखाना चाहते हैं?

गीना : जी यों ही, कुछ भी नहीं है। आप क्या आशा कर सकते हैं?

[एकदाल और हृजलमार पीछे की दीवार में दरवाजे के पास चले जाते हैं। और दीवार में चले जाने वाले किवाड़ों को धकेलकर खोल देते हैं। हेदविग भी दादा की सहायता करती है। ग्रेगर्स सोफ़े के समीप खड़ा रहता है। गीना बैठी बखिया करती रहती है। खुले दरवाजे में से टेढ़ी-मेढ़ी बरसाती दिखाई देती है। बरसाती के छाजन में जगह-जगह सेंधें दिखाई देती हैं। मकान के निचले भाग से अँगीठियों की दो चिमनियाँ भी उसमें से गुज़रती हैं। छाजन में बनी छोटी खिड़की से चाँदनी छनकर आ रही है और बरसाती में उजले धब्बे दिखाई दे रहे हैं। बरसाती के शेष भाग में अन्धकार की श्यामलता भरी हुई है।]

एकदाल : (ग्रेगर्स की ओर देखकर) आ जाओ, यहाँ आकर देखो।

ग्रेगर्स : (बुढ़ऊ के पास जाकर) जी, यहाँ क्या है; क्या देखूँ?

एकदाल : यहाँ आ जाओ और ध्यान से देखो! हूँ—

हृजलमार : (जरा झिझक कर) यह सब पिता जी का शौक है।

ग्रेगर्स : (दरवाजे में आकर बरसाती में देखते हुए) लेफ्टिनेंट साहब, आपके यहाँ मुर्गियाँ पली हैं ?

एकदाल : हाँ, मुर्गियाँ भी हैं। पंछी इस समय बसेरा ले रहे हैं। कभी दिन में आकर देखना।

हेदविग : हमारे यहाँ…।

एकदाल : शी ! शी ! अभी चुप रहो।

ग्रेगर्स : हाँ, मैं समझ गया; आपके यहाँ कबूतर भी हैं ?

एकदाल : वाह, कबूतर होना कौन विस्मय की बात है। वह देखो, धन्नियों के साथ दड़बे हैं। जानते हो न, कबूतर धरती पर बसेरा नहीं लेता।

ग्रेगर्स : आपके यहाँ मामूली कबूतर तो भला क्या होंगे !

एकदाल : मामूली कबूतर ! अरे वाह। हमारे यहाँ लोटन कबूतर हैं। एक जोड़ा लक्का का है। तुम यहाँ आकर देखो। वहाँ पेटी दिखाई देती है, दीवार के साथ ?

ग्रेगर्स : जी हाँ, उसमें क्या है ?

एकदाल : खरगोश उसी में सोते हैं।

ग्रेगर्स : वाह, आपके यहाँ खरगोश भी हैं ?

एकदाल : क्यों; कुछ शर्त बदते हो ? हजलमार सुनते हो, कहते हैं कि हमारे यहाँ खरगोश भी हैं ? हुँ ! तुम इधर देखो, तुम्हें दिखलाएँ। तुम भी क्या कहोगे ! बेटा जरा सामने से हट जा। तुम यहाँ आ जाओ, यहाँ आओ। यहाँ से देखो। अब देखो। वह टोकरी है न सामने, उसमें घास है न ?

ग्रेगर्स : जी हाँ, देख रहा हूँ। टोकरी में चिड़िया भी है।

एकदाल : हुँ ! चिड़िया !

ग्रेगर्स : चिड़िया ही तो है।

हजलमार : चिड़िया तो है पर कौन चिड़िया है; यह बताओ ?

हेदविग : मामूली चिड़िया नहीं है।

एकदाल : शिः !

ग्रेगर्स : क्या कोई विलायती चिड़िया है ?

एकदाल : नहीं साहब, विलायती चिड़िया नहीं, साहबजादे, मुर्ग़ाबी है !

ग्रेगर्स : ओहो ! क्या सचमुच मुर्ग़ाबी है ?

एकदाल : जी हाँ, आप कह रहे थे—चिड़िया। यह मुर्ग़ाबी है ? असल मुर्ग़ाबी है !

हेदविग : यह मुर्ग़ाबी मेरी है।

ग्रेगर्स : मुर्ग़ाबी है, पर मुर्ग़ाबी ऐसी जगह रह पायगी? यहाँ तो बेचारी परेशान रहती होगी।

एकदाल : जी नहीं, इसके लिए जल का कूंडा है। जब चाहती है कूंडे के पानी में छपछपा लेती है।

हजलमार : हर दूसरे दिन कूंडे में पानी ताज़ा कर देते हैं।

गीना : (हजलमार की ओर देखकर) देखो, दरवाजे से बरफ़ानी हवा कमरे में आ रही है। यहाँ बैठा नहीं जायगा।

एकदाल : हुँ! हुँ! अभी दरवाजा बन्द किये देते हैं। रात के समय जानवरों की नींद में खलल नहीं डालना चाहिए। आओ हेदविग, धक्का दो। (हजलमार और हेदविग किवाड़ों को धकेल देते हैं) तुम्हें फिर किसी दिन अच्छी तरह दिखा देंगे। (बुढ़ऊ अँगीठी के समीप बाहों वाली कुर्सी पर बैठ जाते हैं।) सच मानो, मुर्ग़ाबी बहुत अजीबो-गरीब चिड़िया होती है।

ग्रेगर्स : पर आपने इसे पकड़ कैसे लिया?

एकदाल : हमने नहीं पकड़ा। यह तो शहर के एक सज्जन की मेहरबानी से यहाँ पहुँच गई है।

ग्रेगर्स : (जरा दुविधा से) ऐसा तो नहीं कि यह मेहरबानी शायद मेरे पिताजी की ही हो?

एकदाल : हाँ-हाँ, तुम ठीक समझ गए। उन्होंने ही, तुम्हारे पिताजी ने ही। हुँ!

हजलमार : कमाल किया, ग्रेगर्स तुमने कैसे अनुमान कर लिया?

ग्रेगर्स : तुमने कहा था न कि तुम पर पिताजी के बहुत-से अहसान हैं। मुझे खयाल आया, शायद यह भी उन्हीं —

गीना : परन्तु हमें मुर्ग़ाबी मि० वर्ल से तो नहीं मिली।

एकदाल : गीना, हमें तो मुर्ग़ाबी 'हाकनवर्ल' की मेहरबानी से मिली है। (ग्रेगर्स की ओर देखकर) तुम्हारे पिता नाव में थे। उन्होंने इस पर निशाना किया। जानते ही हो कि तुम्हारे पिता की नजर अच्छी नहीं है। चिड़िया जख्मी होकर रह गई, मरी नहीं।

ग्रेगर्स : ओह, शायद मामूली ही चोट आई है।

हजलमार : हाँ, दो या तीन छर्रे लगे हैं।

हेदविग : इसका डैना टूट गया, उड़ नहीं सकी।

ग्रेगर्स : हाँ समझा, जख्मी होकर गोता लगा गई होगी, तली में जा चिपकी होगी!

एकदाल : (ऊँघते से स्वर में) हाँ-हाँ, और क्या; मुर्ग़ाबी यही तो करती

है। जितना गहरा जा सकती है, चली जाती है और तली में पनियल झाड़-झंखाड़ जो कुछ पाती है उसे चोंच में दाबकर अटकी रह जाती है, फिर ऊपर आती ही नहीं।

ग्रेगर्स : लेकिन लेफ्टिनेंट साहब, आपकी मुर्ग़ाबी तो ऊपर तैर आई !

एकदाल : यह बात नहीं। तुम्हारे पिता का कुत्ता लाजवाब है। कुत्ते ने मुर्ग़ाबी के पीछे गोता लगाया और इसे खींच लाया।

ग्रेगर्स : (हजलमार की ओर देखकर) और फिर मुर्ग़ाबी तुम्हें मिल गई ?

हजलमार : नहीं, ऐसे नहीं, पहले तुम्हारे पिता ने इसे अपने यहाँ रख लिया था। वहाँ इसकी हालत बिगड़ती गई। पैटर्सन ने साहब से कहा, बचेगी नहीं, हुक्म हो तो मार दिया जाय—

एकदाल : (ऊँघते हुए स्वर में) हुँ ! पैटर्सन; अरे वह निरा गधा है।

हजलमार : (स्वर दबाकर) समझे ! इस तरह मुर्ग़ाबी हमारे यहाँ आ गई। पिताजी की पैटर्सन से जान-पहचान है। इन्होंने मुर्ग़ाबी की बाबत सुना और इसे वहाँ से ले आए।

ग्रेगर्स : यहाँ बरसाती में आकर यह मजे में है ?

हजलमार : अब बिलकुल ठीक है, मोटा भी गई है। यहाँ इतने दिन से है, अब हिल गई है, अपना पुराना तरीका भूल गई है। बस, उसीसे बच गई।

ग्रेगर्स : हजलमार, तुम ठीक कह रहे हो। परन्तु इसे पानी और खुला आकाश न देखने देना ! अच्छा मैं चलूँ बहुत देर हो गई है। तुम्हारे पिता जी तो सो गए।

हजलमार : ओह, तुम उनकी चिन्ता मत करो।

ग्रेगर्स : हाँ, एक बात सुनो—तुम कह रहे थे, तुम्हारे पास किराये के लिए कमरा है। तुम्हें उसकी जरूरत नहीं है ?

हजलमार : हाँ, क्यों पूछ रहे हो ? तुम किसी को दिलाना चाहते हो ?

ग्रेगर्स : जगह तो मुझे भी चाहिए।

हजलमार : तुम्हें ?

गीना : क्या, भाई साहब खुद अपने लिए कमरा चाहिए !

ग्रेगर्स : मुझे मिल सकता है कमरा ? अगर मिल जाय तो मैं कल प्रातः ही यहाँ आ जाऊँ।

हजलमार : क्यों नहीं, बहुत शौक से—

गीना : नहीं; कमरा जरा छोटा भी है और उसमें प्रकाश काफी नहीं है और—

ग्रेगर्स : आप उसकी परवाह न कीजिये।

हजलमार : मेरे खयाल में कमरा तो बहुत अच्छा है, सब सुविधाएँ हैं।

गीना : परन्तु उसके नीचे के कमरे में नीचे के तल्ले में जो विचित्र लोग रहते हैं···

ग्रेगर्स : कौन लोग हैं वे ?

गीना : एक तो इधर-उधर ट्यूशनें पढ़ाकर गुजारा चलाता था···

हजलमार : मिस्टर मौलविक··उसने तो अब डिगरी ले ली है···

गीना : दूसरे का नाम रेलिंग है। वह डॉक्टर है।

ग्रेगर्स : रेलिंग ? उसे तो शायद मैं जानता हूँ। मेरा खयाल है, वह होयदाल में ही प्रैक्टिस करता था।

गीना : दोनों एक ही जैसे 'जघाई-मघाई' हैं। साँझ हुई कि हुड़दंगबाजी में चल दिए। काफी रात गये लौटते हैं, कभी तो ऐसी हालत में···

ग्रेगर्स : कोई बात नहीं, गुज़ारा हो जायगा। मेरा खयाल है, मैं भी मुर्ग़ाबी की तरह नयी जगह में रम जाऊँगा।

गीना : क्या जल्दी है, कल बात कर लेंगे।

ग्रेगर्स : (गीना को सम्बोधित करके) लगता है, आप मुझे अपने मकान में जगह नहीं देना चाहतीं।

गीना : हाय राम ! यह आपने कैसे समझ लिया ?

हजलमार : सचमुच, गीना तुम कैसी बातें कर रही हो ? (ग्रेगर्स की ओर देखकर) तुम बताओ, अभी कुछ दिन शहर में ही रहना चाहते हो ?

ग्रेगर्स : (ओवरकोट पहनते हुए) हाँ, अब मेरा विचार शहर में ही रहने का है।

हजलमार : परन्तु अपने घर में पिता जी के साथ नहीं रहोगे ! क्यों, आखिर क्या करने का विचार है ?

ग्रेगर्स : ओह, यही निश्चय कर लिया होता तो फिर कठिनाई ही क्या थी। परन्तु अपने दुर्भाग्य को क्या करूँ ! मेरा जन्म उस परिवार में हुआ है। उस सम्बन्ध से बड़ा दुर्भाग्य क्या हो सकता है !

हजलमार : मुझे तो ऐसी कोई बात नहीं दिखाई देती।

ग्रेगर्स : (सिहरकर) यदि इस परिवार से सम्बन्धित, मेरे स्थान पर कोई दूसरा व्यक्ति होता तो मैं कभी उसका मुँह न देखता। दुर्भाग्य से इस परिवार में जन्म लेकर, इस परिवार का नाम पाकर···

हजलमार : (हँसकर टोक देता है) हा-हा-हा ! यह बताओ, तुम ग्रेगर्स वर्ल

नहीं कहलाना चाहते तो क्या बन जाना चाहते हो ?

ग्रेगर्स : मेरे बस में होता, मैं अपने-आपको बदल सकता तो मैं और कुछ सही शिकारी कुत्ता बनकर भी सन्तुष्ट रहता ।

गीना : कुत्ता ?

हेदविग : (झिझक से) हाय नहीं !

ग्रेगर्स : हाँ, खूब तेज शिकारी कुत्ता बन जाता और गोता लगाकर मुर्ग़ाबियों को जल के नीचे—तली से पकड़ लाता । मुर्ग़ाबी गोता लगाकर तली की कीचड़ में उगे झाड़-झंखाड़ को चोंच में दबाकर ये डुबकी लगाये रहती है । मैं शिकारी कुत्ता बनकर उसे पकड़ लाता ।

हजलमार : ग्रेगर्स, तुम यह क्या कह रहे हो ?…मैं तो तुम्हारी बात का कुछ मतलब नहीं समझा ।

ग्रेगर्स : हाँ, नहीं समझोगे । मैं स्वयं जानता हूँ, मेरी बात का मतलब बहुत अच्छा भी नहीं है…अच्छा तो कल प्रातः मैं उस कमरे में आ जाऊँगा । (गीना की ओर देखकर) मेरे कारण आपको कोई परेशानी नहीं होगी । अपना सब काम मैं स्वयं कर लेता हूँ । (हजलमार को सम्बोधित करके) अच्छा, शेष बातचीत कल होगी, नमस्ते ! (गीना की ओर सिर झुकाता है और हेदविग की ओर भी) नमस्ते ।

गीना : नमस्ते ।

हेदविग : नमस्ते ।

हजलमार : (एक मोमबत्ती जलाते हुए) जरा ठहरो जीने में अँधेरा होगा, रोशनी कर दूँ । (हजलमार और ग्रेगर्स जीने की ओर के दरवाजे से चले जाते हैं ।)

गीना : (हाथ की बखिला गोदी में रखकर शून्य में देखती हुई) क्या सनक है; कुत्ता बनने की कल्पना !

हेदविग : नहीं, यह बात नहीं । अम्मी मैं बताऊँ, वास्तव में उनका कुछ और ही मतलब था ।

गीना : और क्या मतलब होगा ?

हेदविग : यह तो नहीं मालूम अम्मी, परन्तु मुझे लगा कि वह अजीब बात कर रहे थे । कह तो कुछ रहे थे, परन्तु लगता था—मतलब कुछ दूसरा ही था ।

गीना : तुझे ऐसा लगा ? हाँ कुछ निराला ही ढंग है ।

हजलमार : (लौटकर) जीने में लैम्प अभी तक जल रहा था (मोमबत्ती को

बुझाकर एक ओर रख देता है) खैर, अब तो थोड़ा-बहुत खाने को मिल ही जायगा। (मक्खन-रोटी खा लेंगे) अच्छा गीना, मेरी बात सुनो—यदि जरा समझदारी से काम लिया जाय…

गीना : क्या मतलब, कैसी समझदारी से काम लिया जाय ?

हजलमार : हाँ-हाँ, देखो—भाग्य से इतना तो काम बना कि आखिर कमरा उठ रहा है और किरायेदार भी भला…ग्रेगर्स तो अपना पुराना मित्र है।

गीना : अच्छा है। मैं क्या कहूँ, यह मामला मेरी समझ में तो नहीं आता।

हेदविग : नहीं अम्मी, यह बहुत अच्छा रहेगा।

हजलमार : तुम्हें भी समझ पाना बहुत कठिन है। अभी दस मिनट पहले तुम किरायेदार न मिलने से परेशान थीं और अब कमरा देना नहीं चाहतीं।

गीना : हाय, मैंने कब कहा कि कमरा उठाना नहीं चाहतीं परन्तु उसे कैसे रख लें! कोई दूसरा आदमी नहीं हो सकता ? तुम यह नहीं सोचते कि उसके पिता क्या कहेंगे ?

हजलमार : वर्ले साहब, हमारे काम में उनका क्या दखल ?

गीना : स्पष्ट तो दिखाई दे रहा है कि पिता-पुत्र में फिर झगड़ा हो गया है और लड़का पिता और घर को छोड़ देना चाहता है। उनमें बनती तो है नहीं।

हजलमार : अच्छा मान लो—यही बात है तो फिर…

गीना : ऐसी अवस्था में उसके पिता को सन्देह नहीं हो सकता कि तुमने हो उसे भड़का दिया होगा ?

हजलमार : वे सन्देह करना चाहते हैं तो बेशक करें ! मैं मानता हूँ—वर्ले साहब ने मेरे लिए बहुत-कुछ किया है; मुझ पर उनके बहुत अहसान हैं, परन्तु इसका यह मतलब नहीं हो सकता कि मैं अपने हर एक काम में उनसे अनुमति लेता फिरूँ।

गीना : परन्तु तुम पिता जी का भी खयाल करो। उन्हें तो नुकसान पहुँच सकता है। दफ़्तर से उन्हें थोड़ा-बहुत काम मिल जाता है सो नहीं मिल सकेगा। जो कुछ पैसे बन जाते हैं वह भी नहीं बनेंगे।

हजलमार : मेरा तो मन चाहता है…मैं तो बल्कि चाहता हूँ कि वह झगड़ा समाप्त हो जाय। तुम नहीं जानतीं कि वह लोग पिता जी से कैसा दुर्व्यवहार करते हैं। मेरे-जैसे आदमी के लिए क्या यह अपमानजनक नहीं है ? मैं तो जानता ही हूँ कि यह अब नहीं चलेगा। (रोटी का दूसरा टुकड़ा लेकर मक्खन लगा लेता है)

मेरे जीवन का एक लक्ष्य है और मुझे वह लक्ष्य पूरा करना है।

हेदविग : हाँ पापा, उसे जरूर कीजिये।

हजलमार : (स्वर दबाकर) मैं कहता हूँ, अपने लक्ष्य को जरूर पूरा करूँगा। समय आयगा, जब…जब…इसलिए अच्छा है कि कमरा उठ जाय। यह हो गया तो मैं अपने पाँव पर खड़ा हो सकूँगा। जिस आदमी के सामने जीवन में कोई लक्ष्य हो उसके लिए पर-निर्भर होना बहुत बुरा है। (बुढ़ऊ की कुर्सी के समीप जा खड़ा होता है और बहुत द्रवित स्वर में कहता है) मेरे अभागे पिता, विश्वास रखो! तुम्हारा बेटा तुम्हारे बुढ़ापे का बोझ सम्हाल सकता है, तुम्हें सहारा दे सकता है। कम-से-कम इतना सामर्थ्य उसमें है। एक दिन आयगा कि दुनिया देखेगी…गीना की ओर देखकर क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं है?

गीना : (कुर्सी से उठते हुए) क्यों नहीं, मुझे तो पूरा विश्वास है। हाँ, परन्तु पहले (बुढ़ऊ की ओर संकेत है) इन्हें उठाकर बिस्तर पर ले चलें।

हजलमार : हाँ-हाँ, ठीक है। आओ, जरा सहारा दो।

[दोनों मिलकर सावधानी से सोते हुए बुढ़ऊ को उठाने का यत्न करते हैं।]

तीसरा अंक

[दृश्य : दूसरे दिन प्रातःकाल। हजलमार एकदाल का स्टूडियो। स्टूडियो की ढलवाँ छत में बड़ी खिड़की पर से नीला परदा हटा दिया गया है। खिड़की से प्रातः की धूप आ रही है। हजलमार मेज पर बैठा हुआ एक फोटोग्राफ़ को ब्रुश से सुधारने में व्यस्त है। उसके सामने कुछ और भी फोटोग्राफ़ रखे हुए हैं। कुछ पल बाद जीने के दरवाजे से गीना प्रवेश करती है। गीना बाजार से लौटी है। उसके सिर पर एक टोपी और कंधों पर छोटा चोगा है। वह हाथ में बाजार करने की टोकरी लटकाये है। टोकरी ढकी हुई है।]

हजलमार : गीना, लौट भी आई ?

गीना : हाँ, आज तो मुझे बहुत काम है।

[टोकरी एक कुर्सी पर रखकर टोपी और चोगा उतारने लगती है।]

हजलमार : ग्रेगर्स के यहाँ जरा नज़र डाल आई हो तुम, ठीक-ठाक है न ?

गीना : हाँ, गई थी। अच्छा तमाशा कर दिया है उसने। आते ही कमरे में सब गड़बड़ कर दिया है।

हजलमार : क्यों, क्या कर दिया ?

गीना : तुम्हारे सामने ही उसने कहा था कि अपना सब काम स्वयं ही करेगा। आते ही कमरा गरम करने के लिए अँगीठी सुलगाने लगा और तमाशा यह किया कि चिमनी मूंद दी। कमरे में धुआँ भर गया। ओफ़···दम घुटने लगा।

हजलमार : मेरी कसम !

गीना : उस पर और तमाशा किया। धुएँ से दम घुटने लगा तो अँगीठी बुझाने चला। बालटी उठाकर अँगीठी में उँड़ेल दी। कमरे के पूरे फर्श पर राख और कोयलों का कीचड़ फैल गया।

हजलमार : क्या मुसीबत है।

गीना : मैंने चौकीदारनी को बुलाकर फर्श धो देने को कह दिया है। फर्श दोपहर बाद तक सूखेगा तो कमरा बैठने लायक होगा। सूअर कहीं का।

हजलमार : अब इस समय कर क्या रहा है ?

गीना : कह रहा था। जरा घूम आने के लिए बाहर जा रहा हूँ।

हजलमार : तुम बाजार गई थीं तो मैं भी उसे देखने चला गया था।

गीना : हाँ, कह रहा था—तुमने दोपहर में उसे यहाँ खाने को कह दिया है।

हजलमार : अरे हाँ ऐसे ही थोड़ा-बहुत, कुछ कर लेंगे। जानती हो, आज उसका पहला दिन है···इतना तो करना ही पड़ता है। तुम्हारे पास घर में कुछ-न-कुछ होगा ही।

गीना : अभी जाकर देखती हूँ, क्या कुछ हो सकता है।

हजलमार : देखो, कहीं बहुत ही कम न बना लेना। मेरा खयाल है, हो सकता है—रैलिंग और मौलविक भी आ जायँ। रैलिंग जीने में मिल गया था···तो फिर—जानती हो, ऐसे समय कहना ही पड़ जाता है······

गीना : वह दोनों भी यहाँ खायँगे ?

हजलमार : भगवान् भला करे ··क्या फ़र्क पड़ता है, जहाँ दो के लिए हो वहाँ तीन और चार में कौन बड़ा फ़र्क पड़ जाता है।

[बुढ़ऊ एकदाल अपने कमरे का किवाड़ खोलकर स्टूडियो में झाँकते हैं।]

एकदाल : हजलमार, जरा सुनना···(गीना को देखकर) ओह।

गीना : पिता जी, आपको कुछ चाहिए ?

एकदाल : नहीं-नहीं···कोई बात नहीं है। हुँ ! (अपने कमरे में लौट जाते हैं।)

गीना : (टोकरी उठाते हुए हजलमार की ओर देखती है।) जरा नज़र रखना, ये बाहर न चले जायँ।

हजलमार : हाँ, मैं ध्यान रखूँगा। गीना सुनो—मेरे खयाल में हैरिंग (मछली) का थोड़ा-सा सलाद बना लो तो मजा आ जाय। मुझे ऐसा लगा कि कल रात रैलिंग और मौलविक उस सलाद पर बहुत झूम रहे थे।

गीना : हैरिंग के सलाद में तो कुछ समय लगता है, वह लोग जल्दी ही आ गए तो···

हजलमार : नहीं, जल्दी क्यों आ जायँगे, तुम आराम से बनाओ।

गीना : अच्छी बात, हो जायगा। तब तक तुम भी कुछ काम निबटा डालो।

हजलमार : देख नहीं रहे हो, सुबह से लगा हुआ हूँ ? जितना हो सकता है ? किये जा रहा हूँ।

गीना : हाँ, यह तो तुम निबटा ही डालोगे।

[गीना टोकरी लेकर रसोई में चली जाती है। हजलमार कुछ अनिच्छा से फिर काम करने लगता है।]

एकदाल : (बुढ़ऊ किवाड़ खोलकर फिर झाँकते हैं। स्टूडियो में चारों ओर नज़र दौड़ाकर दबे स्वर में पूछते हैं।) तुम्हारा काम पूरा हो गया ?

हजलमार : मैं इन चित्रों को बना रहा हूँ।

एकदाल : अच्छा-अच्छा कोई बात नहीं। तुम्हें अभी फ़ुरसत नहीं है तो रहने दो···हुँ।

[बुढ़ऊ किवाड़ खुला छोड़कर लौट जाते हैं। हजलमार कुछ पल मौन भाव से काम में लगा रहता है और फिर ब्रुश मेज पर रखकर बुढ़ऊ के दरवाजे की ओर बढ़ जाता है।]

हजलमार : क्या कर रहे हैं पिताजी ?

एकदाल : (भीतर से बुढ़ऊ का खिन्न स्वर सुनाई देता है।) तुम्हें फ़ुरसत नहीं है तो मुझे भी फ़ुरसत नहीं।

हजलमार : बहुत अच्छा ठीक है। (हजलमार फिर काम आरम्भ कर देता है। कुछ पल में बुढ़ऊ फिर कमरे में आ जाते हैं।)

एकदाल : हुँ ! हजलमार सुनो, मैं तो ऐसे ही बैठा था।

हजलमार : मैंने तो समझा था कि आप लिख रहे होंगे।

एकदाल : भाड़ में जाय उनका काम। दिन-दो दिन में उनका क्या बिगड़ जाता है, कौन उनकी जान निकल जायगी।

हजलमार : कुछ नहीं, क्या हो जायगा; आप उनके नौकर तो नहीं हैं।

एकदाल : हाँ, और मैंने तुमसे वह बात कही थी न, वह करनी है···

हजलमार : हाँ याद है, उधर जायँगे ? मैं किवाड़ खोल दूं ?

एकदाल : सोचता हूँ, कर ही न डालें।

हजलमार : (उठकर खड़ा हो जाता है।) अच्छा है काम निपट जाय।

एकदाल : हाँ और क्या, कल सुबह तक तैयार हो ही जाना चाहिए। यही हम लोगों ने तय किया था।

हजलमार : जी हाँ, कल तक हो जाना चाहिए।

[बुढ़ऊ और हजलमार एक-एक किवाड़ को दीवार में धकेल देते हैं। बरसाती की छत की खिड़कियों से धूप आती दिखाई देती है। कुछ कबूतर इधर-उधर उड़ रहे हैं और कुछ धन्नियों पर बैठे 'गुटर-गूँ-गुटर-गूँ' कर रहे हैं। कभी-कभी सैंधों में से मुर्गियों की 'कुड़कुड़ाहट' भी सुनाई दे जाती है।]

हजलमार : लीजिये पिता जी, खोल दिया। आप शुरू कर सकते हैं।

एकदाल : (बरसाती में कदम रखते हुए) क्या तुम नहीं आ रहे हो ?

हजलमार : मैं···क्या बताऊँ, मेरा खयाल था···(रसोई के दरवाजे पर खड़ी गीना की ओर देखता है।) मुझे अभी फुरसत नहीं है, मुझे काम पूरा करना है। परन्तु इसे मैं ढंग से लगाये देता हूँ।

[वह एक डोरी खींचकर बरसाती में एक परदा गिरा देता है। परदे के ऊपरी भाग में मछुवे का जाल है और नीचे के भाग में नाव के पुराने पाल के कपड़े का टुकड़ा लगा हुआ है। परदा गिरा देने पर बरसाती का फर्श दिखाई नहीं देता। लीजिये हो गया। अब मैं कुछ देर बैठकर काम कर डालूँ।]

गीना : बुढ़ऊ फिर वहाँ जाकर उलट-पटल कर रहे हैं ?

हजलमार : तो फिर क्या चाहती हो, बस···हौली में जाकर शराब पीने लगें ? (कुर्सी पर बैठकर) क्यों, कुछ कहना है ? क्या देख रही हो···

गीना : कुछ नहीं, यह बताओ कि भोजन यहाँ मेज पर ही लगाना होगा ?

हजलमार : हाँ और क्या, इस समय कौन बड़े फोटो खिचाने वाले आ रहे हैं कि यहाँ जगह न होगी।

गीना : हाँ, ऐसी क्या आशा है। बस, वही जोड़ा आने वाला है, जिसकी सगाई हुई है। एक साथ फोटो बनवाना चाहते हैं।

हजलमार : उन्हें आज ही ऐसी कौन-सी मुसीबत आ गई है, फिर किसी दिन नहीं आ सकते।

गीना : उसमें क्या कठिनाई है, उन लोगों को दोपहर बाद आने के लिए कहा है। तुम उस समय सो रहे होगे।

हजलमार : यह बहुत अच्छा किया। हाँ, भोजन यहाँ बैठकर ही कर लेंगे।

गीना : बस ठीक है। अभी से मेज़ लगाने की क्या आवश्यकता है। काफी समय है। तुम काम कर लो।

हजलमार : तुम्हें दिखाई नहीं देता, मुझे तो जब भी मेज़ पर काम कर सकने का जरा भी समय मिलता है, कभी चूकता नहीं हूँ।

गीना : काम हो जाय तो अच्छा है, तुम्हें फुरसत हो जायगी। (रसोई की ओर जाते हुए ठिठक जाती है)

एकदाल : (बरसाती में जाल के परदे के पीछे खड़े होकर) हजलमार !

हजलमार : जी, क्या है ?

एकदाल : क्या बताऊँ, पानी का कूंडा तो हटाना ही पड़ेगा।

हजलमार : जी हाँ, यह तो मैंने पहले ही कहा था।

एकदाल : उँहूँ-उहूँ ! (बुढ़ऊ दरवाजे से परे हट जाते हैं।)

[हजलमार पल-भर सिर झुकाये काम करता रहता है। उसकी आँखें बरसाती की ओर उठ जाती हैं। वह कुर्सी से उठने को होता है कि रसोई से हेदविग आ जाती है। लड़की को देखकर हजलमार फिर कुर्सी पर बैठ जाता है।]

हजलमार : क्यों, क्या है ?

हेदविग : कुछ नहीं, ऐसे ही। बस, आपके पास आ गई।

हजलमार : (जरा झिझककर) क्यों, यहाँ देखने को क्या है ? क्या माँ ने चौकसी के लिए भेजा है ?

हेदविग : नहीं तो, बिलकुल नहीं।

हजलमार : तुम्हारी अम्मी रसोई में क्या कर रही हैं ?

हेदविग : अम्मी हैरिंग का सलाद बना रही हैं। (मेज के और अधिक समीप होकर) पापा मुझे बताइये, मैं भी कुछ करूँ।

हजलमार : नहीं-नहीं, काम मुझे ही करना चाहिए। सब काम मुझे ही करना चाहिए। जब तक मेरे शरीर में शक्ति है, मैं करता रहूँगा। मुझे सहायता की क्या जरूरत हो सकती है। बस, मेरे हाथ-पाँव चलते रहें, मैं सब कर लूँगा।

हेदविग : पापा क्या कह रहे हैं, कैसी उलटी बातें कर रहे हैं ?

[लड़की कमरे का एक चक्कर लगाकर बरसाती की ओर दरवाजे में खड़ी होकर उधर देखती है।]

हजलमार : पिता जी क्या कर रहे हैं वहाँ ?

हेदविग : लगता है, जल के कूंड़े तक नया रास्ता बना रहे हैं।

हजलमार : अकेले उनसे नहीं बन पाएगा। यह भी क्या मुसीबत है कि मुझे बैठकर यह सब भी करना ही होगा और···

हेदविग : (पिता के पास आ जाती है।) पापा, ब्रुश मुझे दे दीजिए। यह तो मैं भी कर लेती हूँ, कर लेती हूँ न ?

हजलमार : व्यर्थ की बातें कर रही हो, तुम्हारी आँखें दर्द करने लगेंगी।

हेदविग : आँखें दर्द नहीं करेंगी। ब्रुश मुझे दीजिए।

हजलमार : (खड़ा हो जाता है।) अच्छा, मुझे मिनट-दो मिनट से ज्यादा नहीं लगेंगे।

हेदविग : उहूँ ! इतने से काम से आँखों को क्या हो जाएगा ? (पिता से ब्रुश ले लेती है) अच्छा तो (मेज पर बैठ जाती है।) यह देखिये, मैं इस फोटो की तरह ही बना दूंगी।

हजलमार : पर आँखों को थकाना नहीं, सुनती हो न ! देखो, मैं नहीं कह रहा

हूँ। तुम स्वयं ही काम कर रही हो, जानती हो न।

हेदविग : (काम में ध्यान लगाकर।) हाँ-हाँ जानती हूँ।

हजलमार : शाबाश, बड़ी होशियार बेटी है ! मैं अभी आया, मिनट-दो मिनट में।

[वह झुककर जाल के नीचे से बरसाती में चला जाता है। हेदविग तन्मयता से काम करती रहती है। हजलमार और बुढ़ऊ की बातचीत सुनाई देती है।]

हजलमार : (जाल की ओर बढ़कर) हेदविग, मुझे जरा, चिमटी दे देना, अल्मारी में होगी। छैनी भी दे देना (घूमकर बरसाती की ओर देखता है।) पिता जी ठहरिये, मैं बताता हूँ। मेरा मतलब है ·· (हेदविग औज़ार लाकर पिता को दे देती है) शाबाश बेटी ! देखा न तूने, अच्छा ही हुआ मैं आ गया।

[बरसाती में चला जाता है। बरसाती से ठोक-पीट और बातचीत की आहट सुनाई देती है। हेदविग खड़ी रहकर पिता की ओर देखती रहती है। पल-भर बाद जीने के दरवाजे पर खटका सुनाई देता है। हेदविग खटके की ओर ध्यान नहीं देती।]

ग्रेगर्स : (जीने के दरवाजे से भीतर आकर पल-भर मौन खड़ा रहता है। वह टोपी और ओवरकोट नहीं पहने है। जरा खाँसता है।) ऊँह-ऊँह।

हेदविग : (पलटकर देखती है) नमस्ते ! आइए, आइए !

ग्रेगर्स : धन्यवाद ! (बरसाती में झाँकता है) क्या भीतर काम लगा है, बढ़ई काम कर रहा है ?

हेदविग : नहीं-नहीं, पापा और पिता जी हैं। आप बैठिये मैं उन्हें बुलाती हूँ।

ग्रेगर्स : नहीं-नहीं कोई आवश्यकता नहीं, उन्हें काम कर लेने दो। (सोफे पर बैठ जाता है।)

हेदविग : यहाँ इतना सामान फैला हुआ है, अच्छा नहीं लगता है। (मेज पर से फोटोग्राफ समेटने लगती है।)

ग्रेगर्स : रहने दो, कोई बात नहीं। क्या इन चित्रों को पूरा करना है ?

हेदविग : जी हाँ, थोड़ा-सा ही काम है। मैं पिता जी के साथ करवा रही हूँ।

ग्रेगर्स : तुम अपना काम करो, मैं विघ्न नहीं डालना चाहता।

हेदविग : नहीं, विघ्न क्या है।

[फिर ब्रुश लेकर काम में ध्यान लगा लेती है। ग्रेगर्स मौन लड़की की ओर ध्यान से देखता रहता है।)

ग्रेगर्स : मुर्ग़ाबी रात खूब अच्छी तरह से रही ?

हेदविग : जी हाँ, धन्यवाद ! मेरा खयाल है, खूब अच्छी तरह से रही।

ग्रेगर्स : (बरसाती की ओर देखकर) अब दिन में तो यह जगह बिलकुल दूसरी ही लग रही है। रात चाँदनी में इतना स्पष्ट नहीं दिखाई दे रहा था।

हेदविग : जी हाँ, कभी कैसी दिखाई देती है, और कभी बिलकुल दूसरी तरह की। प्रातः तो ऐसी ही लगती है, सन्ध्या समय बिलकुल दूसरी तरह की। वर्षा के समय देखिये तो बिलकुल अनुमान नहीं हो सकेगा कि धूप में कैसी लगती होगी।

ग्रेगर्स : अच्छा, तुमने यह सब ध्यान से देखा है ?

हेदविग : जी हाँ, मैं तो देखती ही रहती हूँ।

ग्रेगर्स : तुम भी मुर्ग़ाबी की देख-भाल करती हो ? तुम्हें भी मुर्ग़ाबी अच्छी लगती है ?

हेदविग : जी हाँ, जब मैं उसके पास जाती हूँ तो प्यार कर लेती है।

ग्रेगर्स : परन्तु तुम्हें कम ही अवसर मिलता होगा। तुम स्कूल भी तो जाती होगी ?

हेदविग : जी नहीं, अब मैं स्कूल नहीं जाती। पिताजी कहते हैं : पढ़ने से मेरी नजर बिगड़ जाने की आशंका है।

ग्रेगर्स : यह बात है, तो फिर वह स्वयं तुम्हें पढ़कर सुनाते होंगे।

हेदविग : हाँ, उन्होंने कई बार कहा है कि पढ़कर सुनाएँगे परन्तु उन्हें अभी समय नहीं मिलता।

ग्रेगर्स : जो कोई और नहीं है जो तुम्हारी सहायता कर सके ?

हेदविग : जी हाँ, मि० मौलविक हैं परन्तु वह तो सदा ही···जरा ऐसे ही रहते हैं···क्या कहते हैं···

ग्रेगर्स : तुम्हारा मतलब है, ठीक से ध्यान नहीं दे सकते।

हेदविग : जी हाँ, यही मतलब है।

ग्रेगर्स : मैं समझता हूँ, तब तो तुम्हें खूब फुरसत होगी और मुझे लगता है कि यहाँ तुम लोगों की अपनी अलग ही दुनिया है, है न ?

हेदविग : जी हाँ, ऐसा ही है हमारे यहाँ बहुत-सी विचित्र-विचित्र वस्तुएँ हैं।

ग्रेगर्स : अच्छा, ऐसी बात है ?

हेदविग : जी हाँ, बड़ी-बड़ी अलमारियों में खूब पुस्तकें भरी हुई हैं। बहुत-सी पुस्तकों में चित्र भी हैं।

ग्रेगर्स : यह बात है ?

हेदविग : एक पुरानी खूब बड़ी मेज है। उसमें बहुत-से खाने और दराजें हैं। एक बहुत बड़ी घड़ी है। उसमें घण्टे बजते हैं तो अंक दिखाई दे जाते हैं—कितना बजा है परन्तु घड़ी बन्द हो गई है।

ग्रेगर्स : घड़ी में समय ठहर गया है। इन चीज़ों के साथ मुर्ग़ाबी भी तो है।

हेदविग : जी हाँ, चित्र बनाने के रंगों का एक बड़ा बक्स भी है। और भी कई वस्तुएँ हैं, बहुत-सी पुस्तकें हैं।

ग्रेगर्स : पुस्तकें पढ़ना तुम्हें बहुत अच्छा लगता है ?

हेदविग : जी हाँ, पढ़ना मुझे बहुत अच्छा लगता है। परन्तु बहुत-सी पुस्तकें अँग्रेजी में हैं, अंग्रेजी मैं नहीं जानती। उन पुस्तकों के चित्र देख लेती हूँ। एक बहुत बड़ी पुस्तक है। उसका नाम है 'लन्दन का इतिहास'। हैरीसन ने लिखी है। सौ वर्ष पुरानी पुस्तक है। उसमें खूब चित्र हैं। पुस्तक के आरम्भ में 'मृत्यु' का चित्र है। उस चित्र में एक लड़की है। उसके हाथ में 'रेत की घड़ी' है। वह चित्र मुझे अच्छा नहीं लगता। उसमें और भी चित्र हैं—महलों के, गिरजों के, बाजारों के, और समुद्र में चलते हुए बड़े-बड़े जहाजों के।

ग्रेगर्स : पर यह बताओ, यह सब विचित्र वस्तुएँ तुम लोगों के यहाँ कहाँ से आईं ?

हेदविग : जी, पहले यहाँ एक बूढ़ा, जहाज का कप्तान रहता था। वह बहुत-सी चीजें घर लाता था। लोग उसे हॉलैण्ड का 'उड़ाका' कहते थे। जाने ऐसा क्यों कहते थे, वह हालैण्ड का तो नहीं था।

ग्रेगर्स : अच्छा, वह हालैण्ड का नहीं था।

हेदविग : नहीं जी। फिर एक दिन वह नहीं लौटा, फिर कभी लौटा ही नहीं। उसकी सब चीजें यहीं हैं।

ग्रेगर्स : अच्छा यह बताओ, तुम यहाँ घर में बैठकर बहुत-सी वस्तुओं के चित्र देखती हो, तुम जिन वस्तुओं के चित्र देखती हो, उन्हें संसार में जाकर स्वयं देखने की इच्छा नहीं होती ?

हेदविग : नहीं, मैं कहीं नहीं जाना चाहती। अपने घर में ही रहूँगी। अम्मी और पापा की सहायता करूँगी।

ग्रेगर्स : फोटो बनाने में ?

हेदविग : नहीं, केवल फोटो नहीं। और भी काम करूँगी। मेरा मन बहुत चाहता है कि जैसे चित्र अँग्रेजी की पुस्तकों में हैं, वैसे चित्र बनाना सीख लूँ।

ग्रेगर्स : अच्छा, तुमने पापा को अपनी इच्छा जताई, वह क्या कहते हैं ?

हेदविग : पापा यह नहीं चाहते। मालूम नहीं उन्हें तो यह अच्छा नहीं लगता। देखिये तो, बड़ी विचित्र बातें करते हैं। मुझे टोकरी बनाना सीखने के लिए और चटाई बुनना सीखने के लिए कहते हैं। क्या फिजूल के काम हैं। मुझे तो उनसे कोई लाभ नहीं दिखाई देता।

ग्रेगर्स : हाँ, मुझे भी कोई लाभ नहीं जान पड़ता।

हेदविग : परन्तु पापा की बात मान लेने से एक लाभ हो सकता था। यदि मैं टोकरी बनाना सीख लेती तो मुर्ग़ाबी के लिए नई टोकरी अपने आप बना लेती।

ग्रेगर्स : हाँ, यह तुमने ठीक कहा ! तुम चाहती हो कि मुर्ग़ाबी सुखी रहे, ठीक है न ?

हेदविग : जी हाँ, मुर्ग़ाबी मेरी है।

ग्रेगर्स : हाँ, मुझे मालूम है।

हेदविग : मुर्ग़ाबी है तो मेरी ही, परन्तु पापा और पिताजी चाहते हैं तो उनको भी ले लेने देती हूँ।

ग्रेगर्स : अच्छा यह बात है। क्या वह भी मुर्ग़ाबी को बहुत प्यार करते हैं ?

हेदविग : वह उसकी देख-भाल करते हैं। उसके लिए घोंसले बनाते हैं और ऐसे ही···

ग्रेगर्स : मैं समझ गया, सभी लोग मुर्ग़ाबी का बहुत खयाल करते हैं।

हेदविग : जी हाँ, वह असली मुर्ग़ाबी है, पानी में रहने वाली। बेचारी यहाँ बिलकुल अकेली है। उसका यहाँ अपना कोई साथी नहीं है न।

ग्रेगर्स : तुम ठीक कहती हो। बेचारी के भाई-बहन भी तो नहीं हैं जैसे तुम्हारे खरगोशों के हैं।

हेदविग : जी हाँ, बेचारी बिलकुल अकेली है। मुर्गियाँ तो कई हैं, उनके तो चूजे भी हुए थे। मुर्ग़ाबी बेचारी इतनी दूर से आई है, बिलकुल अकेली है। कितनी विचित्र चिड़िया है—जंगल से आई है। किसी को मालूम नहीं कहाँ से आई है।

ग्रेगर्स : हाँ, और बेचारी अथाह गहराइयों तक डूबकर निकली है।

हेदविग : (सहसा ग्रेगर्स की आँखों में देखकर जरा मुस्कराकर पूछ लेती है।) आपने 'अथाह गहराई' तक क्यों कहा ?

ग्रेगर्स : क्यों, और क्या कहना चाहिए था ?

हेदविग : आप 'समुद्र-तल तक' कह सकते थे।

ग्रेगर्स : 'अथाह गहराई' तक का अभिप्राय भी तो वही होता है।

हेदविग : कोई दूसरा 'अथाह गहराई' तक कहता है तो मुझे विचित्र लगता है।

ग्रेगर्स : क्यों, ऐसा क्यों है ?

हेदविग : क्या कारण बताऊँ ? मेरी मूर्खता समझ लीजिए।

ग्रेगर्स : नहीं, इसमें मूर्खता क्या है। बताओ, तुम्हें हँसी क्यों आ गई ?

हेदविग : कारण यही होगा कि मैं जब सोचने लगती हूँ तो···सहसा, एकदम ऐसा लगता है कि सब-कुछ, यह पूरा कमरा और जितनी चीजें यहाँ हैं, सब अथाह गहराई में चली जाएँगी। परन्तु इसका अर्थ कुछ भी नहीं।

ग्रेगर्स : नहीं, यह तो नहीं कहा जा सकता।

हेदविग : अच्छा, पर है तो यह कमरा ही।

ग्रेगर्स : (लड़की की ओर बहुत ध्यान से देखकर) यह तुम पूरे निश्चय से कह सकती हो ?

हेदविग : (विस्मय से) क्या निश्चय से—कि यह कमरा है ?

ग्रेगर्स : हाँ, यह तुम पूरे निश्चय से कह सकती हो ?

[हेदविग विस्मय से मौन, मुँह खोले ग्रेगर्स की ओर देखती रह जाती है। गीना रसोई से आकर मेज पर भोजन परोसने की व्यवस्था करने लगती है।]

ग्रेगर्स : (गीना के प्रति सम्मान में खड़े होकर) क्षमा कीजिये, मैं बहुत जल्दी आ गया।

गीना : नहीं, कोई बात नहीं। आपका कमरा ठीक नहीं है, यहाँ ही बैठिये। भोजन भी बस, दो-चार मिनट में तैयार हुआ ही जाता है। हेदविग मेज साफ कर दो।

[हेदविग और गीना मेज पर फैली हुई वस्तुएँ समेटने और भोजन के लिए मेज सजाने लगती हैं। ग्रेगर्स बाँहों वाली कुर्सी पर बैठकर एक एलबम के पन्ने पलटने लगता है। वे आपस में बातचीत भी करते जाते हैं।]

ग्रेगर्स : भाभी, सुना है······आप फोटोग्राफ रिटच कर लेती हैं।

गीना : क्या, मैं आपका अभिप्राय नहीं समझी ?

ग्रेगर्स : मेरा अभिप्राय है कि हजलमार फोटोग्राफी करता है। उसे इस काम में काफी सहायता मिलती होगी।

हेदविग : अम्मी तो फोटो भी खींच लेती हैं।

गीना : हाँ, मैं फोटो भी खींच सकती हूँ। मैंने यह काम सीखा है।

ग्रेगर्स : तब तो मेरा खयाल है, यह धंधा आप ही चलाती होंगी ?

गीना : हाँ, जब उन्हें फुरसत नहीं रहती तो मैं······

ग्रेगर्स : मैं समझता हूँ, उसे पिताजी की देख-भाल का भी काफी काम

रहता होगा।

गीना : हाँ, उन-जैसा आदमी दिन भर लोगों को बैठा-बैठाकर उनके फोटो लेते रहने के ही झंझट में···कैसे उलझा रहे !

ग्रेगर्स : आप ठीक कहती हैं परन्तु फिर भी उसने यह धंधा किया है तो···

गीना : भाई साहब, आपको मालूम नहीं······'ये' कोई मामूली फोटोग्राफर नहीं हैं।

ग्रेगर्स : ठीक है, मानता हूँ परन्तु······(बरसाती में बन्दूक चलने का धमाका सुनाई देता है। ग्रेगर्स चौंक जाता है।) यह क्या !

गीना : ओह ! उन्होंने फिर गोली चला दी होगी।

ग्रेगर्स : क्या यहाँ भी बन्दूक चला देते हैं ?

हेदविग : शिकार कर रहे हैं।

ग्रेगर्स : (बहुत विस्मय से) यह क्या तमाशा है। (बरसाती के दरवाजे में चला जाता है।) हज़लमार क्या बन्दूक चला दी ?

हज़लमार : (जाल के परदे के दूसरी ओर से) ओह, तुम आ गए। मुझे मालूम ही नहीं हुआ ? मैं यहाँ व्यस्त था······(हेदविग की ओर देखकर) यह क्या, तुमने हम लोगों को बताया क्यों नहीं ? (स्टूडियो में आ जाता है।)

ग्रेगर्स : क्या यहाँ बरसाती में बन्दूक से शिकार कर लेते हो ?

हजलमार : (एक दुनाली पिस्तौल दिखलाकर) कुछ नही, बस यह पुरानी चीज है।

गीना : हाँ, किसी दिन तुम और पिताजी इस बन्दूक से कोई मुसीबत कर बैठोगे।

हजलमार : (कुछ खिन्नता से) तुम्हें याद नहीं। तुम्हें कई बार बता चुका हूँ कि गोली दागने के इस हथियार का नाम पिस्तौल है।

गीना : अच्छा, पिस्तौल ही सही। उससे क्या कुछ बचाव हो जाएगा ?

ग्रेगर्स : हजलमार, क्या तुम भी शिकारी बन गए ?

हजलमार : अरे नहीं, हम लोग कभी-कभी एक-दो खरगोश मार लेते हैं और तुम समझते हो, यह सब पिता जी के दिल-बहलाव के लिए है।

गीना : मरदों का विचित्र ही ढंग है, उन्हें सदा ही कुछ-न-कुछ दिल-बहलाव चाहिए।

हजलमार : (चिढ़कर) हाँ, चाहिए, जरूर चाहिए, मर्दों को दिल-बहलाव जरूर चाहिए।

गीना : मैं भी तो यही कह रही हूँ।

हजलमार : खैर ! (ग्रेगर्स को सम्बोधित करके) देखो, यह बड़ी सुविधा की

बात है कि यह बरसाती ऐसी जगह है, यहाँ गोली चला दें तो कोई बाहर सुन भी नहीं सकता। (पिस्तौल को पुस्तकों की अलमारी के ऊपर रख देता है। हेदविग, पिस्तौल को छूना मत। याद रखना, एक नाली में कारतूस भरा हुआ है।

ग्रेगर्स : (जाल के परदे में से झाँककर) तुम्हारे यहाँ, शिकारी—बड़ी बन्दूक भी तो उधर रखी हुई है।

हजलमार : वह पिता जी की पुरानी बन्दूक है। उससे गोली नहीं चल सकती। उसका घोड़ा बिगड़ गया है। बस ऐसे ही, शौकिया रखी हुई है। इसे कभी-कभी खोलकर साफ कर लेते हैं और तेल देकर फिर पुर्जे जोड़ देते हैं। ग्रेगर्स, यह तो पिता जी का खिलौना है।

हेदविग : (ग्रेगर्स के समीप जाकर) अब आप मुर्ग़ाबी को अच्छी तरह देख सकते हैं।

ग्रेगर्स : हाँ, मैं उसी को देख रहा था। ऐसा लगता है कि उसका एक डैना जरा गिरा हुआ है।

हजलमार : वह तो है ही, उसी डैने पर तो चोट आई थी।

ग्रेगर्स : लगता है, एक पंजे से जरा लँगड़ा नहीं रही है?

हजलमार : हाँ है तो, लेकिन मामूली, बहुत मामूली।

हेदविग : जी हाँ, कुत्ते ने उसी पंजे में दाँत गड़ाकर पकड़ लिया था।

हजलमार : हाँ, लेकिन वैसे दूसरी कोई खराबी नहीं है। जरा सोचो, पूरे कारतूस की चोट इसके डैने पर पड़ी थी और कुत्ते के मुँह से बची है···

ग्रेगर्स : (हेदविग की ओर देखकर) और कैसी 'अथाह गहराइयों' में डूबी रही होगी।

हेदविग : (मुस्कराकर) जी हाँ!

गीना : (मेज के पास खड़ी होकर) भला हो मुर्ग़ाबी का···इसके लिए पूरा घर उलट-पलट हो गया है।

हजलमार : हुँह! ···भोजन कब मिलेगा?

गीना : हाँ, अभी हुआ जाता है। हेदविग जरा यहाँ आ, थोड़ा काम कर!

[गीना और हेदविग रसोई में चली जाती हैं।]

हजलमार : (स्वर दबाकर, ग्रेगर्स की ओर) मेरा खयाल है, तुम उधर बैठ जाओ तो शायद ज्यादा अच्छा रहे। यहाँ खड़े होने से नज़र पिता जी की ओर जाती है। उन्हें यह अच्छा नहीं लगता। (ग्रेगर्स बरसाती के दरवाजे से हट जाता है।) मेरे खयाल में यही बेहतर है कि दूसरे लोगों के आने से पहले ही मैं उस दरवाजे को बन्द कर

दूं। शि ! (स्टूडियो की ओर आते खरगोश को डरा देता है।) चलो, अन्दर चलो ! (वह जाल के परदे को डोरी से ऊपर उठाकर दोनों दरवाजों को खींचकर मिला देता है।) यह सब इन्तज़ाम मेरा अपना ही आविष्कार है। अपने मन में नई चीज़ बनाने में बहुत सन्तोष होता है और बिगड़ जाय तो उसे ठीक करने में खूब दिल लगता है। इसके बिना यहाँ काम भी नहीं चल सकता। जानते ही हो, गीना खरगोश और मुर्गियों को स्टूडियो में आने नहीं देगी।

ग्रेगर्स : हाँ-हाँ, कैसे आने देगी और मेरा खयाल है कि स्टूडियो में भाभी का ही राज्य है।

हजलमार : हाँ, मामूली-मामूली काम तो मैं प्रायः उसी पर छोड़ देता हूँ। इस तरह मुझे दफ़्तर में बैठकर अपने आवश्यक काम के लिए सोचने का अवसर मिल जाता है।

ग्रेगर्स : वह कौन-सा काम है हजलमार ?

हजलमार : विस्मय तो यह है कि तुमने अभी तक नहीं पूछा। परन्तु शायद मेरे आविष्कार के विषय में तुम्हें अभी तक किसी ने कुछ बताया नहीं ?

ग्रेगर्स : आविष्कार के बारे में ? कुछ भी नहीं।

हजलमार : सचमुच ? तुमने कुछ भी नहीं सुना ? हाँ कोई बड़ी बात नहीं है। तुम तो दूर देहात में थे ··

ग्रेगर्स : तुमने कोई आविष्कार किया है ?

हजलमार : अभी बिलकुल पूरा तो नहीं हुआ लेकिन मैं उसके लिए बहुत परिश्रम कर रहा हूँ। तुमने स्वयं ही समझ लिया होगा कि मैंने फोटोग्राफ़ी का धंधा इसीलिए तो नहीं अपनाया था कि मैं लोग-बागों के चित्र बनाता रहूँगा।

ग्रेगर्स : ठीक कह रहे हो। भाभी भी यही कह रही थीं।

हजलमार : मैंने व्रत ले लिया था कि यदि मैं अपनी शक्ति इस धंधे में लगाऊँगा तो इसे इतना महत्त्वपूर्ण बना दूंगा कि यह कला और विज्ञान दोनों ही बन जाए। तभी मैंने ऐसा महत्त्वपूर्ण आविष्कार करने का निश्चय कर लिया था।

ग्रेगर्स : तुम्हारा आविष्कार किस प्रकार का है ? उसका क्या प्रयोजन है ?

हजलमार : मित्र, अभी तुम्हें पूरा ब्योरा तो नहीं बता सकता, बताने में भी समय लगेगा। तुम यह मत समझना कि मैं आविष्कारक होने के

अहंकार से यहकर रहा हूँ। विश्वास रखो, मेरा इसमें कोई स्वार्थ नहीं, हर्गिज नहीं। मैंने जीवन का एक लक्ष्य बना लिया है। वही लक्ष्य दिन-रात मेरे मस्तिष्क में रहता है।

ग्रेगर्स : वह कौन-सा लक्ष्य है ?

हजलमार : तुम मेरे अभागे बूढ़े पिता को भूल गए ?

ग्रेगर्स : अभागे बूढ़े पिता ?···भूला नहीं परन्तु तुम उनके लिए करना क्या चाहते हो ?

हजलमार : मैं अपने वंश के नाम की प्रतिष्ठा और सम्मान बढ़ाकर पिता के आत्म-सम्मान को पुनर्जीवित करना चाहता हूँ।

ग्रेगर्स : अच्छा, तो तुम्हारे जीवन का यही लक्ष्य है ?

हजलमार : हाँ, मैं चाहता हूँ कि अपने पिता के जीवन की मँझधार में डूबती नैया को बचा सकूँ। दुर्भाग्य का तूफ़ान ही तो था जो उनके जीवन की नैया को बहा ले गया। उनके विरुद्ध उस अभागे मामले की तहकीकात आरम्भ होते ही उनके पाँव कट गए, उनका व्यक्तित्व समाप्त हो गया। यही पिस्तौल, जिससे हम खरगोश का शिकार खेलते हैं, हमारे परिवार के दुःखान्त नाटक में भाग ले चुकी है।

ग्रेगर्स : यह पिस्तौल ? सौ कैसे ?

हजलमार : जिस समय उन्हें अदालत में जेल के दण्ड का निर्णय सुनाया गया, यह पिस्तौल उनके हाथ में थी···

ग्रेगर्स : क्या वे पिस्तौल से ?

हजलमार : हाँ, चाहते थे परन्तु साहस नहीं कर सके। उस लांछन से उनका साहस और आत्माभिमान इतना जर्जर हो गया था कि वे भीरु बन गए थे। ग्रेगर्स तुम उस अवस्था की कल्पना कर सकते हो ? एक व्यक्ति जो स्वयं योद्धा है, जिस योद्धा के परिवार में दो पूर्वज लेफ़्टिनेंट कर्नल – एक के बाद एक – दो लेफ़्टिनेंट कर्नल हो चुके हों, जिस व्यक्ति ने नौ भालुओं का शिकार किया हो, वे कोई मामूली आदमी नहीं थे।

ग्रेगर्स : मैं समझता हूँ, अच्छी तरह कल्पना कर सकता हूँ।

हजलमार : परन्तु मैं ऐसी कल्पना नहीं कर सकता। तुम और भी सुनो यह पिस्तौल हमारे परिवार के इतिहास की एक और घटना में भी भाग ले चुकी है। जिस समय पिता जी को जेल के ताले-जंगले में बन्द करके जेल की वर्दी पहना दी गई—मित्र, वह आघात मेरे लिए असह्य था। मुझे अपने मकान की खिड़कियाँ खोलने का साहस नहीं होता था। जब कभी मैं खिड़की से बाहर देखता और धूप

उसी प्रकार चमकती दिखाई दे जाती तो मैं कुछ समझ ही न पाता । मैं समझ नहीं पाता था कि लोग कैसे गलियों-बाजारों में अपने रोजमर्रा के जीवन में हँसते-बोलते चले जाते थे। मेरा मस्तिष्क जड़ हो गया था और मुझे जान पड़ता था कि सम्पूर्ण सृष्टि भी किसी अभिशाप से जड़ हो गई थी।

ग्रेगर्स : अपनी माता की मृत्यु के समय मुझे भी ठीक ऐसा ही अनुभव हुआ था।

हजलमार : उस मानसिक अवस्था में एक बार हजलमार एकदाल ने भी यह पिस्तौल उठाकर इसका मुँह अपने सीने पर लगा लिया था ।

ग्रेगर्स : क्या तुमने भी ?

हजलमार : हाँ।

ग्रेगर्स : परन्तु तुमने पिस्तौल चलाई नहीं।

हजलमार : नहीं। संकट के उस क्षण में मैंने अपनी निर्बलता पर विजय प्राप्त कर ली। मेरा जीवन बच गया । परन्तु विश्वास करो, ऐसे संकट में जीवन की रक्षा कर सकने के लिए अदम्य साहस चाहिए।

ग्रेगर्स : हाँ, हो सकता है, दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।

हजलमार : नहीं···नहीं, इसमें संदेह की कोई बात नहीं, वही उचित था। जब निकट भविष्य में मेरा आविष्कार पूर्ण हो जायेगा—रैलिंग का विचार है और मुझे भी विश्वास है कि पिताजी फिर अपनी वर्दी पहन सकेंगे। मैं अपने आविष्कार के प्रतिफल में केवल यही पुरस्कार माँगूंगा।

ग्रेगर्स : ओह सब बात वर्दी की ही है तब तो वे···।

हजलमार : हाँ-हाँ, यही उनका स्वप्न है। यही उनकी साध और महत्त्वाकांक्षा है। तुम कल्पना नहीं कर सकते कि उस विचार से मेरा हृदय कैसे टूक-टूक हो जाता है। जब कोई उत्सव का अवसर हो, प्रसन्नता का कोई दिन हो, हम अपनेवि वाह की वर्षगाँठ मनायें या और कोई खुशी हो तो बुढ़ऊ अपने अच्छे दिनों की स्मृति—वही फौजी वर्दी पहन लेते हैं, परन्तु उस समय बाहर के दरवाजे पर जरा भी आहट हो जाए तो बुढ़ऊ, लड़खड़ाते हुए तुरन्त भागकर अपने कमरे में जा छिपते हैं। तुम जानते ही हो, वे दूसरे लोगों के सामने वर्दी पहनने का साहस नहीं कर सकते। तुम्हीं सोचो, पिता की ऐसी अवस्था देखकर बेटे के मन पर क्या गुजरेगी।

ग्रेगर्स : क्या अनुमान है, तुम अपना आविष्कार कब तक पूर्ण कर लोगे ?

हजलमार : क्या कह सकता हूँ, भगवान् ही जानते हैं···कब तक पूरा हो

जाएगा, यह गिनकर कैसे बता दूं। जिस आदमी में आविष्कार की प्रतिभा हो, वह भी अपनी प्रतिभा का निर्देशन नहीं कर सकता। प्रतिभा तो जानते हो, प्रेरणा पर निर्भर करती है। सूझ के कुछ क्षण होते हैं। यह बता देना कैसे सम्भव हो सकता है कि वह क्षण कब आएँगे।

ग्रेगर्स : परन्तु मैं समझता हूँ, तुम्हें काफी सफलता मिल चुकी होगी।

हजलमार : निश्चय-निश्चय मैं सफल हो रहा हूँ। मैं तो प्रतिदिन उस पर आद्यन्त विचार करता रहता हूँ। मेरे लिए तो उसके सिवा और कुछ है ही नहीं। दोपहर के समय, भोजन के बाद, मैं दफ्तर को भीतरसे बन्द कर लेता हूँ। वहाँ मैं निर्विघ्न विचार कर सकता हूँ। परन्तु मुझसे जल्दी कर सकने की आशा करना उचित नहीं है, उससे कोई लाभ नहीं होगा। रैलिंग भी यही कहता है।

ग्रेगर्स : परन्तु तुम्हारा क्या खयाल है, तुमने बरसाती में तो ताम-झाम खड़ा किया हुआ है, उससे तुम्हारे चिन्तन और काम में काफी विघ्न पड़ता होगा?

हजलमार : नहीं-नहीं, कतई नहीं, बात ठीक उल्टी है। तुम्हें यह खयाल कैसे आया? यह कैसे सम्भव हो सकता है कि मैं उन थका देने वाली, गम्भीर विचारों की भँवर में निरन्तर डूबा रहूँ। मुझे प्रेरणा के क्षणों की भी प्रतीक्षा करनी पड़ती है। प्रेरणा की प्रतीक्षा में सूने क्षणों को बिताने के लिए भी तो मुझे कुछ करते रहना आवश्यक है। मैं कुछ भी करूँ, वह गम्भीर चिन्तन तो मेरे मस्तिष्क में बना ही रहता है। जब समय आएगा, प्रेरणा का वह स्फुलिंग तो दब नहीं सकेगा।

ग्रेगर्स : सुनो मित्र, मुझे लग रहा है कि तुममें भी कुछ-कुछ मुर्ग़ाबी की प्रवृत्ति है।

हजलमार : मुर्ग़ाबी की प्रवृत्ति? तुम्हारा क्या अभिप्राय है?

ग्रेगर्स : तुमने खूब गहरा गोता लगा लिया है और मुर्ग़ाबी की तरह तली के झाड़-झंखाड़ में चोंच फँसाकर वहीं अटके हुए हो।

हजलमार : मेरा खयाल है, तुम्हारा अभिप्राय उसी मर्मान्तक आघात से है जिससे पिताजी और मैं मरे तो नहीं, परन्तु जर्जर हो गए हैं।

ग्रेगर्स : नहीं, मेरा अभिप्राय दूसरा है। मेरे विचार में तुम मुर्ग़ाबी की तरह घायल तो नहीं हो, परन्तु तुम जहरीली दलदल में फँस गए हो। हजलमार, तुमने मानसिक रोग समेट लिया है और तुमने अपने मन के अन्धकार में गोता लगा लिया है। तुम आँखें मूंदे उसी

अन्धकार में प्राण दे देना चाहते हो ।

हजलमार : मैं आँखें मूंदे अन्धकार में प्राण दे देना चाहता हूँ ? ग्रेगर्स, तुम क्या बकवास कर रहे हो ?

ग्रेगर्स : सुनो, जरा स्थिर मन से सुनो ! मैं तुम्हें उपाय बताऊँगा कि तुम फिर ऊपर, जीवन के तल पर आ सको । सुनो, मेरे जीवन का भी एक उद्देश्य है । कल ही मैंने उस उद्देश्य को पहचाना है ।

हजलमार : हो सकता है, परन्तु तुम कृपा करो मुझे ऐसे ही रहने दो । तुम यह विश्वास रखो···हाँ, यह जरूर है कि कभी-कभी मैं एक प्रकार की खिन्नता में डूब जाता हूँ । यह बात दूसरी है; वर्ना मैं सर्वथा स्वस्थ हूँ, उससे अधिक और क्या आशा की जा सकती है ।

ग्रेगर्स : तुम्हारी खिन्नता का कारण उसी ज़हर के प्रभाव से ही है ।

हजलमार : अच्छा ग्रेगर्स, अब मेहरबानी करो; बीमारी और जहर की बकवास छोड़ो । मुझे ऐसी बातें सुनने की आदत नहीं है । यहाँ घर में कभी कोई मुझसे ऐसी खिन्नता-भरी बातें नहीं करता ।

ग्रेगर्स : हाँ, वह तो मैं खूब समझ सकता हूं ।

हजलमार : इस तरह की बातचीत मुझे माफ़िक नहीं बैठती···और तुम्हारी कल्पना की जहरीली दलदली भी यहाँ नहीं है । मैं मानता हूँ, फोटोग्राफर की हैसियत बहुत मामूली होती है और हमारे साधन भी बहुत सीमित हैं; परन्तु यह याद रखो कि मैं आविष्कारक हूँ और अपने परिवार का पालन कर सकता हूँ । मेरी आर्थिक स्थिति साधारण है, परन्तु मैं साधारण नहीं हूँ । अच्छा-अच्छा, लो । भोजन आ गया ।

[गीना और हेदविग मेज पर बीयर की बोतलें, ब्राण्डी की शीशी और गिलास इत्यादि रखने लगती हैं । उसी समय जीने के दरवाजे से रैलिंग और मौलविक भी आ जाते हैं । ओवरकोट और टोपी उनमें से कोई नहीं पहने हुए है । मौलविक काला सूट पहने है ।]

गीना : (मेज पर वस्तुओं को करीने से रखते हुए) बहुत खूब । आप लोग बिलकुल ठीक समय पर आ गए ।

रैलिंग : मौलविक को हैरिंग के सलाद की सुगंध आ गई थी, तो उसे कब तक रोका जा सकता था ? कहो हजलमार, क्या हाल है ?

हजलमार : ग्रेगर्स, मि० मौलविक से तुम्हारा परिचय करवा दूं । और डॉक्टर ·· हाँ, रैलिंग को तो तुम जानते ही हो ।

रैलिंग : हाँ, कुछ परिचय तो है । तुम वर्ले साहब के पुत्र हो न ? हाँ, तुमसे

तो होयदाल में दो-एक बार झपट हो चुकी है। तुम यहाँ आज ही आये ?

ग्रेगर्स : बस, आज प्रातः ही आया हूँ।

रैलिंग : मौलविक और मैं नीचे के तल्ले में, तुम्हारे कमरे के नीचे ही रहते हैं। डॉक्टर और पादरी की जरूरत होगी तो ढूँढ़ने नहीं जाना होगा।

ग्रेगर्स : धन्यवाद। बहुत सम्भव है, जरूरत पड़ जाय। अपशकुन तो कल हो चुका है। कल संध्या-भोज में मेज पर हम तेरह व्यक्ति थे।

रैलिंग : हजलमार, तुम निःशंक रहो। उस अपशकुन का तुमसे कोई संबंध नहीं हो सकता।

हजलमार : भगवान् न करे, मेरे परिवार को मेरी आवश्यकता है। अच्छा अब बैठो, यह पीने-खाने और खुशी का समय है।

ग्रेगर्स : तुम्हारे पिताजी की प्रतीक्षा कर लें, वह नहीं आएँगे ?

हजलमार : नहीं। वह जरा अबेर से खाते हैं, अपने कमरे में ही मँगा लेते हैं। आरम्भ किया जाए।

[सब पुरुष मेज के चारों ओर बैठकर खाने-पीने लगते हैं। गीना और हेदविग समीप खड़ी परोसती जाती हैं।]

रैलिंग : (गीना की ओर देखकर) बहन, कल फिर मौलविक की मति मारी गई, बेहद पी गया था।

गीना : क्या कहा; कल फिर ?

रैलिंग : क्यों, कल रात जब मैं इसे मकान पर लाया था तो आपने कुछ सुना नहीं ?

गीना : नहीं, मुझे तो कुछ याद नहीं।

रैलिंग : आपने नहीं सुना तो अच्छा ही हुआ। कल रात तो इसने बहुत परेशान किया।

गीना : मौलविक साहब, यह क्या कह रहे हैं ?

मौलविक : जो बीत गई सो बीत गई, उसे याद करने से क्या लाभ ? उन बातों का मेरे चैतन्य जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं।

रैलिंग : (ग्रेगर्स की ओर देखकर) कभी-कभी इस पर उन्माद का दौर आ जाता है। तब मुझे भी हुड़दंगबाजी में इसका साथ देना पड़ता है। यह आसुरी वृत्ति का आदमी है।

ग्रेगर्स : आसुरी ?

रैलिंग : हाँ, इसकी बहुत आसुरी वृत्ति है।

ग्रेगर्स : हुँ !

रैलिंग : जानते हो, आसुरी बृत्ति के लोगों के लिए जीवन में निरन्तर संयम का मार्ग निबाहते रहना संभव नहीं होता। ऐसे लोग जब-तब भटक ही जाते हैं···खैर, तुम अभी तक उसी कारखाने की गन्दगी में जमे हुए हो, ऊब नहीं गए ?

ग्रेगर्स : हाँ, अब तक तो निबाहता रहा हूँ।

रैलिंग : और तुम्हारा वह 'कर्त्तव्य'···जिसका तुम उपदेश दिया करते थे, पूरा हो गया ?

ग्रेगर्स : मेरा कर्त्तव्य ? (रैलिंग की ओर ध्यान से देखकर) ओह समझ गया।

हजलमार : किस कर्त्तव्य की बात कर रहे हो ग्रेगर्स ?

ग्रेगर्स : यों ही बक रहा है।

रैलिंग : नहीं-नहीं, मैं ठीक कह रहा हूँ। होयदाल में यह घर-घर घूम-घूम-कर "आदर्श पूर्ति के कर्त्तव्य" का प्रचार किया करता था।

ग्रेगर्स : अरे, वह लड़कपन की बात थी।

रैलिंग : तब तुम लड़के तो थे ही। मैं भी होयदाल में था। मैंने तो किसी को तुम्हारा आदर्श-पूर्ति का उपदेश सुनते नहीं देखा।

ग्रेगर्स : अब भी कोई नहीं सुनता।

रैलिंग : ठीक है, आशा है अब तुमने व्यावहारिक बुद्धि से अपने आदर्श को कुछ समेट लिया होगा।

ग्रेगर्स : हर्गिज नहीं। मानव से तो मैं मानव-आदर्श की पूर्ति के कर्त्तव्य को पूरा करने की आशा करता हूँ।

हजलमार : यह तो उचित ही है। गीना, जरा मक्खन देना।

रैलिंग : मौलविक को थोड़ा माँस दीजिए।

मौलविक : ऊहूँ मुझे नहीं चाहिए।

[बरसाती की ओर दरवाजे पर खटखट सुनाई देती है।]

हजलमार : हेदविग, दरवाजा खोल दो। पिताजी को आ जाने दो।

[हेदविग किवाड़ को जरा खोल देती है। बुढ़ऊ स्टूडियो में आ जाते हैं। उनके हाथ में खरगोश की ताजी खाल है। बुढ़ऊ भीतर आकर अपने पीछे का दरवाजा बन्द कर देते हैं।]

एकदाल : 'नमस्ते-नमस्ते' सबको नमस्ते। आज बहुत अच्छा शिकार हाथ आया है, काफी बड़ा मार लिया।

हजलमार : आपने अकेले ही खाल भी उतार ली—मुझे नहीं बुलाया।

एकदाल : हाँ, नमक भी लगा दिया है। बहुत अच्छा नरम माँस है, बहुत

मीठा, निरी शक्कर। खूब बड़ा खरगोश था। आप लोगों की दावत हो जायगी। (बुढ़ऊ अपने कमरे में चले जाते हैं)।

मौलविक : (कुरसी छोड़कर खड़ा हो जाता है) क्षमा कीजिए···मेरा मन ठीक नहीं है···मैं नीचे जा रहा हूँ···

रैंलिग : अरे, जरा-सा सोड़ा वाटर ले ले ! निरा बुद्धू है।

मौलविक : (खिन्नता से) उ-हूँ उ-हूँ। (जीने के दरवाजे से बाहर चला जाता है।)

रैंलिग : (शराब का गिलास उठाकर) हजलमार की ओर देखकर, यह जाम पिताजी की— वृद्ध शिकारी की सफलता और स्वास्थ्य के लिए।

हजलमार : (अपना गिलास रैंलिग के गिलास से छुआकर) हाँ, कब्र के समीप खड़े वृद्ध शिकारी के···

रैंलिग : धौले सिर के सम्मान में (गिलास से घूँट भरकर) अच्छा यह बताओ, उनके केश धौले हैं या पीले ?

हजलमार : मेरे खयाल में न बिलकुल धौले हैं, न पीले ही हैं—मिले-जुले ही समझो। पर असल में तो उनकी खोपड़ी पर केश रह ही कहाँ गए हैं ?

रैंलिग : अरे, केश झड़ जायँ तो क्या है। खोपड़ी विग से ढाँक ली जा सकती है।

हजलमार : हाँ, इसमें क्या संदेह। निश्चय ही मैं अपने लक्ष्य के लिए प्रयत्न कर रहा हूँ।

रैंलिग : और सौभाग्य से पत्नी भी तुम्हें लक्ष्मी मिली है। चुपचाप निरन्तर काम में लगी रहती है। घर में तुम्हारे लिए सब सुविधा और आराम बनाए हैं।

हजलमार : (पत्नी की ओर समर्थन में गर्दन हिलाकर) इसमें क्या संदेह है। गीना वास्तव में ही बहुत ही अच्छी जीवन-संगिनी है।

गीना : जी हाँ, मेरा मज़ाक क्यों बना रहे हैं।

रैंलिग : और तुम्हारी बिटिया हेदविग क्या कम है।

हजलमार : (भावुकता से) इसमें क्या संदेह है, हमारी बिटिया ही तो हमारा सर्वस्व है। यहाँ आओ मुन्नी ! (लड़की के सिर पर प्यार से हाथ रखकर) कल क्या है ?

हेदविग : (पिता का कंधा झकझोर कर) नहीं-नहीं ! पापा मत बताइए !

हजलमार : सचमुच, मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। हम कर ही क्या सकेंगे। बस, बरसाती में छोटी-सी पार्टी कर लेंगे।

हेदविग : पापा और क्या चाहिए, ठीक तो है।

रैलिंग : हेदविग, कोई चिन्ता न करो। अपने पापा का आविष्कार पूर्ण हो जाने दो—

हजलमार : हाँ बेटी, तब देखना। तुम्हारे भविष्य को मैं यों नहीं रह जाने दूंगा। तुम्हारे जीवन-भर के लिए सुख-सुविधा की व्यवस्था कर दूंगा। मेरी जो कुछ माँग है, तुम्हारे लिए ही होगी। मेरे आविष्कार का यही पुरस्कार होगा।

हेदविग : (पिता के गले में बाँह डाल देती है) मेरे प्यारे पापा !

रैलिंग : (ग्रेगर्स को सम्बोधित करके) तुम्हारा क्या खयाल है, कभी-कभी किसी सुखी परिवार में बैठकर तृप्ति से खा-पीकर कितना संतोष होता है ?

ग्रेगर्स : जहाँ तक मेरा प्रश्न है, मैं तो किसी दम घोटने वाले, ज़हरीले वातावरण में फँसा हुआ नहीं हूँ।

रैलिंग : ज़हरीला वातावरण ?

हजलमार : ओह--भई, वाह बकवास न करो !

गीना : हाय राम ! ग्रेगर्स भाई, यहाँ ज़हरीला वातावरण कहाँ है ? भगवान् जाने, मैं प्रतिदिन बिला-नागा पूरे मकान की खिड़कियाँ, दरवाजे खोलकर यहाँ की वायु ताज़ी कर देती हूँ।

ग्रेगर्स : (मेज से परे हटते हुए) मैं जिस गन्दगी की बात कर रहा हूँ, वह ताज़ी वायु से दूर नहीं हो सकती।

हजलमार : गन्दगी ?

गीना : (पति की ओर देखकर) यह क्या कह रहे हैं ?

रैलिंग : माफ़ करना, मुझे तो संदेह होता है कि तुम स्वयं ही होयदाल की खानों से तो गन्दगी नहीं ले आए ?

ग्रेगर्स : तुम तो यही कहोगे कि मैं जहाँ जाऊँगा गन्दगी ले जाऊंगा।

रैलिंग : (ग्रेगर्स की ओर बढ़कर) ग्रेगर्स सुनो, मेरी बात सुनो ! मुझे तो अब भी पूरा सन्देह है कि तुम अपने उसी पुराने 'आदर्श-पूर्ति के कर्त्तव्य' के प्रचार में उलझे हुए हो।

ग्रेगर्स : हाँ, निश्चय ही मैं उसका प्रचार कर रहा हूँ।

रैलिंग : तुम बेशक जहाँ चाहे अपना प्रचार करते फिरो, लेकिन याद रखो कि जब तक मैं इस मकान में मौजूद हूँ, तब तक यहाँ तुम अपना प्रचार बन्द रखो !

ग्रेगर्स : क्यों, मैं अपना प्रचार करूँ तो तुम क्या कर लोगे ?

रैलिंग : मैं करूँगा यह कि तुम्हें पाँव से उठाकर सिर के बल जीने से धकेल दूंगा।

हजलमार : (सहसा चिन्ता से खड़े होकर) रैलिंग, क्या कर रहे हो ?

ग्रेगर्स : (रैलिंग को सम्बोधित करके) अच्छा, फेंक दो मुझे उठाकर—

गीना : (बीच-बचाव के लिए आगे बढ़ आती है) रैलिंग भाई, आप यह क्या ऊट-पटाँग कर रहे हैं। लेकिन ग्रेगर्स साहब, आप भी क्या कह रहे हैं। अपने कमरे को तो आपने गन्दगी से भर दिया है और यहाँ गन्दगी दूर करने की बातें कर रहे हैं।

[जीने के दरवाजे पर थपकी सुनाई देती है।]

हेदविग : अम्मी, कोई दरवाजा खटखटा रहा है।

हजलमार : यह और लो···परेशान करने के लिए कोई और आ पहुँचा।

गीना : ठहरो, मुझे देख लेने दो। (दरवाजा खोलते ही चौंक जाती है और सिहरकर पीछे हट जाती है) हैं ! हाय राम ! (दरवाजे से ग्रेगर्स के पिता मि० वर्ले आ जाते हैं। मि० वर्ले रोयेंदार कीमती ओवरकोट पहने हैं)।

मि० वर्ले : क्षमा कीजिए—परन्तु शायद मेरा लड़का, ग्रेगर्स इसी मकान में है।

गीना : (गहरी साँस लेकर) जी हाँ।

हजलमार : (आगन्तुक की ओर बढ़कर) आइये, वर्ले साहब, आइये ! आइये कृपा कीजिये, बैठिये।

मि० वर्ले : धन्यवाद—धन्यवाद। मैं केवल अपने लड़के से एक बात करना चाहता हूँ।

ग्रेगर्स : (आगे बढ़कर) आज्ञा कीजिये, मैं उपस्थित हूँ।

मि० वर्ले : तुम अपने कमरे में चलो, वहीं बात करूँगा।

गीना : क्षमा कीजिये। वहाँ नहीं—क्या कहूँ अभी कमरा आपके जाने लायक—

मि० वर्ले : अच्छा तो जीने में सही। मैं अकेले में बात करना चाहता हूँ।

हजलमार : आप लोग यहाँ ही बात कर लीजिये ! रैलिंग, तुम जरा इधर दफ़्तर में आ जाओ !

[हजलमार और रैलिंग दाहिनी ओर के दरवाजे में चले जाते हैं। गीना और हेदविग रसोई में हो जाती हैं।]

ग्रेगर्स : (दो पल प्रतीक्षा करके) कहिये, वह लोग चले गए हैं !

मि० वर्ले : कल रात तुमने एक बात कही थी—और तुम अपना मकान छोड़कर इन लोगों के साथ रहने के लिए आ गए हो। ऐसी स्थिति में मुझे सन्देह होता है कि तुम मुझसे असन्तुष्ट हो और तुम्हारा विचार मेरे विरुद्ध कुछ करने का है।

ग्रेगर्स : मेरा विचार यही है कि मैं हजलमार एकदाल को वास्तविक स्थिति बता दूँ, उसकी आँखें खुल जायँ। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं।

मि० वर्ले : कल रात तुम जीवन के उद्देश्य और कर्त्तव्य की बात कर रहे थे, वह उद्देश्य और कर्त्तव्य यही है ?

ग्रेगर्स : जी हाँ, आपने मुझे इसके लिए विवश कर दिया है।

मि० वर्ले : ग्रेगर्स, क्या मेरे कारण ही तुम्हारा मस्तिष्क इतना क्षुब्ध हो गया है ?

ग्रेगर्स : जी हाँ, आपके कारण मेरा पूरा जीवन क्षुब्ध हो गया है। कल माता जी के सम्बन्ध में जो बात हुई थी, इस समय उसकी चर्चा नहीं कर रहा हूँ परन्तु आपके कारण मेरा मन और आत्मा अपराधी अनुभव कर रहा है और मैं असह्य ग्लानि और यंत्रणा अनुभव कर रहा हूँ।

मि० वर्ले : ओह···तुम आत्मिक और मानसिक परेशानी के चक्कर में पड़े हो।

ग्रेगर्स : मुझे बहुत पहले ही आपका विरोध करना चाहिए था। जिस समय आप लैफ़्टीनेण्ट एकदाल को फँसाने का षड्यन्त्र रच रहे थे, उसी समय मुझे विरोध का साहस करना चाहिए था। मुझे उसी समय सन्देह हो गया था कि षड्यन्त्र का परिणाम क्या होगा। उसी समय उन्हें सावधान कर देना चाहिए था।

मि० वर्ले : ठीक है, तुम्हें तभी कह देना चाहिए था।

ग्रेगर्स : हाँ, मुझे जरूर कहना चाहिए था, परन्तु मैं साहस नहीं कर सका। मैं उस समय बहुत कायर था। मैं नहीं बता सकता कि तब मुझ पर आपका कितना जबरदस्त आतंक था और वह आतंक कितने बरस तक बना रहा।

मि० वर्ले : अब तो तुम पर मेरा कोई आतंक नहीं जान पड़ता।

ग्रेगर्स : जी हाँ, सौभाग्य से अब वह आतंक समाप्त हो गया है। मैंने और···दूसरे लोगों ने, बेचारे, बूढ़े एकदाल के साथ जो अन्याय किया है, उसका तो कोई प्रतिकार नहीं हो सकता। परन्तु हजलमार जिस प्रपंच और पाखण्ड में फँसकर दम घोंटे पड़ा है उसे मैं दूर कर सकता हूँ।

मि० वर्ले : तुम समझते हो, इससे तुम किसी का भला कर सकोगे ?

ग्रेगर्स : जी हाँ, मुझे पूरा विश्वास है।

मि० वर्ले : क्या तुम वास्तव में यह समझते हो कि हजलमार-जैसा आदमी

इस काम के लिए तुम्हारे प्रति आभार अनुभव करेगा।

ग्रेगर्स : मुझे पूरा विश्वास है।

मि० वर्ले : अच्छा···देखा जायगा।

ग्रेगर्स : इसके अतिरिक्त अपने मन और आत्मा को इस ग्लानि और खेद की वेदना से मुक्त किये बिना मेरे लिए जीवित रह सकना सम्भव नहीं है।

मि० वर्ले : उस चक्कर से तुम छूट नहीं सकोगे। मानसिक खिन्नता के संस्कार तुममें बचपन से ही बैठ गए हैं। यह प्रभाव तुम पर अपनी माँ का है। ग्रेगर्स, बस···तुम्हारे लिए उसकी यही एक देन है।

ग्रेगर्स : (विद्रूप से मुस्कराकर) आपके मन में अब भी वह क्षोभ बना ही हुआ है कि आपने भूल से आशा कर ली थी कि मेरी माँ आपके यहाँ आयँगी तो अपने साथ बहुत बड़ी सम्पदा ले आयँगी।

मि० वर्ले : इस समय बेतुकी बातें करने से कोई लाभ नहीं है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या तुमने अपना विचार पूरा करने का निश्चय कर लिया है कि अपने विचार के अनुसार हजलमार का भ्रम दूर किये बिना नहीं रहोगे?

ग्रेगर्स : जी हाँ, यह निश्चित है।

मि० वर्ले : तो फिर मैंने यहाँ आने की परेशानी व्यर्थ ही उठाई। मैं समझता हूँ, तुमसे अपने घर लौट चलने का अनुरोध करना व्यर्थ ही होगा।

ग्रेगर्स : जी हाँ, उससे कोई लाभ नहीं।

मि० वर्ले : तुम अपनी कम्पनी में भी साझी नहीं बनना चाहते?

ग्रेगर्स : जी नहीं।

मि० वर्ले : जैसा तुम चाहो। परन्तु मेरा विचार दूसरा विवाह कर लेने का है। इसलिए मुझे सम्पत्ति का बँटवारा कर देना होगा।

ग्रेगर्स : (खिन्नता से) जी, यह नहीं हो सकता।

मि० वर्ले : यह नहीं हो सकता?

ग्रेगर्स : जी नहीं, यह नहीं हो सकता। मेरी आत्मा इसे स्वीकार नहीं कर सकती।

मि० वर्ले : (पल-भर सोचकर) तुम लौटकर कारखाने में जाओगे?

ग्रेगर्स : जी नहीं, मैंने आपका काम और आपकी नौकरी छोड़ दी है।

मि० वर्ले : आखिर कुछ तो करोगे?

ग्रेगर्स : मैं केवल अपने जीवन के उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही यत्न करूँगा, अन्य कुछ नहीं।

मि० वर्ले : वह तो करोगे······परन्तु उसके बाद ? निर्वाह कैसे चलेगा ?

ग्रेगर्स : निर्वाह के लिए मेरे पास है। मैं अपनी तनखाह में से बचाता रहा हूँ।

मि० वर्ले : उससे कितने दिन निर्वाह होगा ?

ग्रेगर्स : मैं समझता हूँ, मेरे जीवन के लिए पर्याप्त होगा।

मि० वर्ले : क्या मतलब है तुम्हारा ?

ग्रेगर्स : मैं इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं देना चाहता।

मि० वर्ले : अच्छा ग्रेगर्स, विदा···खुश रहो।

ग्रेगर्स : विदा, प्रणाम।

[मि० वर्ले बाहर चले जाते हैं।]

हजलमार : (दरवाजे में से झाँककर) क्या चले गए ?

ग्रेगर्स : हाँ गए।

[हजलमार और रैलिंग स्टूडियो में आ जाते हैं। गीना और हेदविग भी आ जाती हैं।]

रैलिंग : दावत का मजा किरकिरा हो गया।

ग्रेगर्स : हजलमार, तुम अपना कोट और टोपी ले लो, हम लोग ज़रा दूर तक घूमने चलेंगे।

हजलमार : अवश्य, चलता हूँ। पिता जी किसलिए आये थे ? मेरे विषय में तो कुछ नहीं कहा ?

ग्रेगर्स : आओ, मेरे साथ बाहर चलो, तुमसे आवश्यक बात करनी है। मैं अपना कोट ले लूँ। (दरवाजे से चला जाता है)।

गीना : (हजलमार को सम्बोधित करके) तुम उनके साथ मत जाओ !

रैलिंग : हाँ, तुम मत जाओ। तुम यहीं ठहरो !

हजलमार : (कोट और टोपी लेते हुए) क्यों ऐसी क्या बात है ? वह मेरा पुराना मित्र है। एकान्त में अपने मन की बात कहकर मन हल्का करना चाहता है······

रैलिंग : भाड़ में जाय ऐसी मित्रता ! तुम्हें दिखाई नहीं देता कि वह पागल है, झक्की है, उसका दिमाग ठिकाने नहीं है।

गीना : हाँ-हाँ, यही बात है। उसकी माँ को भी ऐसे ही दौरे आते रहते थे।

हजलमार : तब तो मुझे उसके साथ अवश्य जाना चाहिए। उसके साथ अपने किसी आदमी का रहना आवश्यक है। (गीना को सम्बोधित करके) सुनो, साँझ का भोजन जरा जल्दी ही तैयार कर लेना। अच्छा चल रहा हूँ। (जीने के दरवाजे से बाहर चला जाता है)।

रैलिंग : ऐसे लोगों पर भगवान की भी नज़र नहीं पड़ती। यह तो होयदाल की किसी खान में ही खप जाता तभी कल्याण होता।

गीना : हाय राम···आप ऐसा क्यों कह रहे हैं ?

रैलिंग : (दाँत पीसकर) मैं उसे जानता हूँ न।

गीना : क्या सचमुच पागल है ?

रैलिंग : नहीं, यह बात नहीं है उसके होश-हवास तो दूसरे लोगों से कहीं बेहतर हैं, परन्तु उसके चिन्तन में रोग जरूर है।

गीना : ऐसी क्या बात है, उसे क्या हो गया है ?

रैलिंग : क्या बताऊँ बहन, बात यह है कि इस आदमी को आदर्शवाद का विकट ज्वर है।

गीना : आदर्शवाद का ज्वर ?

हेदविग : चाचा जी, यह भी कोई बीमारी होती है ?

रैलिंग : हाँ-हाँ, होती है यह बीमारी। हमारे यहाँ दबी रहती है परन्तु कभी-कभी भड़क उठती है। (गीना की ओर सिर झुकाकर) इतने बढ़िया भोजन के लिए धन्यवाद। (जीने के दरवाजे से बाहर चला जाता है)।

गीना : (चिन्ता के भाव से स्टूडियो में घूमती हुई) ओफ़···यह ग्रेगर्स भी···यह सदा से ही पागल है।

हेदविग : (मेज के समीप खड़ी रह कर माँ की ओर चिन्ता से देखती है) हाय, क्या-क्या कह रहे हैं, क्या हो गया सब लोग को ?

चतुर्थ अंक

[दृश्य : हजलमार एकदाल का स्टूडियो। फोटो लिये जाने के बाद की स्थिति। काले कपड़े से ढका हुआ कैमरा एक ऊँची तिपाई पर रखा हुआ है। कैमरे के सामने, स्टूडियो के बीचोंबीच पास-पास रखी हुई दो कुर्सियाँ और छोटी मेज है। धूप ढल गई है। सूर्यास्त का समय है, अँधेरा बढ़ता चला आ रहा है। गीना खुले हुए दरवाजे के समीप खड़ी है। उसके एक हाथ में छोटा डिब्बा है और दूसरे हाथ में धोई हुई भीगी प्लेट है। वह दरवाजे के बाहर खड़े हुए व्यक्ति को उत्तर दे रही है।]

गीना : हाँ, निश्चय, अवश्य तैयार हो जायँगी। मैंने जिस समय कहा है, उस समय काम तैयार मिलेगा। आपको एक दर्जन चित्र सोमवार को अवश्य मिल जायँगे। अच्छा नमस्ते।

[जीने से उतरते हुए कदमों की आहट आती है। गीना दरवाजा बन्द कर लेती है। वह प्लेट डिब्बे में रख लेती है और डिब्बे को कैमरे में सटा देती है। हेदविग रसोई से स्टूडियो में आ जाती है।]

हेदविग : वे लोग चले गए?

गीना : (फर्श के बीच से कुर्सियों को यथास्थान रखते हुए) भला हो, किसी तरह उन्हें निबटा ही दिया।

हेदविग : अम्मी, पापा अभी तक नहीं लौटे, क्या बात होगी? अब तक भी नहीं आए?

गीना : तुमने नीचे रैलिंग चाचा के यहाँ देखा है; क्या वहाँ भी नहीं हैं?

हेदविग : वहाँ नहीं हैं, मैं अभी पिछवाड़े के जीने से देखकर आई हूँ।

गीना : उनके लिए खाना कब से रख दिया है, पड़ा-पड़ा ठण्डा हो रहा है।

हेदविग : क्या बात होगी, पापा इतना विलम्ब तो नहीं करते; भोजन के लिए तो वे सदा ही ठीक समय पर आ जाते हैं।

गीना : अच्छा तो अब आ ही रहे होंगे।

हेदविग : न जाने अब तक क्यों नहीं आये। अम्मी, मुझे आज बड़ा अजीब-सा लग रहा है; पता नहीं क्यों?

गीना : आ गए, वह देख पापा आ गए। (हजलमार जीने के दरवाजे से

भीतर आ जाता है।)

हेदविग : (पिता के समीप जाकर) पापा, आपने इतनी देर क्यों कर दी; हम कब से आपकी राह देख रही हैं।

गीना : (पति की ओर देखकर) आज बहुत देर बाहर रह गए, कहाँ थे ?

हजलमार : (पत्नी से नज़र चुराकर) हाँ, कुछ देर लग गई।

[वह अपना ओवरकोट उतारने लगता है। गीना और हेदविग सहायता के लिए आगे बढ़ते हैं। हजलमार उन्हें परे रहने का संकेत करके स्वयं ओवरकोट उतार लेता है।]

गीना : ग्रेगर्स के साथ बाहर ही तो नहीं खा आए ?

हजलमार : नहीं। (अपना कोट खूँटी पर टाँग देता है।)

गीना : (रसोई की ओर जाते हुए) अच्छा तो फिर लाये देती हूँ।

हजलमार : नहीं, रहने दो, मन नहीं है खाने का।

हेदविग : (पिता के समीप जाकर) पापा, क्या जी अच्छा नहीं ?

हजलमार : हूँ, नहीं, मैं बिलकुल ठीक हूँ। ग्रेगर्स के साथ बहुत दूर तक चला गया था, थक गया हूँ।

गीना : इतनी दूर क्यों चले गए थे ? जानते हो, तुम्हें इतना चलने की आदत नहीं है।

हजलमार : हुँ···आदत का क्या है। इस संसार में मनुष्य को बहुत-कुछ करना पड़ जाता है। (कमरे में चहलकदमी करने लगता है।) कोई मुझसे मिलने के लिए तो नहीं आया था ?

गीना : नहीं तो। बस, वही सगाई वाला जोड़ा फोटो खिंचवाने आया था।

हजलमार : कोई और गाहक नहीं आया ?

गीना : नहीं, आज तो कोई नहीं आया।

हेदविग : कल कोई अवश्य आयगा, पापा देख लेना !

हजलमार : हाँ, आशा तो करनी चाहिए। कल मुझे बहुत काम करना है, जितना हो सके, कर डालना है।

हेदविग : कल ? पापा जी भूल गए, कल क्या है ! भूल गए कल क्या है !

हजलमार : हाँ, ठीक है। अच्छा तो परसों सही। अब मैं सब काम स्वयं ही करूँगा। अपने काम में मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है।

गीना : उससे क्या लाभ होगा ? निरर्थक अपनी परेशानी बढ़ाने की क्या जरूरत है ! फोटो का काम तो मैं भी कर ही लेती हूँ। तुम अपना समय आविष्कार की खोज में लगाओ।

हेदविग : हाँ पापा, आपको मुर्ग़ाबी, मुर्गियों और खरगोशों को भी तो देखना होता है।

हजलमार : ऊटपटाँग मत बका करो ! कल से मैं बरसाती में कदम भी नहीं रखूँगा।

हेदविग : परन्तु पापा, आपने तो कहा था—कल बरसाती में पार्टी करेंगे।

हजलमार : हाँ-हाँ, मुझे याद है। अच्छा परसों से सही। भाड़ में जाय मुर्ग़ाबी। मन चाहता है, उसकी गर्दन मरोड़ दूं।

हेदविग : (चीख उठती है) हाय ! नहीं पापा, नहीं पापा !

गीना : यों ही इतनी परेशान हो रही हो।

हेदविग : (पिता की बाँह खींचकर) नहीं, मैं नहीं, पापा मुर्ग़ाबी मेरी है।

हजलमार : हाँ-हाँ, मैं उसका कुछ नहीं कर रहा हूँ। मेरा दिल ऐसा पत्थर का नहीं है—हेदविग, तेरा मुझे बहुत खयाल है परन्तु मेरा मन चाहता है कि उसे सचमुच समाप्त कर दूं। उस आदमी की छुई हुई कोई भी वस्तु मैं अपने घर में नहीं रहने देना चाहता।

गीना : हाय राम, तुम भी कैसी बातें किया करते हो। चिड़िया तो पिता जी उस गधे, पैटर्सन से लाये थे···।

हजलमार : (कमरे में चहलकदमी करते हुए) परन्तु मनुष्य का कुछ कर्त्तव्य ···मेरा मतलब है···आदर्श के प्रति कर्त्तव्य···जो मनुष्य का अनिवार्य कर्त्तव्य होता है। उस कर्त्तव्य की उपेक्षा करना अपनी आत्मा का हनन करना है।

हेदविग : (पिता के पास जाकर) परन्तु पापा, मुर्ग़ाबी···बेचारी मुर्ग़ाबी तो···।

हजलमार : (मौन खड़े होकर) सुनो, तुम्हारी मुर्ग़ाबी को···तुम्हारी खातिर मुर्ग़ाबी को मैं कुछ नहीं कहूँगा। मैंने कह तो दिया, मैं उसे हाथ नहीं लगाऊँगा। परन्तु दूसरी बातें हैं, मुर्ग़ाबी से अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं। हेदविग, तुम बाहर जाओ, जाओ अपनी सैर कर आओ; बाहर अँधेरा हो गया है।

हेदविग : नहीं, आज नहीं जाऊँगी। आज मन नहीं करता।

हजलमार : नहीं-नहीं, तुम्हारे लिए ठण्डी वायु में घूमना आवश्यक है। तुम्हारी आँखों में पानी आ रहा है। बन्द कमरे की वायु से तुम्हारी आँखों का कष्ट बढ़ जाता है। यह धुआँ और गंदी वायु, इस घर का वातावरण तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है।

हेदविग : बहुत अच्छा, पिछवाड़े के जीने से चली जाती हूँ। थोड़ी दूर जाकर लौट आऊँगी। मेरा कोट और टोपी···हाँ, वह तो मेरे कमरे

में हैं। पापा, मुर्ग़ाबी को तो कुछ नहीं करेंगे मेरे पीछे ?

हजलमार : नहीं-नहीं बेटी; मुर्ग़ाबी को मैं हाथ भी नहीं लगाऊँगा, विश्वास रखो। (हेदविग को स्नेह से समीप खींच लेता है।) हेदविग, हम दोनों···मैं और तुम···अच्छा जाओ, दौड़कर सैर कर आओ। (हेदविग बाहर जाने के लिए माता-पिता को गर्दन के संकेत से नमस्ते करती है और रसोई के रास्ते चली जाती है। हजलमार गर्दन झुकाये कमरे में चहलकदमी करने लगता है।)

गीना : हाँ, क्या है ?

हजलमार : कल से···नहीं मेरा अभिप्राय है परसों से···मैंने सोचा है कि घर का हिसाब-किताब स्वयं रखूँगा।

गीना : घर का हिसाब-किताब भी तुम रखोगे ?

हजलमार : हाँ, कम-से-कम मुझे पता तो रहे कि हमारी आय कितनी हो रही है।

गीना : भला हो···उसमें जानने को क्या है ?

हजलमार : मैं तो कुछ भी नहीं जानता। मैं तो समझ ही नहीं पाता हूँ कि मेरी आय में तुम इतना लम्बा खर्च कैसे निबाह रही हो ! (कदम रोक-कर पत्नी की ओर देखता है।) मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम इतना खर्चा चला कहाँ से रही हो।

गीना : उसमें क्या है, मेरा और हेदविग का ऐसा खर्चा ही क्या है ?

हजलमार : सुना है, वर्ल साहब के यहाँ से पिता जी को यों ही पैसा मिलता रहता है।

गीना : उनके काम और हिसाब के बारे में मुझे क्या मालूम ! मैं क्या जानूँ, दूसरे दफ़्तरों में क्या मज़दूरी मिलती है।

हजलमार : यह तो अनुमान है कि महीने में कितना मिल जाता होगा।

गीना : सब महीनों में बराबर तो मिलता नहीं। कभी कम, कभी कुछ अधिक। अनुमान यही है कि हम उनके लिए जो खर्च करते हैं, पूरा हो जाता है। कुछ उनकी जेब में छोटे-मोटे खर्च के लिए बच जाता होगा।

हजलमार : हम उनके लिए जो खर्च करते हैं···यह सब बातें तुमने मुझे तो कभी नही वताईं ?

गीना : क्या बताती ? तुमने कभी बात ही नहीं की। तुम संतुष्ट रहते हो कि उनकी सब आवश्यकताएँ पूरी कर रहे हो।

हजलमार : हूँ, वास्तव में खर्च बुढ़ऊ वर्ल दे रहे हैं।

गीना : उसमें क्या है, उनके यहाँ क्या कमी है।

हजलमार : (लैम्प की ओर संकेत करके) अच्छा, जरा उजाला तो कर दो।

गीना : (लैम्प से रोशनी करती हुई) हमें क्या मालूम, वास्तव में क्या बात है। वर्ले साहब दिला रहे हैं या ग्राबर्ग ही लिहाज कर रहा है।

हजलमार : तुम बात ग्राबर्ग पर क्यों टाल देना चाहती हो?

गीना : मुझे क्या मालूम, मैंने तो यही कहा कि हो सकता है···

हजलमार : हुँ!

गीना : पिता जी को लिखाई का काम दफ़्तर से दिलाने के लिए मैं तो गई नहीं थी। तुम्हें याद है, सूरबी बाई यहाँ आई थीं। उसके बाद उन्होंने पिता जी को काम दिला दिया था।

हजलमार : तुम कैसे बोल रही हो; तुम्हारे गले में क्या हुआ?

गीना : (लैम्प के ऊपर शेड लगाकर) कुछ भी नहीं, ठीक तो बोल रही हूँ।

हजलमार : तुम्हारे हाथ भी काँप रहे हैं, बात क्या है?

गीना : (दृढ़ता से) सच-सच कहो, उस आदमी ने मेरे विषय में क्या-क्या बकवास की है?

हजलमार : तुम सच बताओ···जब तुम वर्ले साहब के यहाँ नौकरी करती थीं तो तुम लोगों में कोई सम्बन्ध नहीं था?

गीना : बिलकुल झूठ, तब कोई बात नहीं थी। बात यह थी कि वर्ले साहब तब भी मेरे पीछे पड़े रहते थे। ग्रेगर्स की माँ मुझ पर भी सन्देह करती रहती थी और रोज तूफ़ान खड़ा कर देती थी। उस औरत ने मेरी जान के लिए मुसीबत कर दी थी। मुझे पल-भर को चैन नहीं था। परेशान होकर मैंने नौकरी छोड़ दी।

हजलमार : तो फिर क्या हुआ?

गीना : नौकरी छोड़कर मैं अपने घर लौट गई। मेरी माँ···तुम्हें माँ की बात क्या बताऊँ। ग्रेगर्स की माँ मर गई थी। माँ मुझे ऊटपटाँग पट्टी पढ़ाती रहती थी।

हजलमार : हाँ, तो फिर क्या हुआ?

गीना : तुम पूछ रहे हो तो कहे देती हूँ। वह मेरे पीछे पड़े ही रहे, अपने मन की करके रहे।

हजलमार : (दोनों हाथों के पंजे फँसाकर) ओफ, ऐसी स्त्री है मेरी बेटी की माँ! तुमने यह बात मुझे अभी तक क्यों नहीं बताई थी?

गीना : मुझे क्षमा कर दो! मुझे बताने का साहस नहीं हुआ।

हजलमार : तुम्हें यही बात तो मुझे सबसे पहले बतानी चाहिए थी···मुझे मालूम तो हो जाता कि तुम कैसी औरत हो।

गीना : यह बता देती तो तुम मुझसे विवाह कर लेते ?

हजलमार : यह आशा तुम कैसे कर सकती हो ?

गीना : आशा नहीं कर सकती थी, इसीलिए बता सकने का साहस नहीं हुआ। तुम्हें नहीं मालूम, मैं तुम्हें कितना चाहने लगी थी। यह बात कहकर मैं अपने लिए इतनी बड़ी मुसीबत कैसे कर लेती।

हजलमार : (फिर कमरे में चहलकदमी करने लगता है) और यह है मेरी बेटी की माँ ! मुझे अब मालूम हुआ कि जो कुछ भी यहाँ है : (समीप की कुर्सी को ठोकर मारकर) यह सभी कुछ उसी आदमी की कृपा से है जो तुमसे भी खिलवाड़ कर रहा था।

गीना : चौदह-पन्द्रह वर्ष से मैं तुम्हारे साथ हूँ। इतने वर्षों में तुमने क्या देखा; उसके लिए तुम्हें पछतावा है ?

हजलमार : (पत्नी के सामने खड़ा हो जाता है) तुम यह बताओ, इतने बरस से तुम मुझे झूठ और फरेब के जाल में फँसाये हुए हो। क्या तुम्हारा मन इसके लिए कभी नहीं पछताया ? क्या कभी तुमने पछतावे और संताप की वेदना अनुभव नहीं की ?

गीना : मैं क्या सोचती, मुझे घर-गृहस्थी सँभालने और दुकान चलाने की नित्य चिंताओं से ही कब फ़ुरसत थी। मैं कब खाली बैठी जो और कुछ सोचती।

हजलमार : तो तुमने कभी अपने किये को सोचा ही नहीं ?

गीना : क्या सोचती ? भगवान् जाने, मेरे मन में वे बातें कभी आई ही नहीं।

हजलमार : और···संज्ञाहीन, भावहीन, निश्चिन्त पशु ! मैं तो इस खयाल से ही अधमरा हो गया हूँ कि तुम्हें अपने पाप के लिए कभी पल-भर का भी पछतावा और ग्लानि नहीं हुई।

गीना : मैं तुम्हीं से पूछती हूँ; तुम्हीं बताओ, तुम्हें मुझ-जैसी पत्नी न मिलती तो तुम्हारी ज़िन्दगी का क्या होता ?

हजलमार : तुम्हारे-जैसी पत्नी ?

गीना : मैं गलत नहीं कह रही हूँ। तुम्हारे धंधे को मैं ही चला रही हूँ। इस दुकान को चला सकना तुम्हारे बस का नहीं था। मानती हूँ, मैं तुमसे बरस-दो बरस बड़ी हूँ, मुझे अनुभव भी अधिक है।

हजलमार : क्या तुम्हारे बिना मेरा जीवन नहीं चल सकता था ?

गीना : मैं बिलकुल ठीक कह रही हूँ। तुम्हें याद नहीं; जब हमारा परिचय हुआ, तुम्हारा क्या हाल था ? तुम कैसी आदतों और

संगति में पड़े हुए थे ?

हजलमार : तुम बुरी आदतों और संगति की बात करती हो ? तुम यह नहीं समझ सकतीं कि जब मनुष्य मन पर लदे संताप और निराशा के बोझ से साँस न ले सके तो उसकी क्या अवस्था होगी···और विशेषकर मेरे-जैसे भावुक प्रकृति के व्यक्ति की !

गीना : मैं वह क्या जानूँ। मुझे उन कल्पनाओं के लिए समय कहाँ था। मुझे उसकी आवश्यकता भी क्या थी। मुझसे विवाह करके अपना घर बसा लेने के पश्चात् तुम वास्तव में सज्जन और सहृदय बन गए थे। हम शांति और सुविधा से रह रहे थे। हमारी अवस्था सुधरती गई। अब हेदविग और मैं भी पेट-भर खाने और कपड़े-लत्ते के लिए भी कुछ पाने लगी थीं···

हजलमार : हाँ, यह प्रवंचना की दलदल थी।

गीना : भगवान् उससे समझे। नकारा खामखाँ दाल-भात में मूसल बनकर कूद पड़ा।

हजलमार : मैं भी सोचता था कि मेरा अपना परिवार है, सुख-सुविधापूर्ण अपना घर है, परन्तु वह सब प्रवंचना थी। अब मेरा संसार में कौन है और किसके लिए मैं हूँ, कहाँ से मुझे अपना आविष्कार पूर्ण करने की प्रेरणा मिलेगी ? अब संभवतः मेरा आविष्कार मेरे साथ ही समाप्त हो जायगा, अपूर्ण रह जायगा और इस सबका उत्तरदायित्व, गीना ! तुम पर होगा; तुम्हारे अतीत के पापों पर होगा।

गीना : (उसकी आँखों में आँसू भर आते हैं) यह तुम क्या कह रहे हो ? मैंने जो कुछ किया, सदा तुम्हारे भले के लिए, तुम्हारे संतोष के लिए किया।

हजलमार : मैं तुमसे पूछता हूँ, तुम बताओ—अब मेरे स्वप्नों का···अपने परिवार की रक्षा के मेरे स्वप्नों का क्या होगा ? मैं जब सोफ़े पर लेटा-लेटा अपने आविष्कार के विषय में चिन्तन करता था तो मेरे सामने यही चित्र होता था कि इस आविष्कार को पूरा करने में मेरी सम्पूर्ण शक्ति और जीवन खप जायगा। मैं कल्पना करता था कि जब मेरी सफलता का शुभ दिन आयगा, जब अपने आविष्कार के एकाधिकार का पत्र मेरे हाथ में आ जायगा, वही समय इस संसार से मेरे कूच का होगा। मुझे इस कल्पना से संतोष होता था कि तुम आविष्कारक की विधवा पत्नी के रूप में अपना शेष जीवन आदर और समृद्धि में बिता सकोगी।

गीना : (आँसू पोंछकर) क्या वाहियात बातें बक रहे हो ! भगवान् न करे मेरा भाग्य ऐसे फूटे ! तुम्हारे बिना मैं एक दिन भी नहीं जीना चाहती ।

हजलमार : खैर, अब तो यह सब बातें व्यर्थ हैं। इन बातों से क्या लाभ। बस, जो होना था हो गया, सब समाप्त हो गया।

[जीने का दरवाजा धीरे से खुलता है और ग्रेगर्स झिझकता हुआ भीतर झाँकता है।]

ग्रेगर्स : मैं भीतर जा सकता हूँ ?

हजलमार : हाँ, आओ, आ जाओ !

ग्रेगर्स : (कमरे में आ जाता है। उसका चेहरा प्रसन्न और संतुष्ट है। वह भीतर आकर अपना हाथ हजलमार की ओर बढ़ा देता है।) कहो मित्र, क्या बात है, भाभी का क्या हाल ? (बारी-बारी से दोनों के चेहरों को ध्यान से देखता है और हजलमार की ओर झुककर धीमे से पूछ लेता है) अभी बात नहीं की ?

हजलमार : (ऊँचे स्वर में) बात हो गई।

ग्रेगर्स : हो गई ?

हजलमार : मेरे लिए यह जीवन के कठिनतम क्षण थे।

ग्रेगर्स : परन्तु मैं समझता हूँ, ऐसे ही क्षण मनुष्य को ऊँचा उठाते हैं।

हजलमार : खैर, जो भी हो—मैंने झगड़ा समाप्त कर दिया है, जो होना था हो गया।

गीना : ग्रेगर्स भाई, भगवान् ही तुम्हें समझेंगे।

ग्रेगर्स : (बहुत विस्मय से) क्या मैं समझा नहीं।

हजलमार : क्या नहीं समझे तुम ?

ग्रेगर्स : ऐसे महत्त्वपूर्ण शुभ क्षण में—जब तुम्हारी आँखों पर से भ्रम और अन्धकार का परदा दूर हो रहा है, जब तुम प्रवंचना को समाप्त करके नया जीवन आरम्भ कर रहे हो—जीवन के उस सहयोग को जिसका आधार निश्छल और पाप के कलुष से अछूता हृदय है···

हजलमार : हाँ-हाँ, ठीक है; रहने दो।

ग्रेगर्स : मुझे तो पूरा विश्वास था कि मैं यहाँ तुम्हें बिलकुल दूसरी अवस्था में देखूंगा। तुम दोनों के चेहरे नव-जीवन के प्रकाश से दीप्त होंगे, परन्तु यहाँ तो मैं निराशा, अवसाद और खेद का प्रभाव देख रहा हूँ।

गीना : (लैम्प के ऊपर से शेड हटाकर प्रकाश बढ़ा देती है।) और क्या देखोगे ?

ग्रेगर्स : मैं जानता हूँ भाभी, तुम मेरी बात नहीं समझ रही हो, परन्तु समय आयगा जब तुम समझोगी। परन्तु हजलमार तुम तो समझ रहे हो न ? तुम तो सचाई की पवित्रता के प्रकाश का प्रभाव हृदय पर अनुभव कर रहे हो ?

हजलमार : हाँ-हाँ, क्यों नहीं, कर ही रहा हूँ।

ग्रेगर्स : बिलकुल ठीक कहते हो। अपराध और पाप को क्षमा करके, अपराधियों और पापियों का प्रेम से उद्धार करके, उन्हें हृदय से लगा लेने से बड़ा सुख और संतोष संसार में दूसरा नहीं हो सकता है !

हजलमार : तुम क्या समझते हो, मेरे मन पर क्या बीता है ! क्या अपमान और वेदना को निगल जाना इतना ही सरल है ?

ग्रेगर्स : नहीं-नहीं। मैं जानता हूँ, साधारण व्यक्तियों के लिए वह सम्भव नहीं होगा, परन्तु तुम्हारे-जैसे व्यक्ति के लिए—

हजलमार : भगवान् जाने, यह सब तो मैं भी जानता हूँ। तुम इतना नहीं समझते कि सह सकने में समय लगता है। मुझे भी सँभलने में समय लगेगा।

ग्रेगर्स : हजलमार, यह तुम्हारी वही मुर्ग़ाबी की प्रवृत्ति है।

[जीने के दरवाजे से रैलिंग भीतर आ जाता है।]

रैलिंग : कहो भाई, क्या हो रहा है; फिर मुर्ग़ाबी की ही बात हो रही है ?

हजलमार : हाँ, उसे बुढ़ऊ वर्ल ने जख्मी कर दिया था न ?

रैलिंग : बुढ़ऊ वर्ल ? क्या वर्ल के विषय में बात कर रहे हो ?

हजलमार : हुँ···अपने बारे में भी।

रैलिंग : (ग्रेगर्स की ओर संकेत करके धीमे स्वर में) भगवान् इस शैतान से तुम्हें छुटकारा दिलाय !

हजलमार : क्या कह रहे हो ?

रैलिंग : मैं हृदय से यही प्रार्थना कर रहा हूँ कि यह मूढ़ ज्ञानी महाराज अपना आसन यहाँ से उठा ले, अपने घर जाय। ये यहाँ बने रहेंगे तो तुम दोनों को डूबो देंगे।

ग्रेगर्स : मि० रैलिंग, तुम चिन्ता मत करो। अब इन लोगों का कुछ नहीं बिगड़ सकता। हजलमार के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। उसे तुम भी जानते हो, मैं भी जानता हूँ। जहाँ तक भाभी का प्रश्न है, मुझे पूर्ण विश्वास है कि उसके हृदय में भी सद्भावना

और विश्वासपरायणता का अजस्र स्रोत बह रहा है।

गीना : (रुआँसे स्वर में) तो तुम्हें क्या आवश्यकता थी आकर मुझे परेशान करने की ? मुझे ऐसे ही रहने देते !

रैलिंग : (ग्रेगर्स को सम्बोधित करके) यदि बुरा न मानो तो मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ—तुम इन लोगों के यहाँ किस प्रयोजन से आये हो ?

ग्रेगर्स : मैं इन लोगों के सम्बन्ध को, इन लोगों के विवाह को सत्य और धर्म की नींव पर खड़ा करना चाहता हूँ।

रैलिंग : तुम्हें इन दोनों के सम्बन्ध और विवाह में क्या न्यूनता दिखाई देती है ?

ग्रेगर्स : हाँ, मैं जानता हूँ—इन लोगों का सम्बन्ध और विवाह वैसा ही है जैसे दूसरे लोगों के होते हैं, परन्तु इनके विवाह-सम्बन्ध को पवित्र विवाह का सम्बन्ध तो नहीं कहा जा सकता।

हजलमार : रैलिंग, तुमने कभी सोचने का प्रयत्न ही नहीं किया। किसी ने तुम्हें मानव-आदर्श की पूर्ति के कर्त्तव्य को समझाकर तुम्हारी आँखें नहीं खोलीं।

रैलिंग : क्या बक रहे हो मेरे यार···रहने दो। हाँ, तुम बताओ—ग्रेगर्स तुमसे पूछता हूँ, तुमने अपने जीवन में शुद्ध और पवित्र विवाह के कितने उदाहरण देखे हैं ?

ग्रेगर्स : मैं तो समझता हूँ, मैंने एक भी उदाहरण नहीं देखा।

रैलिंग : और मैंने भी नहीं देखा।

ग्रेगर्स : परन्तु मैंने दूसरे प्रकार के विवाहों और सम्बन्धों के सैकड़ों उदाहरण देखे हैं और मैं उन लोगों को देखकर इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि इस प्रकार के सम्बन्धों से स्त्री और पुरुष दोनों ही कितने गिर गए।

हजलमार : ऐसी स्थिति में किसी भी व्यक्ति का घोर नैतिक पतन हो सकता है। इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकती है !

रैलिंग : शायद तुम्हारी बात ठीक हो। मैंने कभी विवाह नहीं किया, इसलिए विवाहित जीवन के सम्बन्ध में मैं कोई बात अधिकार से नहीं कह सकता, परन्तु मैं यह अवश्य कह सकता हूँ कि सन्तान भी विवाह-सम्बन्ध का अंग होती है और तुम्हें सन्तान के जीवन पर आघात नहीं होने देना चाहिए।

हजलमार : आह हेदविग···मेरी बिटिया !

रैलिंग : भगवान् तुम्हें सुमति दे। कम-से-कम तुम लोगों को अपने झगड़े

के कारण हेदविग को परेशान नहीं करना चाहिए। तुम दोनों पक्की उमर के हो ! तुम अपने जीवन के साथ चाहे जो खिलवाड़ करो, उसमें हम दखल नहीं देंगे, परन्तु तुम्हें हेदविग का खयाल करना चाहिए। मैं तुम्हें सावधान किये देता हूँ कि तुम्हारी मूर्खता से उसका जीवन बरबाद हो सकता है।

हजलमार : जीवन बरबाद ?

रैलिंग : हाँ, तुम्हारे व्यवहार का यह भी परिणाम हो सकता है कि वह अपना सर्वनाश…और दूसरों का भी सर्वनाश कर बैठे।

गीना : रैलिंग भाई, आप क्या कह रहे हैं। इस बारे में आपको क्या मालूम ?

हजलमार : अभी तुरन्त तो उसकी आँखों के लिए कोई आशंका नहीं है, सच बताओ ?

रैलिंग : इस समय मैं उसकी आँखों के लिए आशंका की बात नहीं कह रहा हूँ। हेदविग की इस आयु में बहुत सावधानी की आवश्यकता है। इस समय किसी भी व्यवहार या घटना का उसकी मानसिक अवस्था पर प्रभाव पड़ सकता है, और वह विचित्र धारणाएँ बना लेगी।

गीना : मुझे भी यही चिन्ता है…मुझे तो लगता है, उस पर ऐसा ही कुछ असर हो रहा है। जाने क्यों, रसोई में जाकर बार-बार आग को उलटती-पलटती रहती है। कहती है, घर में आग लग जाय तो कैसा तमाशा हो। मुझे यही डर लगा रहता है कि किसी दिन सचमुच ही आग न लगा बैठे।

रैलिंग : सुन लो ! मुझे भी ऐसा ही जान पड़ रहा है।

ग्रेगर्स : (रैलिंग को सम्बोधित करके) परन्तु तुम लड़की की ऐसी मानसिक स्थिति का क्या कारण समझते हो ?

रैलिंग : (खिन्नता से) कारण क्या होगा, उसकी उमर है…वह जवान हो रही है।

हजलमार : जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं…जब तक मैं उसकी चिन्ता के लिए मौजूद हूँ…(जीने के दरवाजे पर आहट होती है)

गीना : सुनो-सुनो ! ठहरो, जीने में कोई है। (ऊँचे स्वर में पुकारती है) कौन है ? आइए !

[जीने के दरवाजे से सूरबी बाई आ जाती है। वह बाहर जाने की पोशाक पहने है।]

सूरबी बाई : नमस्ते, नमस्ते।

गीना : (आगन्तुक की ओर बढ़कर) अरे, आप हैं; आइए, बैठिये !

सूरबी बाई : हाँ भई, मैं ही हूँ मेरे इस समय आने से कोई उलझन तो नहीं होगी तुम्हें ? लगता है—तुम लोग कोई आवश्यक बात कर रहे थे।

हजलमार : ऐसी कोई बात नहीं है। उस घर से कोई भी सन्देश···

सूरबी बाई : (गीना की ओर देखकर) सच बात तो यह है, मेरा खयाल था—इस समय तुम अकेली मिलोगी, मर्द बाहर गये होंगे। शहर से बाहर जा रही हूँ। सोचा था, तुमसे मिल लूँ—तुमको नमस्ते कह आऊँ।

गीना : क्या यहाँ से बाहर जा रही हैं ?

सूरबी बाई : हाँ, कल सुबह ही चली जाऊँगी। होयदाल जी आ रही हूँ। वर्ल साहब आज दोपहर बाद चले गए। (ग्रेगर्स की ओर देखकर) आपको नमस्ते कह गए हैं।

गीना : पर क्यों ?

हजलमार : अच्छा, साहब चले गए ? आप उन्हीं के पास जा रही हैं न ?

सूरबी बाई : हाँ। क्यों, तुम्हारा क्या खयाल है ?

हजलमार : कुछ नहीं, बस यही कि जो कुछ करिये, सोच-समझकर करिये।

ग्रेगर्स : मैं बता दूँ, पिता जी सूरबी बाई से विवाह कर रहे हैं।

हजलमार : विवाह कर रहे हैं ?

गीना : हैं, बाई, क्या सचमुच ?

रैलिंग : (अस्पष्ट स्वर में) क्या यह सच है ?

सूरबी बाई : हाँ, डॉ० रैलिंग, सच है।

रैलिंग : बाई, क्या फिर विवाह कर रही हो ?

सूरबी बाई : हाँ, विवाह ही हो रहा है। साहब ने अदालत से विशेष आज्ञा ले ली है। होयदाल में विवाह होगा पर कोई तमाशा-जलसा नहीं करना है।

ग्रेगर्स : आप मेरी सौतेली माँ बनेंगी। आपके विवाह के लिए सौतेले बेटे की शुभकामनाएँ और बधाई।

सूरबी बाई : धन्यवाद, तुम्हारी शुभकामनाओं के लिए आशीर्वाद और तुम्हें भी बधाई। मुझे तो विश्वास है, इससे साहब को सुख और सन्तोष मिलेगा और मुझे भी।

रैलिंग : निश्चय, तुम्हारे लिए अच्छा ही होगा। मेरा खयाल है—साहब पियक्कड़ नहीं, स्वर्गीय घोड़ा डॉक्टर की तरह नशे में धुत्त नहीं होता, न अपनी पत्नियों को सताता है।

सूरबी बाई : बेचारे डॉ० साहब की चर्चा करने की क्या आवश्यकता है, वह

संसार से जा चुके हैं। भली-बुरी बातें सभी में होती हैं। उनमें अच्छाइयाँ भी थीं।

रैलिंग : मेरा खयाल है, वर्ल साहब में ज्यादा अच्छाइयाँ हैं।

सूरबी बाई : एक बात तो पक्की है, साहब अपने-आपको उजाड़ते-बिगाड़ते नहीं। जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा।

रैलिंग : आज तो मौलविक के साथ जाना ही पड़ेगा।

सूरबी बाई : रैलिंग, यह बुरी बात है। ऐसा नहीं करना—मेरी बात मानो, मेरी खातिर ही सही।

रैलिंग : तो फिर किया क्या जाय? (हजलमार की ओर देखकर) चाहो तो तुम भी साथ चलो!

गीना : नहीं, इन्हें रहने दीजिये। इन्हें आपके साथ ऐसी-वैसी जगह नहीं जाने दूंगी।

हजलमार : (दबे हुए स्वर में, खिन्नता से) तुम जरा चुप रहो।

रैलिंग : अच्छा नमस्ते श्रीमती जी···(जीने के दरवाजे से चला जाता है)।

ग्रेगर्स : (सूरबी बाई को सम्बोधित करके) डॉक्टर रैलिंग से तो आपका काफी परिचय जान पड़ता है।

सूरबी बाई : हाँ क्यों नहीं, काफी पुराना परिचय है। मैं उन्हें बरसों से जानती हूँ। शायद आपका संकेत है कि एक समय तो ऐसा भी जान पड़ता था कि हमारा परिचय, सम्बन्ध का रूप न ले ले।

ग्रेगर्स : भाग्य ने आपका साथ दिया। मेरा खयाल है, यह बात नहीं हुई तो अच्छा ही हुआ।

सूरबी बाई : आपकी बात ठीक हो सकती है। मैं भावनाओं में कभी नहीं बही। स्त्री के लिए भावुकता में बह जाना उचित भी नहीं।

ग्रेगर्स : आपको इस बात की आशंका नहीं हो सकती कि मैं आपकी पुरानी मित्रता का ज़िक्र पिताजी से कर दूं तो क्या होगा?

सूरबी बाई : मैंने स्वयं ही उन्हें सब-कुछ बता दिया है।

ग्रेगर्स : क्या···सचमुच?

सूरबी बाई : अपने विषय में मैंने आपके पिताजी को सभी कुछ, सभी घटनाएँ—जो भी राई-रत्ती सचाई थी, सभी बता दीं। उन्होंने अपना विचार प्रकट किया तो मैंने अपने विषय में सबसे पहले उन्हें सभी कुछ बता देना उचित समझा। अब उनके लिए कोई बात नई नहीं है।

ग्रेगर्स : तब तो मैं समझता हूँ, आप बहुत ही स्पष्टवादी हैं। साधारणतया ऐसी आशा नहीं की जा सकती।

सूरबी बाई : मुझे तो सदा से स्पष्ट बात पसन्द रही है। स्त्रियों का तो इसी में

कल्याण है।

हजलमार : (गीना की ओर देखकर) सुना तुमने, तुम्हारा क्या विचार है?

गीना : स्त्रियों का अपना-अपना विचार और स्वभाव होता है। सब एक-सी तो नहीं होतीं।

सूरबी बाई : गीना, मैं तो समझती हूँ कि भलाई, सीधी-स्पष्ट बात में होती है, इसीलिए मैंने ऐसा किया। वर्ल साहब ने भी अपनी कोई बात मुझसे छिपाकर नहीं रखी है। इसीलिए हम दोनों में कोई भेद और अन्तर नहीं, एक-दूसरे पर भरोसा कर सकते हैं। वे मुझसे सब बातें बच्चे की तरह निःशंक कह सकते हैं। यही बात तो उन्हें जीवन में पहले कभी नहीं मिली। अपने लड़कपन में, अपनी भूरी-पूरी जवानी के दिनों में जब वह स्वस्थ थे, उनमें शक्ति थी, उन्हें सदा सब-कुछ छिपाकर, पाप समझकर करना पड़ा। उनके मन पर सदा पाप की आशंका का बोझ छाया रहा। पाप भी क्या थे; मुझे तो लगता है, पापों की कल्पनाएँ ही थीं।

गीना : हाँ, यह तो ठीक है, ऐसी ही बात थी।

ग्रेगर्स : (सूरबी बाई और गीना को सम्बोधित करके) यदि आप लोग इसी प्रकार की बातें करना चाहती हैं तो मैं आज्ञा लूँ···

सूरबी बाई : नहीं-नहीं, आप जाते क्यों हैं, बैठिये! मुझे और कुछ नहीं कहना है। मैं तो आपको यही बता देना चाहती थी कि मैं कोई चाल नहीं चल रही हूँ, कोई प्रपंच नहीं कर रही हूँ, कोई बात छिपा नहीं रही हूँ। सम्भवतः तुम्हारा खयाल होगा कि मैं बहुत बड़ी सम्पत्ति पर हाथ मार रही हूँ। इस विवाह से साहब को क्या मिलेगा, मैं अपना स्वार्थ पूरा कर रही हूँ। गीना, तुम विश्वास रखो—इसमें मेरा स्वार्थ नहीं है। मैं उन्हें कभी छोड़ नहीं सकती। अब उनके पास रह ही क्या जायगा। इस समय मेरे सिवा और कौन उनकी चिन्ता करेगा।

हजलमार : उनके पास रह ही क्या जायगा!

ग्रेगर्स : (सूरबी बाई को सम्बोधित करके) उस बात की चर्चा यहाँ न कीजिए।

सूरबी बाई : साहब चाहें या न चाहें, उस बात को छिपाये रहने से कुछ नहीं बनेगा। उनकी नजर तो बच नहीं सकती।

हजलमार : (चौंककर) नजर नहीं बच सकती? यह क्या बात है? साहब की भी नज़र जाती रहेगी?

गीना : बहुत-से लोगों की नज़र चली जाती है।

सूरबी बाई : सोचो तो, साहब के लिए नज़र चली जाने से बड़ा संकट और क्या होगा ! किसी कारोबारी आदमी की नज़र चली जाय तो क्या करेगा ? मेरी आँखों से ही उनका भी काम चलेगा। अच्छा अब मैं चलूं, मुझे अभी बहुत-से काम निबटाने हैं···हाँ गीना, तुमसे एक बात कहने आई थी—यदि तुम्हें कभी कोई आवश्यकता हो तो और समझो कि साहब कुछ कर सकते हैं तो तुम निःसंकोच ग्राबर्ग से कह देना !

ग्रेगर्स : (व्यंग्य से) इस सन्देश के लिए तो···मैं समझता हूँ—हजलमार को अवश्य ही बहुत-बहुत आभारी होना चाहिए।

सूरबी बाई : क्यों, ऐसी क्या बात है ? मैं तो जानती हूँ, पहले भी···

गीना : बाई, ग्रेगर्स ठीक ही कह रहे हैं। अब 'इन्हें' साहब से किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता नहीं है, न चाहते ही हैं।

हजलमार : (आत्मसात्, धीमे स्वर में) बाई, आप मेरी ओर से साहब को सादर बहुत-बहुत धन्यवाद कहियेगा और कह दीजियेगा कि मैं जितनी जल्दी हो सकेगा, ग्राबर्ग से मिल लूंगा।

ग्रेगर्स : क्या तुम सचमुच उसके पास जाओगे ?

हजलमार : हाँ, मैं ग्राबर्ग से अवश्य मिलूंगा। मुझे उससे पूछना है कि मुझ पर उसके मालिक का कितना ऋण है ? उस ऋण को चुकाना मेरा कर्त्तव्य है। (अट्टहास से हँस देता है) हा-हा-हा, कितना गौरवपूर्ण ऋण है ! खैर, छोड़ो उस बात को। मैं पाई-पाई ऋण चुका दूंगा। पाँच प्रतिशत ब्याज भी दे दूंगा।

गीना : (खिन्नता से) हाय राम, क्या कह रहे हैं ? हमारे पास रुपया है ही कहाँ ?

हजलमार : (सूरबी बाई को सम्बोधित करके) अपने मालिक से कह देना कि मेरा आविष्कार जल्दी ही पूरा हो जायगा। तुम कह देना, उसके ऋण का बोझ मेरे लिए असह्य है। उस ऋण से मुक्ति के लिए ही मैं अपनी पूरी शक्ति से अथक परिश्रम कर रहा हूँ। उसी प्रयोजन से मैं इस आविष्कार के लिए जान दे रहा हूँ। आविष्कार के लिए मुझे जो धन मिलेगा, उस सबसे तुम्हारा मालिक जो कुछ भी मुझे पैसा-धेला देता रहा है, उसे पाई-पाई चुका दूंगा।

सूरबी बाई : लगता है, यहाँ कुछ झगड़ा हो गया है।

हजलमार : उसकी चिन्ता तुम न करो।

सूरबी बाई : अच्छा तो नमस्ते। (गीना की ओर देखकर) मैं तुमसे कुछ बात करने के लिए आई थी, अब फिर कभी सही। नमस्ते !

[हजलमार और ग्रेगर्स गर्दन के संकेत से सूरबी बाई की नमस्ते स्वीकार करते हैं। गीना सूरबी बाई के साथ जीने के दरवाजे की ओर जाती है।]

हजलमार : गीना, बाहर नहीं जाना। (सूरबी बाई बाहर चली जाती है। गीना दरवाजा बन्द कर देती है।) यह बहुत अच्छा हुआ ग्रेगर्स, इस ऋण के बोझ से मुक्ति मिली।

ग्रेगर्स : हाँ, अवश्य शीघ्र ही मुक्ति मिल जायगी।

हजलमार : क्या खयाल है, मैंने उचित व्यवहार किया ?

ग्रेगर्स : निश्चय, तुझे तो विश्वास था।

हजलमार : ऐसी परिस्थिति में मानव-आदर्श की पूर्ति के कर्त्तव्य की उपेक्षा कैसे की जा सकती है। मैं इस बोझ के नीचे तड़प-तड़पकर छटपटा रहा था। तुम्हें क्या बताऊँ, परिवार के पालन का उत्तरदायित्व सिर पर हो तो बरसों पुराना ऋण चुका देना मजाक नहीं। ऋण भी इतना पुराना कि उसका हिसाब याद रख सकना तक सम्भव नहीं, परन्तु करना तो था ही। मैं आत्म-गौरव को कैसे कुचल देता, उसका भी तो कुछ मूल्य है !

ग्रेगर्स : (हजलमार के कंधों पर दोनों हाथ रखकर) देखो मित्र, मेरे आने से ही तो यह सब हुआ ?

हजलमार : ठीक कहते हो।

ग्रेगर्स : तुम बताओ, यह अच्छी बात है कि पूरी परिस्थिति तुम्हारे सामने स्पष्ट हो गई ?

हजलमार : (अपनी चिन्ता दबाकर) हाँ अवश्य, अच्छा ही हुआ, परन्तु एक बात मुझे उचित नहीं लग रही है।

ग्रेगर्स : वह कौन-सी बात है ?

हजलमार : बात यह है···परन्तु मैं क्या बताऊँ, तुम्हारे पिता के सम्बन्ध में ऐसी बातें तुम्हारे सामने कैसे कह सकता हूँ।

ग्रेगर्स : मेरे सम्बन्ध में वैसी चिन्ता तुम बिलकुल न करो !

हजलमार : तुमसे क्या कहूँ, दोनों ओर की स्थिति देखता हूँ तो मन में कलक ही होती है। तथ्य तो यह है कि पवित्र विवाह के सम्बन्ध का सन्तोष भी मेरे नहीं, बल्कि साहब के ही भाग्य में है।

ग्रेगर्स : यह तुम क्या कह रहे हो ?

हजलमार : मैं बिलकुल ठीक कह रहा हूँ। तुम्हारे पिता और सूरबी बाई परस्पर पूर्ण विश्वास के आधार पर हृदय की पूर्ण निश्छलता से विवाह का सम्बन्ध स्थापित कर रहे हैं। वे दोनों परस्पर कुछ भी

नहीं छिपा रहे हैं। उनमें परस्पर किसी पाखण्ड और छलना का दुराव नहीं रहा है, बल्कि यह कहना उचित होगा कि उन्होंने एक-दूसरे के अपराधों और पापों के लिए उन्मुक्त हृदय से क्षमा दे दी है।

ग्रेगर्स : हो सकता है, यदि ऐसी वात है भी तो क्या हुआ ?

हजलमार : वाह, वही तो वास्तविक बात है। हमारी कठिन स्थिति में उसी वस्तु की तो आवश्यकता है। वैसे ही सम्बन्ध को पवित्र विवाह का आधार माना जा सकता है···तुमने स्वयं भी यही बात कही थी।

ग्रेगर्स : नहीं हजलमार, मैं बिलकुल दूसरी ही बात कह रहा हूँ। तुम अपनी और अपनी पत्नी की तुलना इन लोगों से कैसे कर सकते हो ?···तुम मेरा अभिप्राय समझते हो न ?

हजलमार : जो भी हो, मुझे तो यही लगता है कि इस स्थिति में मेरे प्रति न्याय नहीं हो रहा है। सब बातों पर ध्यान देकर मैं तो यही देखता हूँ कि ईश्वरीय न्याय-जैसी कोई वस्तु कहीं नहीं है।

गीना : हाय राम, क्या कहे जा रहे हो। कुछ तो डरो ऐसी बात तो न कहो।

ग्रेगर्स : हुँ !···मेरा विचार है, उस प्रश्न को छेड़ना उचित नहीं।

हजलमार : परन्तु मुझे तो दूसरी ही बात दिखाई देती है। सब बातों के बावजूद इसमें मुझे विधाता का हाथ स्पष्ट दिखाई दे रहा है। अन्त में वह अन्धा हो रहा है।

गीना : कौन जाने, पक्की बात थोड़े ही है, न भी हो।

हजलमार : नहां-नहीं, वह निश्चय ही अन्धा होगा। विधाता के न्याय में कैसे सन्देह किया जा सकता है। ऐसा न हो तो कर्मों का फल कैसे मिले ? कर्म-फल तो मिलता ही है। वह सदा ही भोले-भाले, ईमानदार लोगों को धोखा देकर अन्धा बनाता रहा है। उसका फल नहीं मिलेगा !

ग्रेगर्स : (गहरी साँस लेकर) हाँ, ऐसा तो उन्होंने बहुत लोगों के साथ किया है।

हजलमार : और अब अन्त में उसका समय आया है। कर्मों की अटल गति प्रतिफल में उसे अन्धता का दण्ड दे रही है। यह न्याय अनिवार्य है !

ग्रेगर्स : हाय राम, तुम क्या बके जा रहे हो। तुम्हें भय नहीं लगता। ऐसी बातों से मेरे दिल को कुछ होने लगता है।

हजलमार : मैं तो समझता हूँ, कभी जीवन के अन्धकार में भी डुबकी लग जानी चाहिए ! (हेदविग जीने के दरवाजे से लौट आती है। वह टोपी और कोट पहने हुए है। तेज चलने से वह हाँफ़ रही है। उसका चेहरा प्रसन्न और प्रफुल्ल है)।

गीना : अरी मुन्नी, लौट भी आई ?

हेदविग : अम्मी, दूर तक जाने को मन नहीं हुआ। अम्मी, अच्छा ही हुआ मैं लौट आई। बताइए, दरवाजे पर मैं किससे मिली थी ?

हजलमार : सूरबी बाई मिली होंगी।

हेदविग : हाँ-हाँ।

हजलमार : (कमरे में चहलकदमी करने लगता है) बेटी, अब उनसे बात नहीं करना। (हेदविग विस्मय से पल-भर सोचती है। उनके चेहरे की प्रफुल्लता गायब हो जाती है। वह बारी-बारी से पिता और माता की ओर देखकर स्थिति को भाँपने का यत्न करती है।)

हेदविग : (पिता के समीप जाकर स्नेह से पुकारती है) पापा !

हजलमार : क्यों ? क्या है हेदविग ?

हेदविग : सूरबी आंटी मेरे लिए कुछ लाई थीं ?

हजलमार : (कदम रोककर खड़ा हो जाता है) तुम्हारे लिए ?

हेदविग : हाँ पापा ! आंटी मुझे कल के लिए एक चीज़ दे गई हैं।

गीना : इसके जन्म-दिन पर सूरबी बाई सदा ही कुछ-न-कुछ भेजती हैं।

हजलमार : क्या दे गई है।

हेदविग : आंटी ने अभी दिखाने के लिए मना किया है। अम्मी को दे दूंगी। अम्मी कल सुबह मेरी आँख खुलते ही वह वस्तु मुझे देंगी।

हजलमार : यह तो कोई रहस्य है···सब रहस्य और छिपाव मुझसे ही है ?

हेदविग : (व्यग्रता से) नहीं-नहीं पापा, आप चाहे अभी देख लीजिये। एक बड़ा-सा पत्र है। (कोट की जेब से लिफाफा निकाल लेती है।)

हजलमार : क्या कहा···पत्र है ?

हेदविग : अभी केवल पत्र दे गई हैं। शायद उपहार कल भेज देंगी। पापा देखिये, पत्र मेरे नाम से है। लिखा है—कुमारी हेदविग एकदाल ! मेरे लिए पहली बार पत्र आया है।

हजलमार : जरा देखूं तो।

हेदविग : लीजिये। (पत्र पिता की ओर बढ़ा देती है।)

हजलमार : (पत्र को ध्यान से देखकर) यह तो बुढ़ऊ वर्ल के हाथ का लिखा हुआ है।

गीना : क्या, साहब ने लिखा है ?

हजलमार : तुम स्वयं देख लो। (पत्र गीना की ओर बढ़ा देता है।)

गीना : मुझे दिखा रहे हैं, मैं क्या जानूं।

हजलमार : हेदविग, मैं लिफाफा खोलकर पढ़ लूं ?

गीना : अभी क्यों खोलते हो ? कल के लिए दिया है तो कल ही पढ़ लेना !

हेदविग : (माँ की ओर देखकर धीमे से) अम्मी, क्या है, अभी पढ़ लेने दो, कोई अच्छी बात ही होगी। पापा पढ़कर प्रसन्न हो जायँगे तो फिर सबको अच्छा लगेगा।

हजलमार : मैं लिफाफा खोल लूँ ?

हेदविग : हाँ पापा, खोल लीजिये न, देखें, लिफाफे में क्या निकलता है ?

हजलमार : बहुत अच्छा। (लिफाफा फाड़कर पत्र निकाल लेता है। ज्यों-ज्यों पत्र को पढ़ता है, उसके चेहरे पर विस्मय का भाव आता जाता है।) इस सबका अभिप्राय क्या हो सकता है···। आखिर इसका मतलब क्या है ?

गीना : क्यों, क्या लिखा है ?

हेदविग : पापा, बताइये न !

हजलमार : जरा चुप रहो। (पत्र को बहुत ध्यान से दूसरी बार पढ़ता है। उसके चेहरे का रंग बदल जाता है। अपने-आपको सँभालकर बोलता है।) हेदविग, यह तो तुम्हारे नाम दान-पत्र है।

हेदविग : सचमुच पापा जी, मुझे क्या मिलेगा ?

हजलमार : तुम स्वयं पढ़ लो। (लड़की पत्र लेकर लैम्प के समीप जाकर पढ़ती है। हजलमार हाथों की उँगलियों को आपस में फँसा लेता है। स्वतः बोल पड़ता है।) आँखें ! आँखें···और यह पत्र···

हेदविग : (पत्र से आँखें उठाकर) हाँ पापा, मुझे तो लगता है कि वह पिताजी को मिलेगा।

हजलमार : (लड़की से पत्र लेते हुए) गीना, तुम्हारा क्या खयाल है, इसका क्या मतलब है ?

गीना : मैं क्या जानूं, तुम्हीं बताओ क्या है।

हजलमार : बुढ़ऊ वर्ले ने हेदविग के नाम लिखा है—अब तुम्हारे दादा जी को दस्तावेज नकल करने के काम की परेशानी उठाने की आवश्यकता नहीं होगी। दफ़्तर से उन्हें प्रतिमास सौ रुपये मिलते रहेंगे···

ग्रेगर्स : ओहो !

हेदविग : सच अम्मी, सौ रुपये ! मैंने पढ़ा है।

गीना : अच्छा है, पिता जी को आराम हो जायगा।

हजलमार : सौ रुपये महीना, जब तक वह चाहें ! अभिप्राय स्पष्ट है, जब तक जीवित हैं।

गीना : बहुत अच्छा हुआ, बेचारों के बुढ़ापे में सहारा हो गया।

हजलमार : नहीं, और भी है हेदविग, तुमने पूरी बात नहीं पढ़ी। पिता जी के बाद यह दान तुम्हारे नाम हो जायगा।

हेदविग : मेरे नाम···सब रुपये ?

हजलमार : पत्र में लिखा है कि इतना रुपया प्रतिमास तुम्हें आयु-भर मिलता रहेगा। गीना, सुना !

गीना : हाँ-हाँ सुन रही हूँ।

हेदविग : अहा—पापा ! (पिता की बाँह झटककर) मुझे इतना रुपया मिलेगा ! पापा, तब तो बहुत अच्छा हो जायगा न !

हजलमार : (लड़की से परे हटकर) अच्छा हुआ ! (खिन्नता से चहलकदमी करने लगता है) इस सबका क्या मतलब है···वह यह क्या कर रहा है ? उसे चिन्ता हेदविग की ही है। उसकी यह सब उदारता हेदविग के ही लिए है।

गीना : हाँ, कल लड़की का जन्म-दिन है न···

हेदविग : पापा, मुझे मिलेगा तो आपको भी तो मिलेगा। मैं तो सब रुपया अम्मी को और आपको दे दूंगी।

हजलमार : हाँ, अपनी माँ को···हाँ, यही तो रहस्य है।

ग्रेगर्स : हजलमार, तुम पर जाल डाला जा रहा है।

हजलमार : यही खयाल है न, तुम्हारा भी ? यह जाल है न ?

ग्रेगर्स : आज सुबह जब यहाँ आये थे तब उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं तुम्हें ठीक से नहीं पहचान पाया हूँ—तुम वैसे आदमी नहीं हो।

हजलमार : वैसा आदमी···

ग्रेगर्स : हाँ, मुझे कह रहे थे···देख लेना।

हजलमार : हाँ, दिखा दूंगा कि मैं इस रिश्वत का क्या उत्तर देता हूँ।

हेदविग : अम्मी, क्या बात है ?

गीना : तुम यहाँ क्या कर रही हो, जाकर कपड़े क्यों नहीं बदलतीं ? (हेदविग की आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह रसोई की ओर चली जाती है।)

ग्रेगर्स : हजलमार, अब स्पष्ट हो जायगा कि मेरी बात ठीक है या उनकी।

हजलमार : (पत्र को फाड़कर दो टुकड़े करके मेज पर फेंक देता है।) यह है

मेरा उत्तर···देख लिया !

ग्रेगर्स : मुझे यही आशा थी ।

हजलमार : (अँगीठी के समीप खड़ी गीना के पास जाकर धीमे स्वर में बोलता है) अब झूठ और फरेब नहीं चलेगा। तुम कहती हो, जब तुम मुझसे प्रेम करने लगीं, उसे तुमसे कोई मतलब नहीं रहा था। यदि ऐसी बात थी तो उसे हम दोनों का विवाह करवा देने की चिन्ता क्यों थी ?

गीना : मैं क्या बताऊँ···यही सोचते होंगे कि हम लोग उनका आदर करते रहेंगे। वे यहाँ कभी-कभी आते-जाते रहेंगे।

हजलमार : बस, यही बात···उसे किसी और बात की आशंका नहीं थी ?

गीना : मुझे क्या मालूम, जाने तुम क्या कह रहे हो।

हजलमार : मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या तुम्हारी लड़की को मेरे घर में रहने का अधिकार है ?

गीना : (उसकी आँखें सुर्ख हो जाती हैं, बहुत गहरा साँस ले लेती है) क्या पूछा तुमने ?

हजलमार : तुम्हें उत्तर देना होगा। हेदविग किसकी लड़की है, मेरी या···? बोलो !

गीना : (हजलमार की ओर उपेक्षा से देखकर) मुझे नहीं मालूम।

हजलमार : (क्रोध से रुँधे स्वर में) तुम्हें नहीं मालूम ?

गीना : क्या बता सकती हूँ मैं ? मेरे-जैसी स्त्री···

हजलमार : (गीना की ओर मुँह फेरकर) अब इस घर से मेरा कोई सम्पर्क नहीं है।

ग्रेगर्स : हजलमार, सोच-समझकर बात करो !

हजलमार : (खूँटी से ओवर कोट उतारकर पहनते हुए) मेरे जैसे आदमी के लिए अब क्या है···सोचने-समझने के लिए क्या रह गया है ?

ग्रेगर्स : नहीं-नहीं, मित्र अब ही तो सोचने का समय आया है। तुम तीनों का एक साथ रहना तो नितान्त आवश्यक है। उसी अवस्था में तुम क्षमा और अहं के त्याग के आदर्श को प्राप्त कर सकोगे।

हजलमार : नहीं-नहीं, मुझे उसकी कोई चिन्ता नहीं। मेरी टोपी कहाँ है ? (अपनी टोपी ले लेता है।) मेरा घर समाप्त हो गया, मेरा संसार समाप्त हो गया। (आँखों में आँसू आ जाते हैं।) ग्रेगर्स, अब मेरा संसार में कोई नहीं, न पत्नी, न लड़की।

हेदविग : (रसोई का दरवाजा खोलकर पुकार लेती है) पापा···क्या कह रहे हैं ? (पिता जी के समीप आ जाती है।) पापा !—पापा !

गीना : हाय राम, तुम्हें क्या हो रहा है ?

हजलमार : (लड़की को पीछे हटाते हुए) यहाँ मत आओ !—हट जाओ—चली जाओ ! मेरी आँखों के सामने से हट जाओ ! ओफ़, आँखें ! मुझे जाने दो। (जीने के दरवाजे की ओर बढ़ जाता है।)

हेदविग : (दौड़कर पिता से चिपट जाती है और चीख उठती है।) नहीं—नहीं ! पापा नहीं जाइए !

गीना : (रो उठती है) क्या कर रहे हो—? लड़की का तो खयाल करो !

हजलमार : नहीं, मुझे जाने दो। मैं नहीं ठहरूँगा। मैं यहाँ नहीं रह सकता। परे हट जाओ ! (लड़की को दूर हटा देता है और जीने के दरवाजे से चला जाता है।)

हेदविग : (आँसू बहाते हुए निराशा से) अम्मी, पापा जी चले गए···हमें छोड़कर चले गए, अब नहीं आयँगे !

गीना : रो मत बेटी, पापा आ जायँगे···लौट आयँगे।

हेदविग : (सोफ़े पर गिरकर फूट-फूटकर रोने लगती है) नहीं-नहीं, नहीं आयँगे···पापा नहीं आयँगे।

ग्रेगर्स : भाभी, विश्वास रखो, मैंने तो तुम सबकी भलाई के लिए ही यह किया था।

गीना : भगवान् जाने, तुमने भलाई के लिए ही किया होगा। तुम्हारा भला हो।

हेदविग : (सोफ़े पर मुँह छिपाये हुए) हाय, मैं मर जाऊँगी। हाय, मुझसे क्यों नाराज हो गए ? अम्मी, पापा जी को बुलाओ !

गीना : बेटी, तुम चुप रहो, रोओ मत। मैं अभी जाकर तुम्हारे पापा को बुला लाती हूँ। (बाहर जाने के लिए कोट पहन लेती है।) शायद, नीचे डॉक्टर के यहाँ गये होंगे। तुम चुप हो जाओगी तो मैं उन्हें बुलाने जाऊँगी। कह दो, नहीं रोओगी !

हेदविग : (सिसकियाँ लेते हुए) तुम पापा को बुला लो ! पापा आ जायँगे तो मैं नहीं रोऊँगी !

ग्रेगर्स : (बाहर जाती हुई गीना को सम्बोधित करके) भाभी मेरा खयाल है, जरा ठहरो ! उसे मन को स्थिर कर लेने का, निर्णय कर लेने का समय दो।

गीना : वह सब करते रहेंगे। पहले लड़की को सँभालना है। (बाहर चली जाती है।)

हेदविग : (सोफ़े पर सीधी बैठकर आँखें पोंछ लेती है) चाचा जी, सच

बताइए, क्या बात है ? पापा मुझसे क्यों नाराज हो गए हैं···क्यों चले गए ?

ग्रेगर्स : तुम अभी नहीं समझोगी। जब तुम बड़ी हो जाओगी, तब ऐसी बातों को समझ सकोगी।

हेदविग : (आँसू निगलकर) मैं छोटी हूँ तो मैं रोती रहूँ ? मैं जब तक बड़ी हो जाऊँ, क्या ऐसे ही रोती-छटपटाती रहूँ ? मैं समझ गई हूँ, क्या बात है···शायद मैं वास्तव में पापा की बेटी नहीं हूँ ?

ग्रेगर्स : (दुविधा से) हैं, यह तुम क्या कह रही हो ?

हेदविग : अम्मी को मैं कहीं मिल गई होऊँगी और अब पापा को पता लग गया है। मैंने पुस्तकों में ऐसी कई बातें पढ़ी हैं···

ग्रेगर्स : अच्छा मान लो, अगर ऐसी ही बात है तो···

हेदविग : हाँ, ऐसा है तो भी पापा मुझे प्यार कर सकते हैं, चाहें तो और भी ज्यादा प्यार कर सकते हैं। मुर्ग़ाबी भी तो बाहर से आई है, तो भी मैं उससे कितना प्यार करती हूँ।

ग्रेगर्स : (प्रसंग बदलने के लिए) मुर्ग़ाबी···हाँ, तुम ठीक तो कह रही हो। अच्छा, मुर्ग़ाबी अब कैसी है ?

हेदविग : हाय बेचारी मुग़ाबी। पापा मुर्ग़ाबी से नाराज हो गए हैं। क्या बताऊँ कहते थे— दिल चाहता है उसकी गर्दन मरोड़ डालूँ।

ग्रेगर्स : नहीं-नहीं, डरो मत, वे ऐसा नहीं कर सकते।

हेदविग : हाँ, कर तो नहीं सकते, परन्तु उन्होंने कहा तो मुझे बहुत डर लगा। मैं तो रात को नित्य मुर्ग़ाबी के लिए भगवान् से प्रार्थना करती हूँ—भगवान् संकट और मृत्यु से उसकी रक्षा करना।

ग्रेगर्स : (लड़की की ओर ध्यान से देखकर) तुम प्रार्थना रात को करती हो ?

हेदविग : जी हाँ।

ग्रेगर्स : प्रार्थना करना तुम्हें किसने सिखाया ?

हेदविग : मैंने स्वयं ही सीख लिया। एक बार पापा बहुत बीमार हो गए थे, उनकी गर्दन पर जोंकें लगानी पड़ी थीं। लोग कहते थे, बचेंगे नहीं।

ग्रेगर्स : अच्छा, ऐसी बात थी ?

हेदविग : उस दिन जब मैं सोने के लिए बिस्तर में लेट गई तो मैंने भगवान् से प्रार्थना की थी। तब से नित्य प्रार्थना करती हूँ।

ग्रेगर्स : अब तुम मुर्ग़ाबी के लिए भी प्रार्थना करती हो ?

हेदविग : जी हाँ, जब मुर्ग़ाबी आई थी तो बीमार और कमज़ोर थी तो मैंने

सोचा, उसके लिए भी प्रार्थना करूँगी तो वह चंगी हो जायगी।

ग्रेगर्स : तुम प्रातः भी प्रार्थना करती हो ?

हेदविग : जी नहीं, प्रातःकाल तो नहीं करती।

ग्रेगर्स : क्यों, प्रातः प्रार्थना क्यों नहीं करती ?

हेदविग : प्रातःकाल तो खूब प्रकाश होता है। प्रकाश में तो कोई भय नहीं होता।

ग्रेगर्स : सुनो, तुम मुर्ग़ाबी को बहुत प्यार करती हो और तुम्हारे पापा उसकी गर्दन मरोड़ देने को कहते थे ?

हेदविग : नहीं, नहीं, मरोड़ेंगे नहीं; बस कह रहे थे कि उनका मन चाहता था, परन्तु ऐसा करेंगे नहीं। वह मुझे बहुत प्यार करते हैं। पापा बहुत अच्छे हैं।

ग्रेगर्स : (हेदविग की ओर बढ़कर) अच्छा तुम यह बताओ, यदि आवश्यकता हो तो तुम पापा के लिए मुर्ग़ाबी को भी कुर्बान नहीं कर सकती हो ?

हेदविग : (उठकर खड़ी हो जाती है) मुर्ग़ाबी को...

ग्रेगर्स : तुम यह बताओ, यदि तुम्हें पापा के लिए स्वयं अपनी इच्छा से, संसार में अपनी सबसे प्यारी वस्तु कुर्बान कर देनी पड़े तो तुम उसे कुर्बान कर दोगी ?

हेदविग : तो पापा लौट आयँगे !

ग्रेगर्स : हेदविग, यत्न करके देखना तो चाहिए।

हेदविग : (लड़की की आँखें चमक उठती हैं और स्वर कोमल हो जाता है) अच्छा, मैं कर दूँगी।

ग्रेगर्स : सोच लो, कर सकोगी ?—इतना साहस है—पूरा विश्वास है ?

हेदविग : मैं पिताजी से कह दूँगी, मुर्ग़ाबी को गोली मार दें।

ग्रेगर्स : अच्छा, यह ठीक है परन्तु अम्मी से इस विषय में बिलकुल कोई बात न करना।

हेदविग : क्यों—अम्मी से क्यों नहीं ?

ग्रेगर्स : वह हमारी बात नहीं समझेंगी।

हेदविग : मुर्ग़ाबी की—अच्छा, मैं प्रातः ही करवा दूँगी। (गीना जीने के दरवाजे से आ जाती है। हेदविग माँ की ओर चली जाती है।) अम्मी, पापा मिले ?

गीना : बेटी, मिले नहीं परन्तु पता लग गया कि रैलिंग के साथ बाहर गये हैं।

ग्रेगर्स : क्या ठीक पता लिया है ?

गीना : जी हाँ, चौकीदारिन ने बताया है। कह रही थी मौलविक भी

उन्हीं के साथ गया है।

ग्रेगर्स : ऐसी अवस्था में—ऐसी अवस्था में तो उसे एकांत में गूढ़ चिन्तन द्वारा अपने मन पर विजय पाने की नितान्त आवश्यकता थी—

गीना : (टोपी और कोट उतारते हुए) अरे, मर्दों की भली कही—कौन जाने कब क्या करेंगे। भगवान् जाने, रैलिंग उन्हें कहाँ ले गया है। बुढ़िया एरिक्सन की हॉल में देख आई, वहाँ तो नहीं थे।

हेदविग : (आँसुओं को रोकती हुई) अम्मी, यदि पापा नहीं लौटे तो?

ग्रेगर्स : घबराओ नहीं, तुम्हारे पापा निश्चय ही आ जायँगे। मुझे प्रातः उन्हें एक संदेश देना है। देख लेना, वे अवश्य आयँगे। तुम घबराओ नहीं, विश्वास रखो। जाओ, सो जाओ। नमस्ते! (जीने के दरवाजे से चला जाता है)।

हेदविग : (माँ से चिपटकर सिसकियाँ लेने लगती है) अम्मी-अम्मी!

गीना : (आह भरकर बेटी के सिर और पीठ पर हाथ फेरती है) वही बात है—रैलिंग ठीक कह रहा था। पागल लोग आकर बे-सिर-पैर के आदर्शों की बातें बकेंगे तो यही होगा।

पंचम अंक

[दृश्य : हजलमार एकदाल का स्टूडियो। खिड़कियों से हेमन्त के प्रभात की धुँधली निस्तेज धूप भीतर आ रही है। छत की खिड़कियों में काँच के बड़े-बड़े चौकोर टुकड़ों पर चिपकी हुई बरफ सूर्य की किरणों के स्पर्श से पसीज रही है। गीना रसोई के द्वार से निकलती है। वह घर के काम-काज के समय कपड़ों को दाग-धब्बों से बचाने के लिए कमर पर एप्रिन बाँधे है। उसके एक हाथ में झाड़ू है, और दूसरे हाथ में झाड़न है। वह बैठक के दरवाजे की ओर जा रही है। उसी समय हेदविग जीने से झपटती हुई आ जाती है।]

गीना : (हेदविग को देखकर ठिठक जाती है) क्या है ?

हेदविग : अम्मी, मैं बताऊँ—पापा शायद नीचे डॉक्टर अंकल के कमरे में हैं...

गीना : क्या कह रही हो ?

हेदविग : अम्मी, चौकीदारिन कह रही है कि डॉ० अंकल रात में लौटे थे तो उसने उनके साथ दो और आदमियों के आने की आहट सुनी थी।

गीना : सोच तो मैं भी यही रही थी।

हेदविग : परन्तु यह तो अच्छी बात नहीं। पापा अंकल के कमरे में हैं तो यहाँ क्यों नहीं आए ?

गीना : अच्छा देखा जायगा, मैं नीचे जाकर उनसे बात करूँगी।

[बुढ़ऊ एकदाल अपने कमरे से आ जाते हैं। वे रात का लंबा चोंगा पहने हैं। पाँव में सलीपर हैं और पाइप सुलगाये हुए हैं।]

एकदाल : सुनो हजलमार…हजलमार नहीं है ?

गीना : नहीं, बाहर गये हैं।

एकदाल : इतनी सुबह ? बाहर तो बहुत जोर की बर्फ़ानी आँधी है ? अच्छा-अच्छा, वह जाने, उसका काम जाने। मैं सुबह की सैर के लिए अकेला ही जा रहा हूँ।

[बुढ़ऊ बरसाती के दरवाजे को खोलने के लिए खींचते हैं। हेदविग बढ़कर उनकी सहायता करती है। बुढ़ऊ बरसाती में चले जाते हैं तो हेदविग दरवाजे को खींचकर बन्द कर देती है।]

हेदविग : (माँ की ओर देखकर दबे हुए स्वर में) अम्मी सुनो, पिता जी को मालूम होगा कि पापा घर छोड़कर चले गए हैं तो वह क्या कहेंगे ?

गीना : चुप रह···पिता जी से कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। भगवान् ने बहुत दया की, कल वह सब झगड़ा यहाँ चल रहा था तो पिता जी नहीं थे।

हेदविग : परन्तु अम्मी। (जीने के दरवाजे से ग्रेगर्स स्टूडियो में आ जाता है।)

ग्रेगर्स : कहिये, हजलमार की कोई खबर मिली ?

गीना : सुना है, शायद नीचे डॉक्टर के यहाँ हैं।

ग्रेगर्स : रैलिंग के यहाँ—क्या कल उसी के साथ बाहर गये थे ?

गीना : और क्या, कल उन्हीं के साथ गये होंगे।

ग्रेगर्स : अच्छा, परन्तु वह···पर उसे अपना चित्त स्थिर करना चाहिए था। उसके लिए तो एकान्त में बैठकर मनन करना नितान्त आवश्यक था।

गीना : हाँ, हो सकता है···आप ठीक ही कह रहे हों।

[जीने के दरवाजे से रैलिंग आ जाता है।]

हेदविग : (रैलिंग की ओर बढ़कर) अंकल, पापा जी आपके यहाँ हैं ?

गीना : (बेटी के साथ ही बोल पड़ती है।) आपके कमरे में हैं ?

रैलिंग : हाँ-हाँ, मेरे यहाँ ही है।

हेदविग : आपने हमें बताया ही नहीं।

रैलिंग : हाँ, यह बेवकूफी तो हुई परन्तु सबसे बड़ी मुसीबत तो उस असुर पण्डित—मेरा अभिप्राय है—पादरी को समझने की थी और फिर मुझे ऐसी नींद आ गई कि कुछ सुध ही नहीं रही···

गीना : आज कुछ कहा उन्होंने ?

रैलिंग : चुप बैठा है।

हेदविग : पापा ने आपसे बिलकुल बात नहीं की ?

रैलिंग : बिलकुल नहीं बोला।

ग्रेगर्स : हाँ-हाँ, कैसे बोलेगा; मैं समझता हूँ।

गीना : तो फिर कर क्या रहे हैं ?

रैलिंग : सोफ़े पर पड़ा है, खर्राटे ले रहा है।

गीना : अच्छा ? खर्राटे तो सचमुच बहुत जोर से लेते हैं।

हेदविग : सो रहे हैं; क्या नींद आ गई ?

रैलिंग : और क्या कहूँ, सोया हुआ ही लगता है।

ग्रेगर्स : हाँ-हाँ, समझ में आता है। इतने विकट मानसिक संघर्ष से क्षुब्ध आदमी थक ही जायगा।

गीना : उन्हें रात में बाहर घूमने की आदत भी तो नहीं है।

हेदविग : अम्मी, मैं बताऊँ, पापा को नींद आ गई तो अच्छा ही है।

गीना : हाँ, अच्छा ही है, अभी उठाना ठीक नहीं है, सो लेने दो। डॉक्टर साहब आपने बहुत मेहरबानी की। आप जरा बैठिये, मैं तब तक उधर जल्दी से झाड़-बुहार लूँ; सब-कुछ उलट-पलट पड़ा हुआ है। तब फिर···हेदविग तू भी आ जा, जरा हाथ बटा।

[गीना और हेदविग दोनों बैठक में चली जाती हैं।]

ग्रेगर्स : (रैलिंग को सम्बोधित करके) क्यों भाई डॉक्टर क्या कहते हो—हजलमार की आत्मा में जो संघर्ष चल रहा है, उसके विषय में तुम्हारा क्या खयाल है?

रैलिंग : जहाँ तक मैं समझ सका हूँ, मुझे तो उसमें आत्मिक संघर्ष का कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया।

ग्रेगर्स : क्या कहते हो! वह कितने विकट मानसिक संघर्ष के भँवर में फँसा है। उसके सम्पूर्ण जीवन की नींव ही बदल रही है। तुम कैसे कल्पना कर सकते हो कि हजलमार-जैसे आदमी का व्यक्तित्व...

रैलिंग : व्यक्तित्व !—उसका व्यक्तित्व ? यदि हजलमार में विशिष्टता की—जिसे तुम व्यक्तित्व कहते हो—कभी कोई सम्भावना रही भी होगी तो विश्वास रखो, हजलमार के लड़कपन में ही उसका सफ़ाया हो चुका है।

ग्रेगर्स : तुम भी क्या कह रहे हो। जैसे स्नेह और सावधानी से उसका लालन-पालन हुआ है, उस परिस्थिति में उसके व्यक्तित्व के समाप्त हो जाने का क्या कारण हो सकता था ?

रैलिंग : ओहो, तुम हजलमार की उन दोनों आधी पागल, सनकी, संडी मौसियों की बात कह रहे हो ?

ग्रेगर्स : तुम नहीं जानते, वे दोनों महिलाएँ बहुत ही धर्मभीरु···लेकिन ऐसी बात का तो तुम मज़ाक बनाने लगोगे।

रैलिंग : नहीं-नहीं, मैं मजाक क्यों करूँगा। मैंने उनके विषय में काफी सुना है। हजलमार से मैंने उन 'देवियों' की बहुत स्तुति सुनी है, परन्तु मैं नहीं समझता कि उनकी कृपा से उस आदमी का बहुत कल्याण हुआ है। उसका यही दुर्भाग्य रहा है कि लोग उसे सदा 'देवता' बनाये रहे, उसके पाँव धरती पर नहीं टिकने दिये, उसे आदमी नहीं बनने दिया।

ग्रेगर्स : तुम उसे बिलकुल साधारण व्यक्ति समझते हो? उसकी गहरी सूझ और प्रतिभा से इन्कार कर सकते हो?

रैलिंग : मैंने तो उसमें कभी प्रतिभा का कोई लक्षण नहीं देखा। हाँ, उसके पिता को अवश्य उसकी प्रतिभा पर विश्वास था। बुढ़ऊ तो उम्र-भर निरे बैल ही रहे।

ग्रेगर्स : इसमें क्या सन्देह है, निश्चय ही उनका हृदय आयु-भर बालकों के समान सरल रहा, परन्तु तुम तो वह बात समझना ही नहीं चाहोगे।

रैलिंग : होगा। वास्तव में तो तुम्हारा यह दुलरवा हजलमार, स्कूल में भरती हुआ ही था तो लोगों ने सिर चढ़ा लिया, विशेष होनहार—भावी महापुरुष समझा जाने लगा। पोंगा, देखने में तो गोरा-गदब्रदा था ही—जैसे छोकरों को छोकरियाँ कन्हैया मान बैठती हैं! छुई-मुई-सा स्वभाव, आवाज भी अच्छी थी। प्रतिभाशाली बन बैठे। दूसरे लड़कों की बात या तुकबन्दी पर इनकी नाक चढ़ जाती···

ग्रेगर्स : (खिन्नता से) तुम हजलमार के लिए कैसी बातें कर रहे हो?

रैलिंग : जी हाँ, बुरा न मानिये—वास्तविकता तो उसकी यही थी। तुम उसे सिर पर चढ़ाकर उसे चाहे जितना पूजते रहे हो।

ग्रेगर्स : हम लोगों के भी तो आँखें थीं, हम लोग अंधे तो नहीं थे।

रैलिंग : आँखें तुम्हारे जरूर होंगी, परन्तु मैं तथ्य ही कह रहा हूँ। तुम्हारी तो अपनी ही समझ में फेर है।

ग्रेगर्स : हाँ, समझ की बात ठीक है।

रैलिंग : बिलकुल ठीक, तुम्हारी अपनी समझ में ही चक्कर है। एक तो तुम्हारे आदर्शवाद के ज्वर की गर्मी से तुम्हारा दिमाग ठीक नहीं रहता, दूसरे तुम पर लोगों को देवता बनाने का जुनून सवार रहता है। तुम्हें उनसे लेना-देना कुछ नहीं, व्यर्थ में उन्हें सिर पर चढ़ाकर उनका दिमाग खराब कर देते हो।

ग्रेगर्स : मुझे किसी से कुछ लेना-देना नहीं इसलिए तो मैं निःस्वार्थ भाव से देख और समझ सकता हूँ।

रैलिंग : परन्तु तुम्हारी समझ में ही फेर है। तुम आँखों के सामने तिनका रखकर उसकी ओट में पहाड़ की कल्पना कर लेते हो। तुम्हें सभी जगह देवता मिल जाते हैं। यहाँ भी तुमने एक देवता फँसा लिया है और मानव-आदर्श की पूर्ति के कर्त्तव्य का किला रेत की नींव पर खड़ा कर देना चाहते हो। परन्तु बेचारे इस घर में रहने वाले

लोग तो पहले ही पोले हो चुके हैं।

ग्रेगर्स : हजलमार को तुम सचमुच इतना निकम्मा आदमी समझते हो तो तुम्हें सदा उससे चिपके रहने में क्या सन्तोष मिलता है ?

रैलिंग : भगवान् तुम्हें सुमति दे। तुम्हें तो विश्वास नहीं परन्तु लोग समझते हैं कि मैं डॉक्टर हूँ। डॉक्टर होने के नाते यह मेरा कर्त्तव्य है कि अपने साथ रहने वाले बीमार लोगों का खयाल रखूँ।

ग्रेगर्स : अच्छा, तो हजलमार भी बीमार है, उसका भी दिमाग ठीक नहीं ?

रैलिंग : यही बात है। संकट तो यह है कि संसार में सही दिमाग वाले लोग मुश्किल से ही मिलते हैं।

ग्रेगर्स : हजलमार की बीमारी का तुम क्या उपचार कर रहे हो ?

रैलिंग : ऐसे लोगों के लिए एक ही औषधि है कि इन लोगों के जीवन से आशा का भ्रम न मिट जाय।

ग्रेगर्स : आशा का भ्रम ? क्या कहा तुमने…फिर से कहो !

रैलिंग : हाँ, ठीक है। मैंने कहा—आशा का भ्रम ही ऐसे लोगों को जीवन में स्फूर्ति दे सकता है।

ग्रेगर्स : मैं यह पूछ सकता हूँ कि हजलमार के जीवन के लिए तुमने किस प्रकार की आशा का भ्रम तजवीज किया है ?

रैलिंग : नहीं, यह तुम्हें नहीं बता सकता। इस प्रकार के रहस्य मैं लाल-बुझक्कड़ों को बताना उचित नहीं समझता। तुम तो उसकी स्थिति को और भी बिगाड़े दे रहे हो। मैं अपनी औषधि आजमा चुका हूँ। मौलविक को इसी उपचार से लाभ हुआ है। मैंने उसे असुर बना दिया है। इसका प्रभाव उसे जोंक लगा देने के समान अच्छा हुआ है।

ग्रेगर्स : तो अब वह रोगी के बजाय असुर बन गया है।

रैलिंग : भगवान तुम्हारा भला करे, तुम असुर का क्या अभिप्राय समझते हो ! असुर बन जाने का विश्वास भी एक प्रकार का आशा का भ्रम है। यह विश्वास ही उसे जीवन का अवलम्ब दिये है। यदि मैं उसके मन में आसुरी वृत्ति होने का भ्रम न उत्पन्न कर देता तो वह कमबख्त बरसों पहले आत्म-ग्लानि और निराशा में प्राण दे बैठा होता। बुढ़ऊ लेफ्टिनेंट का भी यही हाल है, परन्तु बुढ़ऊ ने अपना उपचार स्वयं ही खोज लिया है।

ग्रेगर्स : लेफ्टिनेंट एकदाल साहब ने क्या किया है ?

रैलिंग : अच्छा तो तुम्हारा क्या खयाल है ? वह भालुओं का शिकार करने वाला बूढ़ा आदमी बरसाती में जाकर खरगोश को गोली मारकर सन्तोष कर लेता है। बुढ़ऊ को उस कबाड़खाने में खरगोश मार-कर जो सफलता और सन्तोष अनुभव होता है वह संसार के बड़े-बड़े शिकारियों को भी नहीं होता होगा। बरसाती में खड़ी हुई, चार-पाँच वर्ष से क्रिसमस के त्यौहार पर लाई गई देवदार की सूखी शाखाएँ बुढ़ऊ के लिए होयदाल के वन के भारी-भारी वृक्ष ही हैं। बरसाती में रखे हुए मुर्ग़-मुर्ग़ियाँ बुढ़ऊ के लिए वृक्षों की चोटियों पर बैठे हुए बनैले मुर्ग़ हैं। बरसाती में फुदकते खरगोशों को वह वन में घूमता शिकार समझ लेते हैं, जिनका शिकार का जंगल में घात लेकर किया करते थे।

ग्रेगर्स : बुढ़ऊ को तो वास्तव में बहुत सहना पड़ा है। उनके यौवन-काल में उनके जीवन के सभी आदर्श रौंद डाले गए।

रैलिंग : मिस्टर ग्रेगर्स देखो—मेरी बात सुनो, तुम यह क्या नया विचित्र शब्द 'आदर्श' प्रयोग करते हो। सबका जाना-पहचाना सीधा-सादा शब्द बोलो—'प्रपंच'।

ग्रेगर्स : तो क्या तुम्हारे विचार में आदर्श और प्रपंच एक ही बात है ?

रैलिंग : हाँ, उतना ही अन्तर समझ लो जितना बड़ी चेचक और छोटी चेचक में।

ग्रेगर्स : डॉक्टर, मुझे हजलमार को तुम्हारे फंदे से छुड़ाना ही होगा।

रैलिंग : यह उसका दुर्भाग्य ही होगा। यदि मनुष्य का आशा का भ्रम टूट जाय तो उसके जीवन का सब उत्साह समाप्त हो जायगा। (बैठक के दरवाजे से आती हुई हेदविग को सम्बोधित करके) अहा, मुर्ग़ाबी की अम्मी आ गई। अच्छा, मैं नीचे जाकर देखूँ कि तुम्हारे पापा अपने चमत्कारिक आविष्कार की चिन्ता में अब भी वैसे ही तो नहीं पड़े हुए हैं। (जीने के दरवाजे से चला जाता है।)

ग्रेगर्स : (हेदविग की ओर बढ़कर) वह काम तो अभी पूरा नहीं हुआ, तुम्हारा चेहरा देखकर ही मैं समझ गया हूँ।

हेदविग : कौन-सा काम; वह मुर्ग़ाबी वाला ? नहीं—अभी तो नहीं।

ग्रेगर्स : मेरा अनुमान है, तुमने यत्न किया होगा परन्तु साहस नहीं हुआ··· क्यों ?

हेदविग : नहीं, वह बात नहीं। आज सुबह मेरी नींद खुली तो मुझे आपकी बात याद आई परन्तु मुझे वह बात ठीक नहीं जँची।

ग्रेगर्स : ठीक नहीं जँची ?

हेदविग : जी हाँ, जाने क्यों—कल रात आपने कहा था तो मुझे बिलकुल विश्वास हो गया था, परन्तु आज सुबह मैंने सोचा तो मुझे ठीक नहीं लगा।

ग्रेगर्स : हुँ, अब समझ में आया। इस घर में इतने दिन रहने से तुम कम-ज़ोर हो गई हो।

हेदविग : नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं है। यदि उस बात से पिता जी लौट आयें तो···

ग्रेगर्स : यदि तुममें जीवन की सार्थकता को पहचान सकने वाली दृष्टि होती—यदि तुममें आत्म-समर्पण का—कुर्बानी का भाव, वास्तविक साहस और निर्भयता होती तो तुम स्वयं समझ लेतीं कि तुम अपने पापा को किस प्रकार बुला सकती हो; परन्तु हेदविग, मुझे अब भी विश्वास है कि तुममें वह शक्ति है।

[ग्रेगर्स जीने के दरवाजे से चला जाता है। हेदविग स्टूडियो का एक चक्कर लगाकर रसोई की ओर जाने को होती है तो बरसाती के दरवाजे पर आहट सुनाई देती है। हेदविग बरसाती के दरवाजे की ओर जाकर दरवाजे को तनिक खोलती है तो बुढ़ऊ एकदाल स्टूडियो में आ जाते हैं। हेदविग बरसाती का दरवाजा फिर बन्द कर देती है।]

एकदाल : हुं ! सुबह की सैर के लिए अकेले जाने में कुछ मजा नहीं।

हेदविग : पिता जी, आज कोई शिकार नहीं करेंगे ?

एकदाल : बेटा, आज शिकार का मौसम नहीं है। देखो वहाँ कितना अँधेरा है। हाथ-भर दूर की चीज़ दिखाई नहीं देती।

हेदविग : पिता जी, आप सदा खरगोश का ही शिकार करते हैं, दूसरे शिकार करने के लिए मन नहीं चाहता ?

एकदाल : क्यों ? खरगोशों के शिकार में क्या बुराई है ?

हेदविग : बुराई तो नहीं है परन्तु मुर्ग़ाबी···

एकदाल : हो-हो-हो !—तुम डर रही हो कि मैं तुम्हारी मुर्ग़ाबी को गोली न मार दूं ! बेटा, ऐसा कभी नहीं हो सकता, ऐसा कभी नहीं करूँगा।

हेदविग : नहीं कर सकते ! मुर्ग़ाबी को गोली मारना बहुत कठिन होता है ?

एकदाल : कठिन होता है ?···मेरा तो खयाल है कि मैं मार सकता हूँ।

हेदविग : पिता जी, कैसे गोली मारियेगा ?···मेरी मुर्ग़ाबी को नहीं, दूसरी मुर्ग़ाबियों की बात कर रही हूँ।

एकदाल : देखो, मुर्ग़ाबी का शिकार करना हो तो निशाना सदा उसके सीने पर लेना चाहिए, तब वह बच नहीं सकती। यह भी ध्यान रखो

कि चिड़िया के पर जिस ओर को लेटे हों, उन पर उल्टा निशाना लेना चाहिए, परों की फ़िसलन की ओर नहीं।

हेदविग : पिता जी, तो मुर्ग़ाबी मर जायगी ?

एकदाल : निश्चय, यदि निशाना ठीक लगेगा तो निश्चय ही मर जायगी। अच्छा, मैं जाकर कपड़े पहन लूँ। तुम समझती हो न···हूँ !

[बुढ़ऊ अपने कमरे में चले जाते हैं। हेदविग पल-भर सोच में खड़ी बुढ़ऊ के कमरे के दरवाज़े की ओर देखती है और पुस्तकों की आलमारी के समीप जाकर पंजों पर उचककर पिस्तौल उठा लेती है और उसे ध्यान से देखती है। गीना बैठक के दरवाजे से आ जाती है। उसके हाथ में झाड़ू और झाड़न है। हेदविग तुरन्त पिस्तौल को आलमारी पर रख देती है। गीना वह देख नहीं पाती।]

गीना : हेदविग, क्या कर रही हो ? पापा की चीज़ों को मत छेड़ना !

हेदविग : (पुस्तकों की आलमारी से परे हो जाती है) अम्मी, मैं तो चीज़ों को ठीक से रख रही थी।

गीना : तुम रसोई में जाकर देखो न, कॉफी के नीचे आग ठीक है। मैं नीचे जाऊँगी तो तुम्हारे पापा के लिए कॉफी ले जाऊँगी।

[हेदविग चली जाती है। गीना स्टूडियो में झाड़-पोंछ करने लगती है। कुछ पल बाद ज़ीने का दरवाजा खुलता है। और हजलमार स्टूडियो में झाँकता है। हजलमार ओवरकोट पहने है परन्तु उसके सिर पर टोपी नहीं है। चेहरे पर हजामत बढ़ी हुई है। सिर के केश उलझे हुए और अस्त-व्यस्त हैं। आँख बुझी-बुझी-सी और पलकें भारी हैं। गीना हाथ में झाड़ू लिये निश्चल खड़ी उसे देखती रहती है।]

गीना : आओ, आखिर लौटे तो।

हजलमार : (स्टूडियो में आ जाता है और बहुत धीमे से बोलता है) नहीं, मैं अभी चला जाऊँगा।

गीना : अच्छा-अच्छा, होगा परन्तु कुछ तो खयाल करो; क्या सूरत बनाई हुई है ?

हजलमार : क्या सूरत बनाई हुई है ?

गीना : ओवरकोट को तो देखो, कोट की क्या दशा कर ली है ?

हेदविग : (रसोई के दरवाजे से झाँकती है) अम्मी, मैं···(पिता को देखकर प्रसन्नता से किलककर पुकार लेती है) पापा ! पापा !!

हजलमार : (लड़की की ओर से मुँह फेरकर उसे समीप न आने का संकेत करता है) यहाँ मत आओ ! (गीना को सम्बोधित करता है) मैं कह रहा हूँ, हटाओ उसे !

गीना : (स्वर दबाकर) हेदविग, तुम बैठक में चली जाओ ! (हेदविग गरदन झुकाकर चली जाती है।)

हजलमार : (व्यस्तता से मेज की दराज खोलते हुए) मैं अपनी पुस्तकें लेने आया हूँ। मेरी पुस्तकें कहाँ हैं ?

गीना : कौन-सी पुस्तकें ?

हजलमार : मेरी वैज्ञानिक पुस्तकें और मेरी वैज्ञानिक पत्रिकाएँ; जिन्हें आविष्कार की खोज के लिए पढ़ना जरूरी है।

गीना : (आलमारी में देखते हुए) यह जो बिना जिल्द की हैं ?

हजलमार : हाँ, वही।

गीना : (मेज पर पत्रिकाओं का ढेर लगा देती है) हेदविग से कह दूँ, इन्हें ठीक कर दे; नई पत्रिकाओं के पन्ने काट दे।

हजलमार : नहीं, पन्ने काटने की कोई आवश्यकता नहीं। (मौन खड़ा रहता है)।

गीना : तो निश्चय कर लिया है; हमें छोड़ जाओगे ?

हजलमार : (पुस्तकों को छाँटते हुए) तुम नहीं जानतीं ? इसमें कहने की क्या बात है !

गीना : हुँ।

हजलमार : (खिन्नता से) मेरे लिए सह्य नहीं है कि यहाँ रहकर हर समय हृदय में शूल की वेदना सहता रहूँ।

गीना : तुम कैसी बातें कर रहे हो ! इसके लिए भगवान् तुम्हें क्षमा करें !

हजलमार : तुमने मेरे साथ अन्याय नहीं किया ?

गीना : अन्याय तुम कर रहे हो।

हजलमार : तुमने क्या-क्या किया है ? मनुष्य का कुछ कर्त्तव्य भी होता है। मानव-जीवन के आदर्श के प्रति भी कुछ कर्त्तव्य समझना चाहिए···

गीना : परन्तु पिता जी का क्या होगा ? इस बुढ़ापे में उनका क्या होगा ?

हजलमार : अपना उत्तरदायित्व मुझे मालूम है। अपनी असहाय अवस्था में पिता जी मेरे सिवा और किसके पास जा सकते हैं ! मैं शहर में दूसरा प्रबन्ध कर लूँगा। हुं—(झिझककर) जीने में किसी को मेरी टोपी तो नहीं मिली ?

गीना : नहीं···क्या टोपी खो गई ?

हजलमार : खो ही गई। कल रात मैं लौटा था तो मेरे सिर पर जरूर होगी···

परन्तु सुबह से नहीं मिल रही है।

गीना : हाय राम, रात उन दोनों लफ़ंगों के साथ कहाँ-कहाँ घूमते रहे?

हजलमार : ऊट-पटाँग बातें मत करो! ऐसी मानसिक अवस्था में वे सब बातें कैसे याद रह सकती हैं?

गीना : रात कहीं सर्दी-वर्दी तो नहीं खा गए? (रसोई में चली जाती है।)

हजलमार : (मेज के दराज से चीजें निकालकर मेज पर रखते हुए बड़बड़ाता जाता है।) रैलिंग बिलकुल गुंडा है! पक्का बदमाश है! निर्लज्ज! दूसरों को कैसे बहका लेता है—उसकी जान ले लूँगा!

[कुछ पुराने पत्रों को एक ओर रख देता है। उसका ध्यान पिछली संध्या को फाड़े हुए पत्र पर चला जाता है। पत्र के टुकड़ों को उठाकर देखता है और उन्हें रख देता है। गीना रसोई से आ जाती है।]

गीना : (मेज पर छोटी ट्रे में नाश्ता रख देती है।) चाहो तो एक गरम प्याला पी लो! एक टुकड़े पर मक्खन लगा दिया है, जरा-सा नमक-लगा माँस भी है।

हजलमार : (ट्रे में रखे नाश्ते की ओर नज़र डालकर) नमक-लगा माँस! मुझे इस घर की कोई चीज़ नहीं चाहिए! पूरे दिन-रात चौबीस घंटे से मैंने मुँह में दाना नहीं डाला है, लेकिन कोई परवाह नहीं। मेरे कागज कहाँ हैं? आरम्भ में मैंने जो नोट लिखे थे, मेरी डायरी और ज़रूरी कागज कहाँ उड़ गए? (बैठक का दरवाजा खोलकर झाँकता है, परन्तु पीछे हटकर तुरन्त बन्द कर लेता है।) वह फिर वहाँ बैठी है।

गीना : हाय राम, लड़की कहीं तो बैठेगी!

हजलमार : बाहर आ जाओ (हजलमार दरवाजा खोलकर हेदविग को न छूने के लिए एक ओर हो जाता है। हेदविग आंतक से चुप स्टूडियो में आ जाती है।) मैं दो-चार मिनट के लिए अपने पुराने घर में आया हूँ। जिन लोगों का इस घर से कोई सम्बन्ध नहीं है, वह मुझे क्यों परेशान कर रहे हैं। (बैठक में चला जाता है।)

हेदविग : (एक लम्बा कदम उठाकर माँ के पास चली जाती है और काँपते हुए धीमे स्वर में पूछती है।) क्या मुझे कह रहे हैं?

गीना : मुन्नी तू रसोई में चली जा···अच्छा नहीं, अपने कमरे में ही चली जा! (हजलमार की ओर बढ़कर कहती है) जरा ठहरो, मैं सब-कुछ निकाल दूँगी।

हेदविग : (भयभीत, झिझक में कुछ पल निश्चल और मौन खड़ी रहती है। दाँत से होठों को काटकर आँसुओं को रोके रहती है। निश्चय में हाथों की मुट्ठियाँ बाँध लेती है और होठों-ही-होठों में धीमे स्वर

में बोलती है।) मुर्ग़ाबी···

[आलमारी के समीप सरक जाती है और आलमारी के ऊपर से पिस्तौल उठा लेती है। पिस्तौल उठाकर धीमे से बरसाती का दरवाजा खोलती है और बरसाती में जाकर दरवाजा बन्द कर लेती है। बैठक से हजलमार और गीना के झगड़ने का स्वर सुनाई देता है। हजलमार बैठक से कुछ कापियाँ और कागज लिये निकलता है और उन्हें मेज पर रख देता है।]

हजलमार : यह सब चीजें उस सूटकेस में कैसे समा सकती हैं। सैकड़ों चीजें हैं, मुझे सबकी आवश्यकता है।

गीना : (सूटकेस लेकर हजलमार के पीछे बैठक से आती है।) अच्छा, उन वस्तुओं को बाद में ले जाना। अभी एक कमीज और जाँघिया, बनियाइन जरूर रख लो।

हजलमार : ओह, सब चीजों को समेटना-बाँधना कितना मुश्किल है। (ओवर कोट उतारकर सोफ़े पर फेंक देता है।)

गीना : तुम्हारी कॉफी पड़ी-पड़ी ठण्डी हो रही है।

हजलमार : हुँ ! (कुछ सोचते हुए कॉफी का एक घूंट भर लेता है और फिर दूसरा घूँट।)

गीना : (झाड़न से कुर्सियों को पोंछते हुए) खरगोशों को रखने के लिए इतनी बड़ी बरसाती मुश्किल से ही मिलेगी। ढूंढने के लिए काफी घूमना पड़ेगा।

हजलमार : क्या; यह खरगोश भी मैं साथ ले जाऊँगा ?

गीना : और क्या, जानते हो पिता जी उनके बिना कैसे रहेंगे ?

हजलमार : उन्हें रहना ही पड़ेगा। खरगोश का क्या है, मैं उनसे बहुत बड़ी-बड़ी चीजें छोड़ रहा हूँ।

गीना : (आलमारी को झाड़ते हुए) कहो तो तुम्हारी बाँसुरी सूटकेस में रख दूं ?

हजलमार : नहीं, मुझे बाँसुरी की जरूरत नहीं। हाँ, पिस्तौल रख दो !

गीना : क्या बन्दूक साथ ले जाओगे ?

हजलमार : हाँ ! मेरी पिस्तौल, खयाल करना, भरी हुई है। उसे सूटकेस में रख दो !

गीना : (अलमारी के ऊपर देखकर) यहाँ तो नहीं है। पिता जी ले गये होंगे।

हजलमार : क्या बरसाती में गये हैं ?

गीना : और कहाँ जायँगे।

हजलमार : हुँ, बेचारों के लिए निठल्ले बैठे समय काटना भी तो मुसीबत है।

(मक्खन-लगा रोटी का टुकड़ा लेकर चबाने लगता है और प्याले की शेष कॉफी पी जाता है।)

गीना : कमरा किराये पर न दे दिया होता तो तुम चाहे उसी में रह जाते।

हजलमार : वह क्या दूसरी जगह है? इस घर में—कभी नहीं, मैं किसी हालत में नहीं रह सकता।

गीना : चाहो तो दो-चार दिन के लिए बैठक में रह जाओ। उधर कोई नहीं जायगा।

हजलमार : नहीं-नहीं, इस घर में किसी हालत में नहीं।

गीना : अच्छा, नीचे डॉक्टर और पादरी के साथ रह जाओ।

हजलमार : तुम मेरे सामने उन लोगों की बात मत करो। मुझे उनके नाम से ही घृणा है। यह सब नहीं होगा, मैं अपना रास्ता खुद बनाऊँगा। आँधी-पानी में दर-दर भटककर पिता जी के लिए और अपने लिए शरण खोजूंगा।

गीना : सोचो तो, तुम्हारी टोपी भी खो गई है, ऊपर से इतनी बरफ़ पड़ रही है।

हजलमार : ओह! वह गंदगी के कीड़े और बेईमान! मैं टोपी का इंतजाम किसी तरह कर लूंगा। (मक्खन-लगा रोटी का दूसरा टुकड़ा उठाकर खाने लगता है।) मुझे अपने निर्वाह का प्रबन्ध करना ही है। ऐसे ही तो जान नहीं दे दूंगा। (मेज पर रखी ट्रे पर नज़र डालता है।)

गीना : क्या चाहिए?

हजलमार : मक्खन नहीं है?

गीना : अभी लाई, एक सेकेण्ड में (रसोई में चली जाती है।)

हजलमार : (गीना को पुकारता है) ओहो, तुम रहने दो; कोई जरूरत नहीं है। मेरे लिए सूखी रोटी काफी है।

गीना : (मक्खन की प्याली लेकर लौटती है।) यह लो बिलकुल ताज़ा, सुबह ही निकाला है।

[गीना हजलमार के लिए कॉफी का एक और प्याला तैयार कर देती है। हजलमार सोफ़े पर बैठ जाता है। रोटी के एक टुकड़े पर मक्खन लगाकर खाने लगता है और चुपचाप कॉफी पीता जाता है।]

हजलमार : मैं सोचता हूँ, यदि एक-दो दिन के लिए बैठक में ही ठहर जाऊँ तो दूसरों को बैठक में दखल देने की आवश्यकता तो नहीं पड़ेगी?

गीना : जरूर ठहर सकते हो। यह तो तुम्हारी इच्छा पर निर्भर करता है।

हजलमार : कारण यह है कि पिता जी का सब सामान एकदम उठाकर ले जाना तो सम्भव नहीं होगा।

गीना : हाँ, और पहले पिता जी को यह भी बताना होगा कि तुम हम लोगों को छोड़कर जा रहे हो, यहाँ नहीं रहोगे।

हजलमार : (कॉफी का प्याला दूर हटा देता है) हाँ, वह तो दूसरी बात है। मुझे तो इन सभी समस्याओं को नये सिरे से सुलझाना होगा, पूरी परिस्थिति पर विचार करना होगा। दम लेने का समय चाहिए। यह सब बातें एक ही दिन में तो नहीं हो सकतीं।

गीना : हाँ-हाँ, और मौसम भी तो बहुत खराब है।

हजलमार : (मेज पर पड़े वर्ले साहब के पत्र को उलट-पलट कर देखता है।) अच्छा, यह पत्र अभी तक यहाँ ही पड़ा है?

गीना : क्या; मैंने तो उसे देखा भी नहीं।

हजलमार : मुझे इस झगड़े से क्या मतलब!

गीना : हाँ, हमें इसकाक्या करना है?

हजलमार : परन्तु उसे खो देना भी तो ठीक नहीं है। मेरा सामान निकालने की उलट-पलट में यह खो भी तो सकता है।

गीना : अच्छा, मैं इसे सँभालकर रख दूँगी।

हजलमार : यह दान-पत्र है और इस पर सबसे पहला अधिकार तो पिता जी का है। इसके विषय में जो कुछ निर्णय करना है, पिता जी ही कर सकते हैं।

गीना : (गहरी साँस लेकर) हाँ, उन बेचारों को ही करना है।

हजलमार : इस पत्र के टुकड़े खो न जाएँ। जरा गोंद होगा, मैं इन्हें जोड़ दूँ।

गीना : (आलमारी की ओर जाती है।) यह है गोंददानी।

हजलमार : कोई छोटा-सा ब्रुश होगा?

गीना : ब्रुश भी है। (गोंददानी और ब्रुश हजलमार को दे देती है।)

हज़लमार : (उठकर आलमारी से कैंची ले लेता है) इसके पीछे कागज का एक टुकड़ा लगाकर जोड़ दूँ। (कागज का महीन टुकड़ा काटकर पत्र को चिपका देता है) दूसरों के रुपये-पैसे से मुझे क्या लेना-देना। बेचारे असहाय बूढ़े के धन को मैं क्यों हाथ लगाऊँ। हाँ, किसी की भी धन-सम्पत्ति से मुझे क्या मतलब है! अपने को क्या है, पड़ा रहने दो सूख जाय। सूख जाय तो उठाकर रख देना! मुझे इससे क्या मतलब है! मुझे तो इससे कोई मतलब नहीं।

[जीने के दरवाजे से ग्रेगर्स स्टूडियो में आ जाता है।]

ग्रेगर्स : (कुछ विस्मय से) अरे! हजलमार, तुम यहाँ बैठे हो?

हजलमार : (जल्दी से उठकर खड़ा होता है) थकावट और परेशानी से मेरा दिल डूबने लगा था।

ग्रेगर्स : अच्छा, नाश्ता कर लिया ?

हजलमार : शरीर तो अन्न के बिना चल नहीं सकता।

ग्रेगर्स : तुमने क्या निश्चय किया ?

हजलमार : मेरे-जैसे व्यक्ति के लिए तो केवल एक ही बात हो सकती है। मैं अपनी खास आवश्यक वस्तुएँ समेट रहा हूँ। उसमें कुछ समय लगेगा, तुम समझ ही सकते हो।

गीना : (खिन्नता से पति को सम्बोधित करती है) बताओ, तुम्हारे लिए कमरा ठीक कर दूँ या तुम्हारा सामान सूटकेस में रखना होगा ?

हजलमार : (ग्रेगर्स की उपस्थिति से परेशानी अनुभव करके) सूटकेस में सामान रख रही हो, कमरा भी ठीक कर रही हो ?

ग्रेगर्स : (कुछ सोचकर) मुझे तो इस बात का ज़रा भी अनुमान नहीं था कि हमारी बातों का यह परिणाम होगा। मैं बिलकुल नहीं समझ सकता कि तुम्हें घर और मकान छोड़कर जाने की क्या आवश्यकता है ?

हजलमार : (उद्विग्नता से चहलकदमी करने लगता है) तो तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूँ ? ग्रेगर्स, मन पर ऐसा बोझ लादे रहना मेरे लिए सम्भव नहीं है। मैं निरन्तर मानसिक क्लेश में नहीं जी सकता। मुझे अपने काम के लिए मानसिक शान्ति और सुविधा की आवश्यकता है।

ग्रेगर्स : मानसिक शांति और सुविधा तुम्हें यहाँ क्यों नहीं मिल सकती ? यत्न करके तो देखो ! मैं समझता हूँ कि अब तुम पहले की अपेक्षा अधिक ठोस नींव पर नया जीवन आरम्भ कर सकते हो। यह भी सोचो—तुम अपने आविष्कार को जीवन का लक्ष्य मान चुके हो।

हजलमार : ओफ़, तुम उस आविष्कार की बात मत करो। वह बात बहुत दूर जा पड़ी है।

ग्रेगर्स : ऐसी क्या बात है ?

हजलमार : भगवान् ही जानता है, तुम्हीं बताओ, मैं क्या आविष्कार कर डालूँ ? लोगों ने सभी कुछ बना डाला है, अब कोई नया आविष्कार क्या करे !

ग्रेगर्स : परन्तु तुमने उनके लिए कितना परिश्रम किया है।

हजलमार : यह सब बदमाश रैलिंग की शरारत है। उसी ने मुझे इस मूर्खता में फँसाया है।

ग्रेगर्स : डॉ० रैलिंग ने ?

हजलमार : हाँ, उसी ने मेरे दिमाग में भर दिया, मैं प्रतिभावान हूँ। मैं फोटो-ग्राफी में नया महत्त्वपूर्ण आविष्कार कर सकता हूँ।

ग्रेगर्स : अच्छा रैलिंग ने ?

हजलमार : मैं उस सुख-स्वप्न में डूब गया। आविष्कार कर सकने के अपने स्वप्न से अधिक संतोष मुझे हेदविग के विश्वास से था। मैं समझता था कि भोली सरल लड़की को पूरा विश्वास है कि मैं बड़ा भारी आविष्कार कर रहा हूँ। परन्तु मैं ही मूर्खता में लड़की को इतनी भोली और सरल समझे हुए था।

ग्रेगर्स : यह तुम कैसे कह सकते हो कि हेदविग को उस बात पर सचमुच विश्वास नहीं था।

हजलमार : सब-कुछ हो सकता है। अब मुझे किसी भी बात पर विश्वास नहीं है। उस लड़की के कारण ही तो सब झगड़ा हुआ है। उसने मेरे जीवन में सब-कुछ समाप्त कर दिया है।

ग्रेगर्स : हेदविग ने ? हेदविग के लिए तुम कैसी बात कर रहे हो ? बेचारी लड़की ने ऐसी क्या बात कर दी ?

हजलमार : (ग्रेगर्स की बात की ओर ध्यान न देकर) मैं बता नहीं सकता, मैं उस लड़की को कितना स्नेह करता था। मैं कह नहीं सकता कि जब भी मैं इस घर में बाहर से आता था और लड़की अपनी उनींदी और भारी-भारी पलकें उठाकर दौड़कर मुझसे चिपट जाती थी तो मैं कैसे अपार आनन्द से गद्‌गद हो जाता था। मैं विश्वास में अन्धा बना हुआ था। मैं उस लड़की के स्नेह में आँखें मूँदे इस भ्रम में था कि वह भी मुझे प्यार करती है।

ग्रेगर्स : तुमने यह कैसे समझ लिया कि यह भ्रम था ?

हजलमार : कैसे समझ सकता हूँ ? गीना से तो कोई सत्य जान सकना सम्भव नहीं। आदर्श और कर्त्तव्य-जैसी ऊँची भावनाओं से उसका कोई सम्पर्क नहीं। ग्रेगर्स, तुम्हारे सिवा और उसके सामने अपने सन्देह की वेदना को प्रकट कर सकता हूँ ! सबसे बड़ा सन्देह तो यही है कि हेदविग ने मुझे कभी भी सचमुच स्नेह नहीं किया।

ग्रेगर्स : इस सन्देह के लिए कोई कारण या प्रमाण तो होना चाहिए ? (ध्यान से सुनता है) हैं, यह क्या है ? क्या मुर्ग़ाबी चीख रही है ?

हजलमार : मुर्ग़ाबी बोल रही होगी। पिताजी बरसाती में ही हैं।

ग्रेगर्स : पिताजी बरसाती में हैं ? (ग्रेगर्स के चेहरे पर प्रसन्नता झलक जाती है) सुनो, हो सकता है तुम्हें प्रमाण मिल जाए कि हेदविग के प्रति तुम्हारा सन्देह निराधार है। वह तुमसे सचमुच स्नेह करती है।

हजलमार : वह क्या प्रमाण दे सकती है ? मैं उन लोगों की किसी बात पर विश्वास नहीं कर सकता।

ग्रेगर्स : हेदविग के हृदय में छल नहीं हो सकता।

हजलमार : ग्रेगर्स, इसी बात में तो सबसे बड़ा सन्देह है। कौन जाने, गीना ने और उस सूरबी बाई ने लड़की के कानों में क्या-क्या भरा है ? और यह भी मैं जानता हूँ कि लड़की बहुत गहरी है। कौन जाने इस दान-पत्र का क्या मामला है ? अचानक अपने-आप ही आ गया ! इसके लिए क्या-क्या साँठ-गाँठ की गई होगी ? मुझे तो कुछ सन्देह भी हुआ था।

ग्रेगर्स : यह तुम कैसी बातें कर रहे हो ? बडी विचित्र भावना है तुम्हारी !

हजलमार : अब मेरी आँखें खुल गई हैं। तुम देख लेना, मामला दान-पत्र तक ही नहीं रहेगा। हेदविग पर सूरबी बाई की कृपा सदा ही रही है। अब उसके हाथ में मौक़ा है। लड़की के लिए जो चाहे कर सकती है। जब चाहे, लड़की को यहाँ से ले जा सकती है।

ग्रेगर्स : हेदविग तुम्हें छोड़कर नहीं जाएगी।

हजलमार : तुम इन बातों को रहने दो। उनके पास क्या कमी है। वह उसे जब चाहे ललचा सकते हैं, लालच में फँसाकर इशारे से ही बुला सकते हैं। मैं बता नहीं सकता कि मैं लड़की को कितना प्यार करता था। मैंने निश्चय कर लिया था कि मैं जीवन-भर उसकी देख-भाल करूँगा, उसके अँधियारे जीवन के मार्ग में उसका हाथ थामे रहूँगा। मेरे लिए वह सदा अँधेरे से आतंकित गोद की बच्ची ही बनी रही, परन्तु आज मेरी आँखें खुली हैं और मेरा दिल वेदना से फटा जा रहा है। यह गरीब की कोठरी और गरीब फोटोग्राफ़र उसके लिए क्या है। वह तो यहाँ केवल अपने दिन काट रही थी। बहुत चालाकी और चतुरता से मुझे मूर्ख बनाये हुए थी।

ग्रेगर्स : नहीं-नहीं, हजलमार, स्वयं तुम्हारा हृदय ही यह नहीं मान सकता।

हजलमार : यही तो सबसे बड़ी मुसीबत है—मैं स्वयं नहीं जानता कि क्या मानूँ। जानने का कोई उपाय भी नहीं, परन्तु तुम्हीं बताओ, मेरी बात में क्या संदेह है ? हा-हा-हा ! (हँसने का यत्न करता है) मेरे भाई, तुम मानव-आदर्श के कर्त्तव्य की पूर्ति के खयाल में जाने क्या-क्या सोचते हो। दूसरे लोग लड़की को सुख-सम्पत्ति के प्रलोभन देकर कहेंगे—छोड़ो उसे ! यहाँ क्या है ? यहाँ आकर ऐश्वर्य और सुख का जीवन देखो···

ग्रेगर्स : (टोककर पूछता है) अच्छा तो तुम्हारा क्या खयाल है ?

हजलमार : तुम समझते हो, मैं लड़की से कहूँगा—हेदविग, वे लोग तुम्हें सब

ऐश्वर्य और सुख दे रहे हैं परन्तु तुम उसे मेरे लिए त्याग दो। विद्रूप से हँस देता है) ऐसी सलाह के लिए धन्यवाद ! तुम भी जानते हो, मुझे क्या उत्तर मिलेगा।

[बरसाती से पिस्तौल चलने का धमाका सुनाई देता है।]

ग्रेगर्स : (बहुत प्रसन्नता से) हजलमार, क्या कर रहे हो ?

हजलमार : (बरसाती की ओर संकेत करके) सुना तुमने, पिताजी इस समय भी शिकार के बिना नहीं रह सकते।

गीना : (रसोई से निकलकर) बरसाती में जाकर देखिए···पिताजी कुछ ऊट-पटाँग न कर बैठें।

हजलमार : अभी देखता हूँ।

ग्रेगर्स : (भावुकता-भरे स्वर में) पल-भर ठहरो ! जानते हो, यह धमाका क्या था ?

हजलमार : हाँ-हाँ, खूब जानता हूँ।

ग्रेगर्स : नहीं, तुम नहीं जानते, मैं जानता हूँ। तुम प्रमाण चाहते थे न, मिल गया।

हजलमार : किस बात का प्रमाण ?

ग्रेगर्स : यह लड़की की कुर्बानी है, लड़की का त्याग है। उसने अपने दादा से कहकर मुर्ग़ाबी को गोली मरवा दी है।

हजलमार : मुर्ग़ाबी को गोली मरवा दी है ?

गीना : हैं, यह क्या ?

हजलमार : पर क्यों ?

ग्रेगर्स : लड़की ने तुम्हारे लिए त्याग किया है, कुर्बानी दी है। उसने तुम्हें पाने के लिए अपनी सबसे बहुमूल्य और प्यारी वस्तु कुर्बान कर दी है। उसे विश्वास था कि वह यह कुर्बानी कर देगी तो तुम उसे फिर प्यार करने लगोगे।

हजलमार : (भावुकता से द्रवित स्वर में) भोली लड़की !

गीना : जाने क्या-क्या सोचा करती है वह !

ग्रेगर्स : हजलमार, वह तुम्हारे स्नेह की भूखी थी। तुम्हारे स्नेह के बिना वह जीवन सम्भव नहीं समझती थी।

गीना : (आँखों में आँसू रोकते हुए हजलमार की ओर देखकर) देख लिया न ?

हजलमार : (गीना की ओर देखकर) हेदविग है कहाँ ?

गीना : (आँसू पोंछकर) क्या मालूम, शायद रसोई में बैठी होगी।

हजलमार : (रसोई के दरवाजे पर जाकर दरवाजा खोलकर पुकारता है) हेदविग ! आओ, यहाँ आओ न ! (रसोई में झाँकता है।) नहीं, रसोई में तो नहीं है।

गीना : तो अपने छोटे कमरे में जाकर छिपी बैठी होगी।

हजलमार : (रसोई से हटकर हेदविग के छोटे कमरे में झाँककर) नहीं, वहाँ भी नहीं है। कमरे से लौटकर घूमने के लिए बाहर चली गई होगी।

गीना : तो क्या करती; तुम उसे मकान में कहीं बैठने ही नहीं दे रहे थे।

हजलमार : कब लौटेगी ? आ जाय तो मैं उससे कह दूं। ग्रेगर्स, तुम चिन्ता न करो, सब ठीक-ठाक है। हम अपने जीवन को फिर से आरम्भ करेंगे।

ग्रेगर्स : (गम्भीरता से) मुझे पहले ही विश्वास था कि बच्ची के भोले हृदय से ही तुम्हारा जीवन पवित्र हो सकेगा।

[बुढ़ऊ एकदाल अपने कमरे के दरवाजे में दिखाई देते हैं। वे पूरी वर्दी पहने हुए हैं और पेटी में तलवार बाँध रहे हैं।]

हजलमार : (विस्मय से) पिता जी, आप यहाँ हैं।

गीना : (बुढ़ऊ की ओर देखकर) गोली क्या आपने अपने कमरे में ही चलाई थी ?

एकदाल : (प्रश्नों से खिन्न होकर) हजलमार, तुम अकेले ही शिकार खेल रहे हो ?

हजलमार : (चिन्ता और घबराहट से) तो वह गोली आपने नहीं चलाई ?

एकदाल : मैंने गोली चलाई ? हुँ !

ग्रेगर्स : (हजलमार को सम्बोधित करके) देखा तुमने ! लड़की ने मुर्गाबी को स्वयं ही गोली मार दी है।

हजलमार : क्या कह रहे हो तुम ? (शीघ्रता से बरसाती की ओर बढ़कर दरवाजे को झटके से खोल देता है। बरसाती में झाँककर चीख उठता है।) हेदविग !

गीना : (बरसाती के दरवाजे की ओर दौड़ती है) हेदविग ! क्या हुआ ?

हजलमार : (बरसाती में जाते हुए) गिर पड़ी है।

ग्रेगर्स : हेदविग गिर पड़ी है। (हजलमार की ओर बढ़ जाता है।)

गीना : (बरसाती में जाते हुए बहुत घबराहट से) हेदविग हाय ! क्या हुआ, हाय राम ! क्या हुआ ?

एकदाल : वाह-वाह ! लड़की भी शिकार खेलने लगी।

[हजलमार, गीना और ग्रेगर्स हेदविग को उठाकर स्टूडियो में लाते हैं। हेदविग की दाहिनी बाँह लटकी हुई है और हाथ में पिस्तौल मजबूती से पकड़ा हुआ है।]

हजलमार : (व्याकुलता से) लड़की के हाथ से पिस्तौल चल गई है—चोट खा गई है—जल्दी बुलाओ, डॉक्टर को बुलाओ !

गीना : (दौड़ती हुई जीने की ओर जाकर पुकारती है) डॉक्टर साहब !

रैलिंग साहब ! जल्दी आइए ! दौड़कर एकदम आइए !

[हजलमार और ग्रेगर्स हेदविग को सोफ़े पर लिटा देते हैं।]

एकदाल : (गम्भीरता से) वन अपना बदला चुका लेते हैं।

हजलमार : (घुटने टेककर सोफ़े के समीप बैठ जाता है) सुध आ रही है, इसे सुध आ रही है···हाँ-हाँ, आ रही है।

गीना : (जीने के दरवाजे से लौटकर) चोट कहाँ लगी है ? मुझे तो कहीं दिखाई नहीं दे रही।

[रैलिंग झपटता हुआ जाता है। उसके पीछे मौलविक भी आ जाता है। उसके शरीर पर कोट और गले में नैकटाई नहीं है।]

रैलिंग : क्यों, क्या हो गया ?

गीना : कह रहे हैं, हेदविग को गोली लग गई है।

हजलमार : यहाँ आओ, देखो, सँभालो !

रैलिंग : गोली मार ली है !

[मेज को धक्के से हटाकर सोफ़े के समीप आ जाता है और परीक्षा लेने के लिए हेदविग पर झुक जाता है।]

हजलमार : (चिन्ता से रैलिंग की ओर देखकर) डॉक्टर, कोई खतरा तो नहीं है ? जरा-सा ही तो खून निकला है, भय की बात तो नहीं है न ?

रैलिंग : यह हुआ कैसे ?

हजलमार : मुझे तो कुछ भी पता नहीं।

गीना : मुर्ग़ाबी को गोली मारना चाहती थी।

रैलिंग : मुर्ग़ाबी को ?

हजलमार : पिस्तौल स्वयं चल गई होगी।

रैलिंग : हाँ, सम्भवतः।

एकदाल : वन अपना बदला चुका लेते हैं, परन्तु मुझे कोई डर नहीं है। (बुढ़ऊ बरसाती में जाकर दरवाजा बन्द कर लेते हैं।)

हजलमार : डॉक्टर तुम कुछ बताते क्यों नहीं ?

रैलिंग : गोली सीने में चली गई है।

हजलमार : हैं; परन्तु इसे सुध तो आ रही है !

गीना : (रो पड़ती है) मेरी बेटी ! हाय मेरी बेटी !

ग्रेगर्स : (रुँधे हुए स्वर में) अथाह सागर की गहराइयों में।

हजलमार : (सहसा उठ खड़ा होता है।) नहीं, मेरी बेटी नहीं मर सकती ! डॉक्टर, भगवान् के लिए बचा लो—एक मिनट के लिए बचा लो। मैं उसे बता दूँ, मैं उसे कितना प्यार करता हूँ, सदा प्यार करता रहा हूँ।

रैलिंग : गोली दिल पर लगी है। खून भीतर पेट में चला गया है। प्राण

तत्काल निकल गए होंगे ।

हजलमार : हाय, मैंने उसे अपने पास से दुत्कार दिया ! बेचारी डरकर बरसाती में चली गई। हाय, बेचारी ने मेरे स्नेह के लिए प्राण दे दिए ! (हिचकियाँ लेकर रो पड़ता है।) हाय, मेरा यह पाप कभी नहीं छूटेगा ! हाय, मैं उसे कभी नहीं बता सकूँगा। (दोनों हाथों की मुट्ठियाँ भींचकर आकाश की ओर उठा लेता है।) हे भगवान् ! यदि कोई भगवान् है तो मुझे बताये—तुमने मेरे साथ क्या किया ?

गीना : (हिचकियाँ लेते हुए) चुप रहो ! चुप रहो ! ऐसी बात मत बोलो ! मैं जानती हूँ, हम उसे रख सकने लायक नहीं थे ।

मौलविक : लड़की अभी ज़िन्दा है, वह नींद में है।

रैलिंग : क्यों व्यर्थ बकते हो !

हजलमार : (अपने-आपको संयत करके दोनों बाँहें सीने पर बाँधकर सोफ़े के समीप आकर सिर झुकाये हेदविग की ओर देखता है) तुम सदा के लिए मौन और निश्चल हो गईं ।

रैलिंग : (लड़की के हाथ से पिस्तौल छुड़ाने का यत्न करते हुए) ओह, देखो, कितने जोर से, कितनी मजबूती से पकड़े हुए है।

गीना : रहने दीजिये डॉक्टर साहब, रहने दीजिये ! उँगलियाँ दुख जायँगी। ऐसे ही रहने दीजिये ।

हजलमार : पिस्तौल को साथ ही जाने दो !

गीना : हाँ, रहने दीजिये। लड़की यहाँ सबके सामने कैसे पड़ी रहेगी ! इसी के कमरे में ले चलो। (हजलमार को सम्बोधित करती हुई) आओ, उठाकर मेरे साथ ले चलो !

[हजलमार और गीना हेदविग को उठा लेते हैं।]

हजलमार : (गीना के साथ लड़की को उठाये हुए) गीना, हाय गीना, यह चोट कैसे, सही जायगी ?

गीना : सहना ही होगा। एक-दूसरे को सहारा देकर सहेंगे। हमारी अपनी ही करनी है।

मौलविक : (आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ हेदविग के ऊपर फैलाकर होठों-ही-होठों में बड़बड़ाता है।) भगवान् तुम्हारी दया अपार है ! पृथ्वी का अंश पृथ्वी में; मिट्टी, मिट्टी में···

रैलिंग : (पादरी की ओर झुककर दबे हुए स्वर में) चुप रह मूर्ख, नशे में है ?

[हजलमार और गीना लड़की को उठाकर रसोई में से ले जाते हैं। रैलिंग खड़ा उनकी ओर देखता रहता है। मौलविक जीने के दरवाजे से खिसक जाता है।]

रैलिंग : (ग्रेगर्स के समीप चला जाता है। ग्रगर्स के चेहरे पर आतंक छाया हुआ है। यह दाँत दबाये खड़ा है। रैलिंग उसे सम्बोधित करता

है।) मैं नहीं मान सकता कि यह केवल आकस्मिक घटना थी।

ग्रेगर्स : (गला साफ़ करने के लिए घूंट भरकर) कोई भी नहीं बता सकता कि यह भयंकर दुर्घटना हो कैसे गई ?

रैलिंग : लड़की की फ्राक सीने पर लपट से जल गई है। उसने पिस्तौल की नली सीने पर रखकर गोली चलाई है।

ग्रेगर्स : लड़की की कुर्बानी व्यर्थ नहीं गई। तुमने देख लिया—इस शौक़ ने हजलमार की मनुष्यता और सद्भावना को जगा दिया है।

रैलिंग : श्मशान के वैराग्य से तो कुछ समय के लिए सभी लोग साधु बन जाते हैं। तुम क्या आशा करते हो, उसकी मनुष्यता और सद्-भावना कब तक टिकेगी ?

ग्रेगर्स : मुझे विश्वास है, यह प्रभाव जीवन-भर रहेगा और बढ़ता जायगा।

रैलिंग : तुम देख लेना, छः महीने में ही इस घटना का प्रभाव समाप्त हो जायगा और फिर लड़की की स्मृति, मन की भड़ास निकालने के लिए लच्छेदार बातें बनाने का अच्छा बहाना बन जायगा।

ग्रेगर्स : डॉक्टर, तुम हजलमार के लिए कैसी बातें कह रहे हो ?

रैलिग : देख लेना, लड़की की समाधि पर घास भी अच्छी तरह नहीं उग पायगी और तुम स्वयं देख लोगे—कैसे-कैसे उद्गार इस आदमी के मुँह से झड़ने लगेंगे—पिता की स्नेहमयी गोद से अकाल में छीन ली गई अभागी संतान ! वह आत्मश्लाघा और आत्म-करुणा के प्रवाह में डुबकियाँ लेने लगेगा। सब-कुछ तुम्हारी आँखों के सामने आ जायगा।

ग्रेगर्स : यदि तुम्हारी बात ठीक है, और मैं भ्रम में हूँ तो फिर यह जीवन ही निरर्थक है।

रैलिग : नहीं, जीवन तो निरर्थक नहीं है, परन्तु नरक के दूत, भोले-गरीब लोगों को बेसिर-पैर के 'आदर्शों और कर्त्तव्यों' की बातों में बहका-कर उनका जीवन बरबाद कर देते हैं।

ग्रेगर्स : (शून्य में दृष्टि गड़ाये) यदि ऐसी ही बात है तो मेरे भाग्य में जो कुछ है, मुझे उसी से संतोष है।

रैलिंग : माफ़ करना—तुम्हारे भाग्य में क्या है ?

ग्रेगर्स : (जीने के दरवाजे की ओर घूमते हुए) मुझे समाज के लिए अशुभ कह लोगे ?

रैलिग : मैं तो ऐसा ही समझता हूँ।

□□